Third Edition

According to new N.C.I.S.M. syllabus for BAMS 1st Professional

A Textbook of Sanskrit & Ayurveda Itihaas

FOR ORDER

Whatsapp scan

Click Here For Order

CHAUKHAMBA PUBLISHING HOUSE

21-A, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002

Tel : 011-23286537, Mob : 9811104365

e-mail : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com

website : www.chaukhamba.co.in, www.chaukhambabooks.co.in

for any suggestions & feedback
Please do write us on our email :
<chaukhambapublishinghouse@gmail.com>

ISBN : 978-93-94829-32-9

MRP ₹ 470/-

आयुर्वेद-संस्कृत सुधा

Sanskrit for BAMS Students

लेखक : महेश गुरुदत्त

More than 132 Years of Service

- NCISM के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की सिद्धि करने वाली एकमात्र पुस्तक
- संस्कृत व्याकरण के विषयों का आयुर्वेदिक उदाहरणों सहित प्रयोग
- आवश्यकतानुसार चित्रात्मक व्याकरण व्याख्यान का प्रयोग
- अष्टाङ्गहृदयम् के अध्यायों का पदच्छेद अन्वय एवं शब्दार्थ और व्याकरणांश सहित विश्लेषण
- आयुर्वेद के विद्यार्थी कैसे संस्कृत भाषा को व्यवहारिक रूप से समझ सके, उसका अनुभव के साथ सरलतापूर्वक प्रस्तुतिकरण
- पञ्चतन्त्र की कथाओं का अन्वय, शब्दार्थ, अनुवाद एवं सरल संस्कृत सार
- पाठ्यक्रमानुसार अङ्कों का विभाजन और उसी के अनुरूप बहुउत्तरीय प्रश्न (MCQ), लघुउत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों सहित प्रथम पुस्तक
- पाठ्यक्रमानुसार महत्त्वपूर्ण आयुर्वेद के सुभाषित श्लोकों का अर्थ एवं व्याकरण सहित संकलन
- प्रत्येक अध्याय के अन्त में अध्याय सारांश एवं छात्रोपयोगी प्रश्न तथा NCISM के पाठ्यक्रमानुसार पुस्तक के अन्त में प्रश्नपत्रों के प्रारूप सहित
- पाठ्यक्रमानुसार आयुर्वेद के इतिहास का आवश्यकतानुसार समावेश

For Bulk order, Please Contact us on + 91 9811104365 and Click here..

लेखक परिचय

डॉ. महेश गुरुदत्त का जन्म गाँव-माजरा, जिला-झज्जर (हरियाणा) में राजगुरु परिवार में हुआ। आपके पूर्वज पीढ़ियों से ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ थे, अतः प्रारम्भ में विज्ञान का छात्र होने पर भी आप ने पारिवारिक संस्कारों के कारण संस्कृत एवं आयुर्वेद के क्षेत्र को सेवा के लिए चुना। आपने बी.फार्मा और एम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् संस्कृत तथा योग में स्नातकोत्तर उपाधियाँ अर्जित कीं। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन केन्द्र से एम.फिल्. एवं पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने के साथ आपने संस्कृत एवं योग विषयों में नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने आयुर्वेद की प्रारम्भिक शिक्षा बिकानेर, राजस्थान में मोहता आयुर्वेदिक रसायनशाला के प्रधान चिकित्सक वैद्य रमेशचन्द्र शर्मा जी भिषगाचार्य, आयुर्वेदाचार्य से ग्रहण की। आयुर्वेद के सिद्धान्तों के आधार को वैदिक सूत्रों में खोजना, आपने जे.एन.यू. के संस्कृत संकाय प्रमुख और वेद मर्मज्ञ प्रो. सुधीर कुमार आर्य जी से कृपा स्वरूप प्राप्त किया और आयुर्वेदिक विज्ञान के ज्ञान को प्रो. गोपाल मीणा जी से आशीर्वाद रूपेण ग्रहण किया। आप पन्द्रह से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोधपत्रों का वाचन कर चुके हैं एवं आपके सात शोधपत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। डॉ. महेश गुरुदत्त वर्तमान में गौड़ ब्राह्मण आयुर्वेदिक महाविद्यालय, रोहतक के मौलिक सिद्धान्त विभाग में संस्कृत सहायक-आचार्य के पद पर नियुक्त हैं।

पुस्तक परिचय

आयुर्वेद-संस्कृत सुधा एन.सी.आई.एस.एम., द्वारा निर्देशित बी.ए.एम.एस. के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार छात्रों के आवश्यकताओं को संज्ञान में रखकर निर्मित है। अष्टाङ्गहृदय के सूत्र स्थान के सात अध्यायों को शब्दार्थ सहित दिया गया है। संस्कृत व्याकरण के विभिन्न विषयों का रस पुस्तक में न केवल अनेक सारणियों, अपितु चित्रात्मक शैली के माध्यम से सरल किया गया है। आयुर्वेद के मुख्य ग्रन्थों के साथ-साथ स्वयं के अध्ययन के अनुभवों के आधार पर संक्षिप्त रूप से विषयों को प्रस्तुत करने का यह प्रयास है, निश्चिय ही यह प्रयास छात्रों को कम समय में अधिकाधिक लाभ प्रदान करेगा।

B.A.M.S. के संस्कृत विषय से सम्बन्धित वीडियो व्याख्यान देखने हेतु QR Code स्कैन करें–

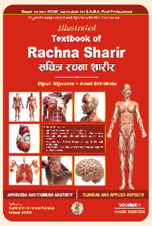

As per new curriculum prescribed by NCISM for First Professional of B.A.M.S.
Illustrated Textbook of **Rachna Sharir** सचित्र रचना शारीर
Dipali Nijwante • Amol Shirbhate

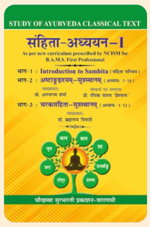

संहिता-अध्ययन-I
As per new curriculum prescribed by NCISM for First Professional of B.A.M.S.
भाग-1
Introduction to Samhita (संहिता परिचय)
भाग-2
अष्टाङ्गहृदयम्-सूत्रस्थानम् (अध्याय 1-15)
सम्पादक: प्रो. दीपक यादव 'प्रेमचन्द' व्याख्याकार: प्रो. अनन्तराम शर्मा
भाग-3
चरकसंहिता-सूत्रस्थानम् (अध्याय 1-12)
व्याख्याकार: डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

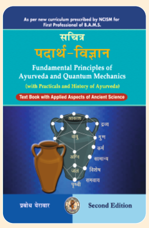

As per new curriculum prescribed by NCISM for First Professional of B.A.M.S.
सचित्र **पदार्थ-विज्ञान**
Fundamental Principles of Ayurveda and Quantum Mechanics
(with Practicals and History of Ayurveda)
प्रबोध येरावार

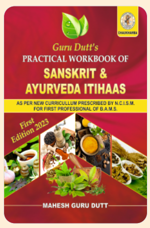

As per new curriculum prescribed by NCISM for First Professional of B.A.M.S.
Guru Dutt's
PRACTICAL WORKBOOK OF SANSKRIT & AYURVEDA ITIHAAS
MAHESH GURU DUTT

Click Here..To Visit our website to Receive Updates On New Product Anouncments, Special Promotions, Sales and More..Pls Join us

Click Here to Order

Published by :
CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN

Distributed by :
CHAUKHAMBA PUBLISHING HOUSE

Head Office : Varanasi ••• Branch Office : Delhi

Address:
21-A, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002
Tel : 011-23286537, Mob : 9811104365
e-mail : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com
website : www.chaukhamba.co.in, www.chaukhambabooks.co.in

Course Curriculum for Professional Ayurvedacharya-BAMS (Prescribed by NCISM) Sanskrit Evam Ayurveda Itihas (Subject-Ay VG-SN:AI)

Paper - I संस्कृत

1. **संस्कृत वर्ण परिचय-** माहेश्वरसूत्राणि, उच्चारणस्थान, बाह्यप्रयत्न, आभ्यन्तर प्रयत्न।
2. **संज्ञा**

   2.1 संयोग:, संहिता, ह्रस्वदीर्घप्लुत:, अनुनासिक:, पदम्, धातु:, उपसर्ग, गुण:, वृद्धि:।

   2.2 इत्, लोप:, प्रत्याहार:, उदात्त:, अनुदात्त: स्वरित:, सवर्ण:, निपात:, प्रगृह्यम्।
3. **उपसर्गा:-** प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अपि, अधि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।
4. **अव्यय**

   4.1 च, अपि, खलु, हि, किल, ननु, वा, एव।

   4.2 पुन:, विना, उच्चै:, ऋते, एवम्, सह, सार्धम्, युगपत्, तथा, यावत्, तावत्, इति, यदा, तदा, यदि, तर्हि, साकम्, न, कुत्र, कति, कुत:, किमर्थम्, कियत्, इह, तत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, कुत्र, एकत्र, अत्र, सदा, अन्यथा, एकदा।
5. **कारक प्रकरण**

   कर्तृकारकम्, कर्मकारकम्, करणकारकम्, सम्प्रदानकारकम्, अपादानकारकम्, सम्बन्ध, उपपदविभक्ति।
6. **सन्धि**

   6.1 अच् सन्धि/स्वरसन्धि-यण् सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धिसन्धि, अयवायाव सन्धि, लोप सन्धि, पररूप सन्धि, पूर्वरूपसन्धि, प्रकृतिभाव।

   6.2 हलसन्धि/व्यञ्जन सन्धि-श्चुत्व सन्धि, ष्टुत्वसन्धि, जश्त्व सन्धि, अनुनासिकसन्धि, परसवर्ण, चर्त्व सन्धि, पूर्वसवर्ण सन्धि, अनुनासिक सन्धि, परसवर्ण सन्धि, चर्त्व सन्धि, पूर्वसवर्ण सन्धि।

   6.3 विसर्ग सन्धि-रुत्वसन्धि, उत्वसन्धि।
7. **समास प्रकरण**–अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, कर्मधारय समास, द्विगु समास, बहुव्रीहि समास, द्वन्द्व समास।
8. **शब्दरूप**–वात, वैद्य, रुग्ण, राम, अग्नि, मुनि, गुरु, भानु, नृ, धातृ, पितृ, गो, रोगिन्, ज्ञानिन्, चन्द्रमस्, श्लेष्मन्, मरुत्, भिषज्, सुहृद्, कीदृश्, एदादृश्, बला, रज्जु, वर्षाभू, सम्प्राप्ति, मातृ, धमनी, परिषद्, स्रज्, जलौकस्, वाच्, योषित्, सरित्, प्रावृष्, पित्त, मधु, अक्षि, वर्त्मन्, स्रोतस्, मनस्, सर्पिष, आयुष्, शकृत्, जगत्, अस्मद्, युष्मद्, तद् (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग), तद्, एतद्, यद् (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग), किम्, इदम् (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग)।
9. **धातु**–भू, अस्, दृश्, गम्, पच्, अद्, हन्, ब्रू, दा, दिव्, नश्, चि, दा, दिव्, नश्, शक्, तुद्, क्षिप्, रुध्, भिद्, तन्, कृ, ज्ञा, जन्,
10. **प्रत्यय**–क्त, क्तवत्, तव्यत्, अनीयर्, शतृ, शानच्, ल्युट्, क्त्वा, ल्यप्, णिनि, तुमुन्। वाच्य-भाव, करण, कर्म।

Paper - II Part - A संस्कृत

1. निरुक्ति तथा पर्याय पदानि–

A. आयु:, शरीर, मन, अग्नि, जलम्, वात:, पित्तम्, कफ:।

B. रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, इन्द्रियम्, श्रोत्र:, चक्षु, रसना, घ्राण।

C. धी, धृति, स्मृति, बुद्धी, मति, प्रज्ञा, मूत्रपुरीष:, स्वेद, आत्मा, रोग:, निदानम्, रोगि, भेषज, चिकित्सा, आदि।

2. परिभाषापदानि–

A. आयुर्वेद:, पञ्चमहाभूतानि, त्रिगुणम्, दोषा, मला:, दूष्यम्, संसर्ग:, सन्निपात:।

B. द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, गुरु, लघु, प्रकृति:, विकृति:, चय:, प्रकोप:, प्रसर:, स्थानसंश्रय:, दोषगति: भेद:, रस:, वीर्यम्, विपाक:, कार्यकारणभाव:।

C. स्रोतस्, कोष्ठ:, आमम्, विरुद्धाह्रम्, विरुद्धाहार:, विदाहि, विष्टम्भि, सात्म्यम्, ओकसात्म्यम्, देशसात्म्यम्, अत्यशनम्, अध्यशनम्, स्थानी, योगवाही, पथ्यम्, अपथ्यम्, कृतान्नवर्ग:, अवस्थापाक:, वेग:, शोधन, शमन, लंघन, बृंहण, अनुपान।

3. अष्टाङ्गहृदयं सूत्रस्थान

1. आयुष्कामीयम्, 2. दिनचर्या, 4. रोगानुत्पादनीयम्, 11. दोषादिविज्ञानीयम्, 12. दोषभेदीयम्, 13. दोषोपक्रमणीयम्, 14. द्विविधोपक्रमणीयम्।

वैद्यकीय सुभाषितम्

4. पञ्चतन्त्रम् – अपरीक्षितकारक

क्षपणक कथा, ब्राह्मणी नकुल, लोभाविष्ट – चक्रधर – कथा, सिंहकारक – मूर्खब्राह्मण कथा, मूर्खपण्डित कथा।

Paper - II Part - B आयुर्वेद इतिहास

- **इतिहास (व्युत्पत्ति, निरुक्ति), आयुर्वेद का प्रादुर्भाव**, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टाङ्ग हृदयम्, अष्टाङ्ग संग्रह, भेल संहिता, हारीत संहिता, काश्यप संहिता
- **लघुत्रयी**–माधव निदान, शार्ङ्गधर संहिता, भावप्रकाश संहिता।
- **विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का प्रादुर्भाव**–यूनानी चिकित्सा पद्धति, चीनी चिकित्सा पद्धति, सिद्ध चिकित्सा प्रणाली, होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति, वृक्षायुर्वेद, वृक्षायुर्वेद (सुरपाल कृत), अश्वचिकित्सा, गजायुर्वेद, राजा अशोक, अंग्रेजों के समय में आयुर्वेद, 1947 से पूर्व आयुर्वेदिक ग्रन्थ-प्रकाशन
- **आधुनिक वैद्यों का आयुर्वेद में योगदान**–गणनाथ सेन, यामिनीभूषण राय, शंकरदाजी शास्त्री पदे, स्वामी लक्ष्मीराम, यादवजी त्रिकमजी, डॉ० प्राणजीवन माणिकचन्द्र मेहता, डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर, दामोदर शर्मा गौड, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, के०आर० श्रीकान्तमूर्ति, कविराज द्वारकानाथ सेन, वैद्यरत्न पी०एस० वारीयर, वैद्य भास्कर विश्वनाथ गोखले, वैद्य वी०जे० ठक्कर।
- **आयुर्वेद का सार्वभौमत्व (Globalization of Ayurveda)**–विभिन्न देशों में आयुर्वेद का विस्तार (Expansion of Ayurveda in various contries) मिस्त्र, श्रीलंका, कम्बोडिया।
- **विभिन्न समितियाँ**–भोरे समिति, चोपड़ा समिति, पंडित समिति, दवे समिति, उड्डुप समिति, व्यास समिति, सम्पूर्णानन्द समिति।
- **विविध संगठनों का परिचय और कार्य**–आयुष /AYUSH, भारतीय औषधि परिषद् (Central Council of Indian Medicine), NCISM (National Commission for Indian System of Medicine), All India Institute of Ayurveda (AIIA), आयुर्वेद विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर (National Institute of Ayurveda, Jaipur), राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली (RAV), आयुष मंत्रालय।

पुस्तक में पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नों के प्रकार एवं अङ्कों का विभाजन

Paper - I संस्कृत

List of Topics	Marks	Types	Page
1. संस्कृत वर्ण परिचय- माहेश्वरसूत्राणि, उच्चारणस्थान, बाह्यप्रयत्न, आभ्यन्तर प्रयत्न।	5	5 MCQ each One Mark	3-9
2. संज्ञा 2.1 संयोगः, संहिता, ह्रस्वदीर्घप्लुतः, अनुनासिकः, पदम्, धातुः, उपसर्ग, गुणः, वृद्धिः। 2.2 इत्, लोपः, प्रत्याहारः, उदात्तः, अनुदात्तः स्वरितः, सवर्णः, निपातः, प्रगृह्यम्।	5	5 MCQ each One Mark	10-14
3. उपसर्गाः- प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अपि, अधि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।	5	One Question of 5 Marks	15-21
4. अव्यय 4.1 च, अपि, खलु, हि, किल, ननु, वा, एव। 4.2 पुनः, विना, उच्चैः, ऋते, एवम्, सह, सार्धम्, युगपत्, तथा, यावत्, तावत्, इति, यदा, तदा, यदि, तर्हि, साकम्, न, कुत्र, कति, कुतः, किमर्थम्, कियत्, इह, तत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, कुत्र, एकत्र, अत्र, सदा, अन्यथा, एकथा Identify अव्ययानि। Explain the meaning with reference Constract the Sentences Using अव्ययानि।	5	One Question of 5 Marks	22-26
5. कारक प्रकरण कर्तृकारकम्, कर्मकारकम्, करणकारकम्, सम्प्रदानकारकम्, अपादानकारकम्, सम्बन्ध, उपपदविभक्ति।	15	5 MCQ, Two Questions of 5 Makrs Each	27-45
Discriminate the विभक्ति and their meaning Identify the Karakas from Ayurveda texts like करणन् कारणम्। Translate the Sentances			
6. सन्धि 6.1 अच् सन्धि/स्वरसन्धि-यण् सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धिसन्धि, अयवायाव सन्धि, लोप सन्धि, पररूप सन्धि, पूर्वरूपसन्धि, प्रकृतिभाव। 6.2 हलसन्धि/व्यञ्जन सन्धि-श्चुत्व सन्धि, ष्टुत्वसन्धि, जश्त्व सन्धि, अनुनासिकसन्धि, परसवर्ण, चर्त्व सन्धि, पूर्वसवर्ण सन्धि, अनुनासिक सन्धि, परसवर्ण सन्धि, चर्त्व सन्धि, पूर्वसवर्ण सन्धि। 6.3 विसर्ग सन्धि-रुत्वसन्धि, उत्वसन्धि।	15	6.1-5 Marks 6.2-5 Marks 6.3-5 Marks	46-69
7. समास प्रकरण 7.1 अव्ययीभाव समास 7.2 तत्पुरुष समास, नञ्, कर्मधारय समास, द्विगु समास 7.3 बहुव्रीहि समास, द्वन्द्व समास।	15	7.1-5 Marks 7.2-5 Marks 7.3-5 Marks	70-84

List of Topics	Marks	Types	Page
8. शब्दरूप **पुल्लिङ्ग**–वात, वैद्य, रुग्ण, राम, अग्नि, मुनि, गुरु, भानु, नृ, धातृ, पितृ, गो, रोगिन्, ज्ञानिन्, चन्द्रमस्, श्लेष्मन्, मरुत्, भिषज्, सुहृद्, कीदृश्, एदादृश्। **स्त्रीलिङ्ग**–बला, रज्जु, वर्षाभू, सम्प्राप्ति, मातृ, धमनी, परिषद्, स्त्रज्, जलौकस्, वाच्, योषित्, सरित्, प्रावृष्। **नपुंसकलिङ्ग**–पित्त, मधु, अक्षि, वर्त्मन्, स्त्रोतस्, मनस्, सर्पिष, आयुष्, शकृत्, जगत्। **सर्वनाम**–अस्मद्, युष्मद्, तद् (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग), तद्, एतद्, यद् (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग), किम्, इदम् (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग)।	10	Two Questions of 5-5 Marks	85–96
9. धातु–भू, अस्, दृश्, गम्, पच्, अद्, हन्, ब्रू, दा, दिव्, नश्, चि, दा, दिव्, नश्, शक्, तुद्, क्षिप्, रुध्, भिद्, तन्, कृ, ज्ञा, जन्।	10	Two Questions of 5-5 Marks	97–109
10. प्रत्यय–क्त, क्तवत्, तव्यत्, अनीयर्, शतृ, शानच्, ल्युट्, क्त्वा, ल्यप्, णिनि, तुमुन्। वाच्य-भाव, करण, कर्म।	10	Two Questions of 5-5 Marks	110–120
11. विशेषण विशेष्य	5	Three MCQ of 1 Mark and 1 Question of 2 Mark	121–122

Paper - II Part - A संस्कृत

List of Topics	Marks	Types	Page
1. निरुक्ति तथा पर्याय पदानि– A. आयु:, शरीर, मन, अग्नि, जलम्, वात:, पित्तम, कफ: B. रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, इन्द्रियम्, श्रोत्र:, चक्षु, रसना, घ्राण। C. धी, धृति, स्मृति, बुद्धी, मति, प्रज्ञा मूत्रपुरीष:, स्वेद, आत्मा, रोग:, निदानम्, रोगि, भेषज, चिकित्सा, आदि	15	3 Questions of 5-5 Marks each	129–133
2. परिभाषापदानि– A. आयुर्वेद:, पञ्चमहाभूतानि, त्रिगुणम्, दोषा, मला:, दूष्यम्, संसर्ग:, सन्निपात:। B. द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, गुरु, लघु, प्रकृति:, विकृति:, चय:, प्रकोप:, प्रसर:, स्थानसंश्रय:, दोषगति: भेद:, रस:, वीर्यम्, विपाक:, कार्यकारणभाव: C. स्रोतस्, कोष्ठ:, आमम्, विरुद्धाहम्, विरुद्धाहार:, विदाहि, विष्टम्भि, सात्म्यम्, ओकसात्म्यम्, देशसात्म्यम्, अत्यशनम्, अध्यशनम्, स्थानी, योगवाही, पथ्यम्, अपथ्यम्, कृतान्नवर्ग:, अवस्थापाक:, वेग:, शोधन, शमन, लंघन, बृंहण, अनुपान।	20	2 Questions of 5-5 Marks each and 1 Question of 10 Mark	134–140

List of Topics	Marks	Types	Page
3 **अष्टाङ्गहृदयम् सूत्रस्थान्** (अन्वय लेखनम्) 1. आयुष्कामीयम्, 2. दिनचर्या, 4. रोगानुत्पादनीयम्, 11. दोषादिविज्ञानीयम्, 12. दोषभेदीयम्, 13. दोषोपक्रमणीयम्, 14. द्विविधोपक्रमणीयम्।	20	4 Questions of 5-5 Marks each	141–237
4 **महत्त्वपूर्ण आयुर्वेद सुभाषित**	10	2 Questions of 5-5 Marks each	238–247
5. **पञ्चतन्त्रम्**–अपरीक्षितकारक क्षपणक कथा, ब्राह्मणी नकुल, लोभाविष्ट – चक्रधर – कथा, सिंहकारक – मूर्खब्राह्मण कथा, मूर्खपण्डित कथा।	15	1 Question of 5 Mark each and 1 Question of 10 Mark	248–277

Paper - II Part - B आयुर्वेद इतिहास

List of Topics	Types	Page
❖ **इतिहास (व्युत्पत्ति, निरुक्ति), आयुर्वेद का प्रादुर्भाव,** चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टाङ्ग हृदयम्, अष्टाङ्ग संग्रह, भेल संहिता, हारीत संहिता, काश्यप संहिता।	5 MCQ Questions Each Contain 1Mark	281–289
❖ **लघुत्रयी**–माधव निदान, शार्ङ्गधर संहिता, भावप्रकाश संहिता। ❖ **विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का प्रादुर्भाव**–यूनानी चिकित्सा पद्धति, चीनी चिकित्सा पद्धति, सिद्ध चिकित्सा अश्वचिकित्सा, गजायुर्वेद राजा अशोक, अंग्रेजों के समय में आयुर्वेद, 1947 से पूर्व आयुर्वेदिक ग्रन्थ–प्रकाशन।	5 MCQ Questions Each Contain 1Mark	289–293
❖ **आधुनिक वैद्यों का आयुर्वेद में योगदान**–गणनाथ सेन, यामिनीभूषण राय, शंकरदाजी शास्त्री पदे, स्वामी लक्ष्मीराम, यादवजी त्रिकमजी, डॉ० प्राणजीवन माणिकचन्द्र मेहता, डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर, दामोदर शर्मा गौड, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, के० आर० श्रीकान्तमूर्ति, कविराज द्वारकानाथ सेन, वैद्यरत्न पी०एस० वारीयर, वैद्य भास्कर विश्वनाथ गोखले, वैद्य वी०जे० ठक्कर।	5 MCQ Questions Each Contain 1 Mark	293–299
❖ **आयुर्वेद का सार्वभौमत्व (Globalization of Ayurveda)**– विभिन्न देशों में आयुर्वेद का विस्तार (Expansion of Ayurveda in various countries) मिस्त्र, श्रीलंका, कम्बोडिया। ❖ **विभिन्न समितियाँ**–भोरे समिति, चोपड़ा समिति, पंडित समिति, दवे समिति, उड्डुप समिति, व्यास समिति, सम्पूर्णानन्द समिति। ❖ **विविध संगठनों का परिचय और कार्य**–आयुष /AYUSH, भारतीय औषधि परिषद् (Central Council of Indian Medicine), NCISM (National Commission for Indian System of Medicine), All India Institute of Ayurveda (AIIA), आयुर्वेद विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर (National Institute of Ayurveda, Jaipur), राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली (RAV), आयुष मंत्रालय।	5 MCQ Questions Each Contain 1 Mark	299–309

विषय-सूची

प्राक्कथन – वैद्य रामतीर्थ शर्मा iii

भूमिका iv

Course Curriculum for Professional Ayurvedacharya-BAMS (Prescribed by NCISM) Sanskrit Evam Ayurveda Itihas (Subject-Ay VG-SN:AI) v

पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नों के प्रकार एवं अङ्कों का विभाजन vii

Paper - I संस्कृत

1. संस्कृतवर्ण परिचय 3
2. संज्ञा प्रकरण 10
3. उपसर्ग प्रकरण 15
4. अव्यय 22
5. कारक प्रकरण 27
6. सन्धि 46
7. समास प्रकरण 70
8. शब्दरूप 85
9. धातु 97
10. प्रत्यय 110
11. विशेषण-विशेष्य 121
12. बहुविकल्पीय प्रश्न 123

Paper - II Part - A संस्कृत

1. निरुक्ति तथा पर्याय 129
2. परिभाषापदानि 134
3. अष्टाङ्गहृदयम् 141
   - अध्याय 1 : मङ्गलाचरण 141
   - अध्याय 2 : दिनचर्या 156
   - अध्याय 4 : रोगानुत्पादनीय 169
   - अध्याय 11 : दोषादिविज्ञानीय 180
   - अध्याय 12 : दोषभेदीयम् 194
   - अध्याय 13 : दोषोपक्रमणीय 215
   - अध्याय 14 : द्विविधोपक्रमणीय 227
4. महत्त्वपूर्ण आयुर्वेद सुभाषित 238
5. पञ्चतन्त्रम् 248

Paper - II Part - B आयुर्वेद इतिहास

1. आयुर्वेद का इतिहास 281

विगत वर्षों में प्रकाशित प्रश्न-पत्र 314

Paper - I संस्कृत

1. संस्कृतवर्ण परिचय	3
2. संज्ञा प्रकरण	10
3. उपसर्ग प्रकरण	15
4. अव्यय	22
5. कारक प्रकरण	27
6. सन्धि	46
7. समास प्रकरण	70
8. शब्दरूप	85
9. धातु	97
10. प्रत्यय	110
11. विशेषण-विशेष्य	121
12. बहुविकल्पीय प्रश्न	123

अध्याय 1

संस्कृतवर्ण परिचय

वर्ण अथवा अक्षर

हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें वर्ण अथवा अक्षर कहते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं:—

स्वर

स्वयं राजन्ते इति स्वराः। स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जो बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता के बोली जा सकती हैं। यथा—अ, इ, उ आप जब इन्हें बोलकर देखते हैं तो आप पाते हैं कि बोलते समय अन्य कोई ध्वनि नहीं सुनाई देती। स्वरों की संख्या **नौ** हैं। इन स्वरों को "अच्" भी कहा जाता है।

व्यञ्जन

अन्वग् भवति व्यञ्जनम्। जो स्वतन्त्र रूप से न बोले जा सके, वे सभी वर्ण व्यञ्जन कहलाते हैं। यथा— "क" बोलने पर हम पाते है कि "क" के साथ "अ" का भी उच्चारण संयुक्त रूप से हो रहा है। व्यञ्जनों को **हल्** कहा जाता है। इनकी संख्या 33 है—

क् ख् ग् घ् ङ्	च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्	त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म्	य् र् ल् व्
श् ष् स् ह्	

व्यञ्जन का उच्चारण काल अर्ध मात्रा काल है। जिस व्यञ्जन में स्वर का योग नहीं होता उसमें हलन्त का चिह्न लगाते हैं।

ऊपर लिखे गये ये सभी व्यञ्जन स्वररहित हैं। इनके स्वररहित रूप को समझने की दृष्टि से इनमें हलन्त (हल्) का चिह्न लगाया गया है। जब किसी व्यञ्जन को किसी स्वर के साथ मेल करते हैं, तब हलन्त का चिह्न हटा देते हैं। जैसे:—क् + अ = क।

माहेश्वर सूत्र - पाणिनी

इनका उपयोग करके व्याकरण के नियमों को महर्षि **पाणिनि** ने अत्यन्त लघु रूप प्रदान किया। इनकी उत्पत्ति भगवान **शिव के डमरु** बजाने से हुई है। इसी कारण इन सूत्रों को 'माहेश्वर सूत्र' कहा जाता है।

माहेश्वर सूत्रों की कुल संख्या **14** है जो निम्नलिखित हैं:—

1.	अइउण्।	8.	झभञ्।
2.	ऋलृक्।	9.	घढधष्।
3.	एओङ्।	10.	जबगडदश्।
4.	ऐऔच्।	11.	खफछठथचटतव्।
5.	हयवरट्।	12.	कपय्।
6.	लण्।	13.	शषसर्।
7.	ञमङणनम्।	14.	हल्

माहेश्वर सूत्र के अन्य नाम-पाणिनि सूत्र, प्रत्याहार सूत्र, शिव सूत्र, अक्षर समाम्नाय

प्रत्याहार का अर्थः- अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद के 71वें सूत्र 'आदिरन्त्येन सहेता' सूत्र द्वारा प्रत्याहार बनाने की विधि का पाणिनि ने निर्देश किया है।

14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के समस्त वर्णों को समावेश किया गया है। प्रथम 4 सूत्रों (अइउण् - ऐऔच्) में स्वर वर्णों तथा शेष 10 सूत्र व्यञ्जन वर्णों की गणना की गयी है। संक्षेप में — स्वर वर्णों को **अच्** एवं व्यञ्जन वर्णों को **हल्** कहा जाता है।

- अकार वर्ण से 8 प्रत्याहार बनेंगे— अण्, अक्, अच्, अट्, अण्, अम्, अश्, अल्।
- इकार से तीन प्रत्याहार बनते हैं— इक्, इच्, इण्।
- उकार से एक— उक्।
- एकार से दो— एङ्, एच्।
- ऐकार से एक—ऐच्।
- हकार से दो—हश्, हल्।
- यकार से पाँच—यण्, यम्, यञ्, यय्, यर्।
- वकार से दो—वश्, वल्।

- रेफ से एक—रल्।
- मकार से एक—मय्।
- ङकार से एक—ङम्।
- झकार से पाँच—झष्, झश्, झश्, झर्, झल्।
- भकार से एक—भष्।
- जकार से एक—जश्।
- बकार से एक—बश्।
- छकार से एक—छव्।
- खकार से दो—खश्, खर्।
- चकार से एक—चर्।
- शकार से दो—शर्, शल्।

एक प्रत्याहार उणादि से "ञमन्ताड्ङः" से ञम् प्रत्याहार, एक वार्तिक से "चयोः द्वितीयः शरि पौष्करसादेः" से बनता है। इस प्रकार कुल 43 प्रत्याहार हो जाते हैं। (42 लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार)

उच्चारणस्थानानि

(1) स्वरों के भेद—उच्चारण काल अथवा मात्रा के आधार पर स्वर तीन प्रकार के माने गये हैं-

1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर

एकमात्रो भवेद्ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं त्वर्थमात्रकम्।।

1. **ह्रस्व स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में केवल एक मात्रा का समय लगे अर्थात् कम से कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे—अ, इ, उ, ऋ, लृ। इनकी संख्या 5 है। इनमें कोई अन्य स्वर या वर्ण मिश्रित नहीं होता, इन्हीं को मूल स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर**— जिन स्वरों के उच्चारण काल में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा दोगुना समय लगे अर्थात् दो मात्राओं को समय लगे, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। जैसे—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ। इनकी संख्या 8 है।
3. **प्लुत स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। इनमें तीन मात्राओं का उच्चारण काल होता है। इनके उच्चारण काल में दो मात्राओं से अधिक समय लगता है। प्लुत का ज्ञान कराने के लिए ३ अंक स्वर के आगे लगाते हैं। इसका प्रयोग अधिकतर वैदिक संस्कृत में होता है। जैसे— अ ३, इ ३, उ ३, ऋ ३, लृ ३, ए ३, ओ ३, ऐ ३, औ ३। ऊष्म शल् -श्, ष् ,स्, ह। ऊष्मीय व्यञ्जनों की कुल संख्या सात है।

- अ, इ, उ, ऋ के प्रकार - 18
- ए, ओ, ऐ के प्रकार -12

(2) व्यञ्जन के भेद—उच्चारण की भिन्नता के आधार पर व्यञ्जनों को निम्न तीन भागों में विभाजित किया गया है—

1. स्पर्श 2. अन्त:स्थ 3. ऊष्म

1. **स्पर्श— 'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'** अर्थात् जिन व्यञ्जनों का उच्चारण करने में जिह्वा मुख के किसी भाग को स्पर्श करती है और वायु कुछ क्षण के लिए रुककर झटके से निकलती है, वे स्पर्श संज्ञक व्यञ्जन कहलाते हैं। क् से म्। पर्यन्त व्यञ्जन स्पर्श संज्ञक हैं। इनकी संख्या 25 है, जो निम्न पाँच वर्गों में विभक्त हैं—

1.	क	वर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
2.	च	वर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
3.	ट	वर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
4.	त	वर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्
5.	प	वर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्

2. **अन्त:स्थ**—जिन व्यञ्जनों का उच्चारण वायु को कुछ रोककर अल्प शक्ति के साथ किया जाता है, वे अन्त:स्थ व्यञ्जन कहलाते हैं। 'यणोऽन्त:स्थाः' अर्थात् यण् (य्, र्, व्, ल्) अन्त:स्थ व्यञ्जन हैं। इनकी संख्या चार है।
3. **ऊष्म**—जिन व्यञ्जनों का उच्चारण वायु को धीरे-धीरे रोककर रगड़ के साथ निकालकर किया जाता है, वे ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं। 'शल ऊष्माणः' अर्थात्-शल्-श्, ष्, स्, ह् ऊष्म संज्ञक व्यञ्जन हैं। इनकी संख्या भी चार है। इनके अतिरिक्त तीन व्यञ्जन और हैं, जिन्हें संयुक्त व्यञ्जन कहा जाता है, क्योंकि ये दो-दो व्यञ्जनों के मूल से बनते हैं। जैसे—
   - क् + ष् = क्ष्
   - त् + र् = त्र
   - ज् + ञ् = ज्ञ।

संयुक्त व्यञ्जन- जब विना स्वर युक्त व्यञ्जन को स्वर युक्त व्यञ्जन के साथ लिखा अथवा उच्चारित किया जाता है, उस समय वह संयुक्त व्यञ्जन कहलाता है।

- क् + ष् + अ = क्ष
- त् + र् + अ = त्र
- ज् + ञ् + अ = ज्ञ
- द् + य् + अ = द्य
- श् + र् + अ = श्र
- व् + य् + अ = व्य
- त् + य् + अ = त्य

अयोगवाह-वर्ण

1. **अनुस्वार**—स्वर के ऊपर जो बिन्दु (ं) लगाया जाती है, उसे अनुस्वार कहते हैं। स्वर के बाद न् अथवा म् के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है। यथा—

अध्याय 2

संज्ञा प्रकरण

संज्ञा क्या है? — सम्+ ज्ञा = सही अर्थ का ज्ञान करने वाला। सामान्यत: नाम को **संज्ञा** कहते हैं। यथा— राम, श्याम, मोहन आदि। '**संज्ञायतेऽनया इति संज्ञा**' इस व्युत्पत्ति के अनुसार, जिस पदार्थ—बोधक विशेष शब्द ज्ञान कराया जाये उसे परिभाषित किया जाये या नहीं वह **संज्ञा** कहलाता है।

- व्यावहारिक सुविधा के लिए प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ को किसी न किसी नाम से अभिहित बोला जाता है। इसी नाम को संज्ञा भी कहते हैं।
- नाम को **संज्ञा** तथा नाम वाले को संज्ञी या संज्ञक कहते हैं।

प्रश्न:- संज्ञा-सूत्र क्या है?

उत्तर:- संज्ञाओं का विधान करने वाले सूत्र **संज्ञा-सूत्र** कहलाते हैं। अधिक विषय को संक्षेप में कहना सूत्र कहलाते हैं। यथा— वृद्धिरादैच्। (1.1.1) अर्थात् यह वृद्धि संज्ञा का सूत्र है जो कहता है कि आत और ऐच् की वृद्धि संज्ञा होती है।

1. पद

- सुबन्त (सु, औ, जस्) और तिङन्त (तिप्, तस्, झि) की पद संज्ञा होती है।
- संज्ञा के साथ सु, औ, जस् आदि नाम पदों में आने वाले 21 प्रत्यय एवं तिप्, तस्, झि आदि क्रियापदों में आने वाले 18 प्रत्यय विभक्ति संज्ञक हैं। सु, औ, जस् (अ:) आदि तथा धातुओं के साथ ति, तस् (त:) अन्ति आदि विभक्तियों के जुड़ने से सुबन्त और तिङन्त शब्दों की पद संज्ञा होती है।
- The word which are meaningful due to tense or Suffixes are called पद।

सूत्र:-सुप्तिङन्तं पदम्।। 1.4.14।।

यथा— राम:, रामौ, रामा: तथा भवति, भवत:, भवन्ति। केवल पठ्, नम्, वद् तथा राम इत्यादि को पद नहीं कह सकते।

विशेष:— संस्कृत भाषा में जिसकी पद संज्ञा नहीं होती उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

2. संयोग

अचों से अव्यवहित हल् की **संयोग संज्ञा** होती है। अर्थात् दो या दो से अधिक हल् वर्णों के बीच में अच् का न होना **संयोग संज्ञा** है।

- Means joining of two letters without existance of vowel in between those two letters-Like "त्व" in कर्तव्य।

सूत्र:—हलोऽनन्तरा: संयोग।। 1.1.7।।

यथा—

- यथा— सिद्ध पद में द् और ध् के बीच में कोई अच् (स्वर) नहीं है, अत: यहाँ पर संयोग संज्ञा है।
- राम: उद्यानं गच्छति। उद्यानम् में 'द्' और 'य्' तथा गच्छति में 'च्' और 'छ्' का संयोग है।
- अयं रामस्य ग्रन्थ: अस्ति। रामस्य में 'स्' और 'य्', ग्रन्थ: में 'ग्' + 'र्' तथा 'न्' और 'थ्' तथा अस्ति में 'स्' और 'त्' का संयोग है।

3. संहिता

- वर्णों के अत्यन्त सामीप्य अर्थात् व्यवधान रहित सामीप्य को संहिता कहते हैं (**पर: सन्निकर्ष: संहिता**)।
- वर्णों की संहिता की स्थिति में ही सन्धिकार्य होते हैं, जैसे— वाक् + ईश: में 'क्' + 'ई' में संहिता (अत्यन्त समीपता) के कारण सन्धि कार्य करने से 'वागीश:' पद बना है।
- Samhita means Sandhi.

4. लोप

- न दिखाई देना अर्थात् पहले रहने वाले का बाद में नहीं दिखाई देना और न सुनाई देना **अदर्शन** है और उसकी **लोप संज्ञा** होती है।

सूत्रः- अदर्शनं लोपः।। 1.1.60।।

5. इत् संज्ञा

- माहेश्वरसूत्रों के अन्त में जो व्यञ्जन हैं, उनका नाम **"इत्"** है। इन इतों को **अनुबन्ध** भी कहा जाता है। जिसका नाम इत् है, उसका लोप हो जाता है।

  सूत्रः—तस्य लोपः।। 1.3.9।।

6. ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत

उकार एक-मात्रिक	ह्रस्व-संज्ञा	अ, इ, उ, ऋ, लृ
ऊकार द्वि-मात्रिक	दीर्घ-संज्ञा	आ, ई, ऊ, ॠ
उ३कार त्रि-मात्रिक	प्लुत-संज्ञा	आ३, इ३, ऊ३, ॠ३

उकार एक-मात्रिक, ऊकार द्वि-मात्रिक और उ३कार त्रि-मात्रिक के उच्चारण काल के समान तथा उसी प्रकार उच्चारण वाले अचों की क्रमशः **ह्रस्व-संज्ञा, दीर्घ-संज्ञा** और **प्लुत-संज्ञा** होती है। यह अच् उदात्त, **अनुदात्त और स्वरित** तीन प्रकार के होते हैं।

सूत्रः— ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः।। 1.2.27।।

7. वृद्धि संज्ञा

सूत्र— वृद्धिरादैच्।। 1.1.1।।

सूत्रार्थ— यह सूत्र वृद्धि संज्ञा करने वाला सूत्र है। यह सूत्र वृद्धि संज्ञक वर्ण के बारे में बताता है।

वृद्धिः आत् ऐच् = वृद्धिरादैच्।

वृद्धि वर्ण आत् और ऐच् है।

अर्थात् **आ, ऐ, और औ वर्ण वृद्धि संज्ञक वर्ण है।**

- **आ, ऐ, औ** These three Vowels are said to be वृद्धि।

प्रमुख बिन्दु

- पाणिनीय अष्टाध्यायी का यह प्रथम सूत्र है।
- यह एक वृद्धि संज्ञा करने वाला संज्ञा सूत्र है।
- जब भी वृद्धि सन्धि होगी वहाँ पर वृद्धि संज्ञक वर्ण (आ, ऐ, औ) ही वर्ण आदेश होंगे।

यथा— एक + एक = एकैक

उपर्युक्त उदाहरण में अ+ए=ऐ, जो वर्ण ऐ आदेश हुआ वह वृद्धि संज्ञक वर्ण है।

8. गुण संज्ञा

सूत्रः- अदेङ् गुणः।। 1.1.2।।

सूत्रार्थः-यह सूत्र गुण संज्ञा करने वाला सूत्र है। यह सूत्र गुण संज्ञक वर्णों को बताता है।

अत् एङ् च गुणसूज्ञः स्यात्।

ह्रस्व अकार और एङ् (अ, ए, ओ) वर्ण गुण संज्ञक वर्ण है।

अ, ए, ओ These three vowels are said to be "Guna".

प्रमुख बिन्दु

- यह सूत्र गुण संज्ञा करने वाला सूत्र है।
- यह गुण संज्ञक वर्णों की जानकारी देता है।
- गुण सन्धि होने पर गुण वर्ण ही आदेश होता है।

जैसे— रमा+ईश = रमेश

उपर्युक्त उदाहरण में आ + ई = ए, जो वर्ण ए आदेश हुआ है वह गुण संज्ञक वर्ण है।

9. प्रत्याहार

आदि और अन्त्य या अन्तिम वर्ण के साथ उच्चारित मध्यम और स्व या अपना बोध होना, प्रत्याहार संज्ञा होती है। अर्थात् अन्त्य या अन्तिम इत् संज्ञक वर्ण के साथ आदि अर्थात् प्रथम वर्ण या अक्षर का उच्चारित होना प्रत्याहार संज्ञा कहलाता है।

सूत्रः- आदिरन्त्येन सहेता।। 1.1.71।।

यथा— यथाऽणिति अर्थात् अण् प्रत्याहार में अ, इ, उ का बोध होना अर्थात् इसमें 'अ' का अपना और इ, उ मध्य वर्ण का भी बोध होता है। अर्थात् अण् प्रत्याहार से अ, इ, उ इन तीनों वर्णों का बोध होता है। ण् **हलन्त्यम्** होने के कारण उसकी **इत् संज्ञा** हुई तथा **अदर्शनं लोप** से अदर्शन होकर **तस्य लोपः** से लोप हुआ। जिस कारण ण् का बोध नहीं होता है, वह केवल **प्रत्याहार** की सिद्धि के लिए प्रयोग किया जाता है।

10. उदात्त

उच्चारण-स्थान अर्थात् कण्ठ-तालु आदि के ऊपरी भाग से उच्चारित अच् (स्वर) की **उदात्त-संज्ञा** होती है।

सूत्रः- उच्चैरुदात्तः।। 1.2.29।।

11. अनुदात्त

उच्चारण-स्थान अर्थात् कण्ठ-तालु आदि के निम्न भाग से उच्चारित अच् (स्वर) की **अनुदात्त-संज्ञा** होती है।

सूत्रः- नीचैरनुदात्तः।। 1.2.30।।

12. स्वरित

अच् (स्वर) की **स्वरित संज्ञा** वहाँ होती है जहाँ पर **उदात्त** और **अनुदात्त** दोनों बराबर की स्थिति में हो।

अध्याय 3

उपसर्ग प्रकरण

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, सु, उत्, अभि, प्रति, उप। यह सभी 22 प्रादि (प्र आदि) हैं, जिस समय ये क्रिया के साथ जुड़ने पर इन्हें **उपसर्ग** कहा जाता है।

यह उपसर्ग धातुओं में मुख्य रूप से तीन प्रकार के परिवर्तन करते हैं।

धात्वार्थ बाधते कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्यः उपसर्गगतिस्त्रिधा।।

1. धातुओं के मूल अर्थ को बाधित करते हैं। यथा— विकार:-निर्विकार, शेष:-निशेष:, आकर्षण-अपकर्षण, अनुगामी-प्रतिगामी, तृष्णा-वितृष्णा।
2. उपसर्ग के जुड़ने से क्रिया में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता। यथा—उवाच-प्रोवाच, दाह:-विदाह:।
3. कई बार उपसर्ग क्रिया में वैशिष्ट्य उत्पन्न कर देते हैं। यथा—नमति-प्रणमति।

एक ही शब्द में विभिन्न उपसर्ग जोड़ने पर मूल शब्द के अर्थ परिवर्तन को आप निम्नलिखित उदाहरण से जान सकते हैं—

जैसे— हार शब्द का अर्थ '**माला**' होता है, परन्तु 'हार' के पहले '**प्र**' उपसर्ग लगाने से '**प्रहार**' शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है '**मारना**'। उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है। जैसा कि कहा भी गया है—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
विहारहारसंहारप्रहारपरिहारवत्।।

इसी प्रकार आहार, विहार, संहार, उपहार आदि शब्द बनते हैं।

- प्र + हार = प्रहार = आक्रमण
- आ + हार = आहार = भोजन
- सम् + हार = संहार = विनाश
- वि + हार = विहार = भ्रमण
- परि + हार = परिहार = निराकरण

उपसर्गों की संख्या

संस्कृत में कुल बाईस (22) उपसर्ग होते हैं।

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ् (आ) , नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्/उद्, अभि, प्रति, परि, उप

उपसर्ग सूत्रः-उपसर्गाः क्रियायोगे:।

1. 'प्र' उपसर्ग – अधिक, आगे, यश

- प्र + भवति (भू धातु) = प्रभवति
- प्र + तिष्ठते (स्था धातु) = प्रतिष्ठते
- प्र + विशति (विश् धातु) = प्रविशति
- प्र + स्थानम् (स्था धातु) = प्रस्थानम्
- प्र + क्षालनम् (क्षाल् धातु) = प्रक्षालनम्
- प्र + नयति (नी धातु) = प्रणयति
- प्र + हरति (हृ धातु) = प्रहरति
- प्र + करोति (कृ धातु) = प्रकरोति
- प्र + काश: = प्रकाश:
- प्र + कृति: = प्रकृति:

2. 'परा' उपसर्ग – उलटा, पीछे

- परा + भवति (भू धातु) = पराभवति
- परा + जयति (जि धातु) = पराजयते
- परा + करोति (कृ धातु) = पराकरोति
- परा + अयते (अय् धातु) = पलायते
- परा + क्रमते (क्रम् धातु) = पराक्रमते
- परा + वर्तते (वृत् धातु) = पराक्रमते
- परा + विद्या = पराविद्या
- परा + काष्ठा = पराकाष्ठा

3. 'अप' उपसर्ग – बुरा, अभाव

- अप + करोति (कृ धातु) = अपकरोति
- अप + जानाति (ज्ञा धातु) = अपजानीते

- अप + ईक्षते (ईक्ष् धातु) = अपेक्षते
- अप + यशः = अपयशः
- अप + मानम् = अपमानम्
- अप + कारः = अपकारः
- अप + शब्दः = अपशब्दः
- अप + कीर्तिः = अपकीर्तिः
- अप + कर्षः = अपकर्षः
- अप + वादः = अपवादः
- अप +आदानम् = अपादानम्

4. 'सम्' उपसर्ग – अच्छी तरह से, भली-भाँति

- सम् + भवति (भू धातु) = सम्भवति
- सम् + आगच्छति (आगम् धातु) = समागच्छति
- सम् + गृह्णाति (गृह् धातु) = संगृह्णाति
- सम् + भाषते (भाष् धातु) = संभाषते
- सम् + कल्पः = संकल्पः
- सम् + तोषः = सन्तोषः
- सम् + चारः = संचारः
- सम् + लग्नः = संलग्नः
- सम् + योगः = संयोगः

5. 'अनु' उपसर्ग – पीछे

- अनु + गच्छति (गम् धातु) = अनुगच्छति
- अनु + चलति (चल् धातु) = अनुचलति
- अनु + मोदते (मुद् धातु) = अनुमोदते
- अनु + कूलः = अनुकूलः
- अनु + चरः = अनुचरः
- अनु + शासनः = अनुशासनः
- अनु + रागः = अनुरागः
- अनु + क्रमः = अनुक्रमः
- अनु + भवः = अनुभवः

6. 'अव' उपसर्ग – नीचे, दूर

- अव + गच्छति (गम् धातु) = अवगच्छति
- अव + जानाति (ज्ञा धातु) = अवजानाति
- अव + तिष्ठति (स्था धातु) = अवतिष्ठति
- अव + गुणः = अवगुणः
- अव + तारः = अवतारः
- अव + काशः = अवकाशः
- अव + शेषः = अवशेषः
- अव + धारणा = अवधारणा
- अव + क्षेपणम् = अवक्षेपणम्
- अव + तरणम् = अवतरणम्

7. 'निस्' उपसर्ग – नीचे, दूर

- निस + सरति (सृ धातु) = निस्सरति
- निस + चिनोति (चि धातु) = निश्चिनोति
- निस् + पन्नः = निष्पन्नः
- निस् + कामः = निष्कामः
- निस् + छलः = निश्छलः
- निस् + चयः = निश्चयः
- निस् + कासितः = निष्कासितः
- निस् + सन्देहः = निस्सन्देहः
- निस् + फलम् = निष्फलम्
- निस् + क्रमणम् = निष्क्रमणम्
- निस् + पापम् = निष्पापम्

8. 'निर्' उपसर्ग – नीचे, दूर

- निर्+ ईक्षते (ईक्ष् धातु) = निरीक्षते
- निर्+ वहति (वह् धातु) = निर्वहति
- निर्+ अस्यति (अस् धातु) = निरस्यति
- निर्+ गच्छति (गम् धातु) = निर्गच्छति
- निर्+ गमनम् (गम् धातु) = निर्गमनम्
- निर्+ मूलम् = निर्मूलम्
- निर्+ आकारः = निराकारः
- निर्+ वाणः = निर्वाणः
- निर्+ नयः = निर्णयः
- निर्+ वृत्तिः = निर्वृत्तिः
- निर्+ उक्तम् = निरुक्तम्
- निर्+ माणम् = निर्माणम्
- निर्+ वचनम् = निर्वचनम्

9. 'दुस्' उपसर्ग – दुष्ट, बुरा

- दुस् + चरति (चर् धातु) = दुश्चरति
- दुस् + करोति (कृ धातु) = दुष्करोति
- दुस् + तरति (तृ धातु) = दुस्तरति
- दुस् + साध्यः = दुस्साध्यः
- दुस् + साहसः = दुस्साहसः
- दुस् + कर्मः = दुष्कर्मः
- दुस् + कृत्यः = दुष्कृत्यः
- दुस् + करः = दुष्करः
- दुस् + शासनः = दुश्शासनः
- दुस् + प्रयोजनम् = दुष्प्रयोजनम्

10. 'दुर्' उपसर्ग – बुरा, कठिन, हीन

- दुर्+ वदति (वद् धातु) = दुर्वदति
- दुर्+ गच्छति (गम् धातु) = दुर्गच्छति

अध्याय 4

अव्यय

संस्कृत में विकारी और अविकारी दो प्रकार के शब्द प्रयुक्त होते हैं। जिन शब्दों में सुप् और तिङ् रूप बनते हैं अर्थात् जो परिवर्तित होते हैं, वो विकारी और परिवर्तित न होने वाले **अविकारी** कहलाते हैं।

अविकारी शब्दों को ही **अव्यय** की संज्ञा दी गई है।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

- ❖ जो पद तीनों लिङ्ग, सभी विभक्तियों, सभी वचनों में एक समान रहे, वो अव्यय कहलाते हैं।
- ❖ अव्ययों के भी दो प्रकार हैं — पहला रूढ़ अथवा अव्युत्पन्न। जैसे— च, वा, विना, पृथक् आदि अव्युत्पन्न हैं।
- ❖ दूसरा यौगिक अथवा व्युत्पन्न। जैसे— पठित्वा, पठितुम् आदि धातु से निर्मित कृदन्त अव्यय हैं। सर्वदा, चतुर्धा आदि नाम (प्रातिपदिक) से व्युत्पन्न तद्धित अव्यय हैं।
- ❖ विभक्ति-बोधक-कुत:, ग्रामत:, कुत्र, अत्र आदि।
- ❖ काल-बोधक-यदा, कदा, सर्वदा आदि।
- ❖ प्रकार-बोधक-यथा, तथा, कथम्, इत्थम्, द्वेधा आदि।
- ❖ विविध-अव्यय-अनेकश:, पञ्चकृत्व आदि।

1. च—और

च एक संस्कृत अव्यय है। उभयान्वयी अव्यय (Conjuction) है। इसका अर्थ इस प्रकार है —

और

आजकल हम स्वल्पविराम (,) का प्रयोग करते हैं। इसके स्थान पर संस्कृत में च इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है।

- ❖ राम, श्याम, गणेश, महेश और देवेश।

इसको संस्कृत में च की मदद से कैसे लिखते हैं?

प्रत्येक शब्द के बाद च को लिखा जाता है।

- ❖ राम: च श्याम: च गणेश: च महेश: च देवश: च।

इसको एक विकल्प है।

केवल आखरी च को रहने दिया जाता है। और बाकी च का लोप किया जा सकता है।

- ❖ राम: च श्याम: च गणेश: च महेश: च देवश: च।
- ❖ राम: श्याम: गणेश: महेश: देवश: च।

"च" अव्यय के उदाहरण—

- ❖ राम, लक्ष्मण **और** सीता वन जाते हैं।
  - राम: **च** लक्ष्मण: **च** सीता **च** वनं गच्छन्ति।
  - राम: लक्ष्मण: सीता **च** वनं गच्छन्ति।
- ❖ युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव पाण्डव हैं।
  - युधिष्ठिर: च भीम: च अर्जुन: च नकुल: च सहदेव: च पाण्डवा: सन्ति।
  - युधिष्ठिर: भीम: अर्जुन: नकुल: सहदेव: च पाण्डवा: सन्ति।
- ❖ राम और श्याम जाते हैं।
  - राम: च श्याम: च गच्छत:।
  - राम: श्याम: च गच्छत:।
- ❖ राम और रावण दुश्मन थे।
  - राम: च रावण: च शत्रु आस्ताम्।
  - राम: रावण: च शत्रु आस्ताम्।

अग्निवेश: भेल: पराशर: **च** आत्रेयपुनर्वसो: शिष्या: भवन्ति।

वायु: पित्तं कफ: **च** इति त्रय: दोषा: भवन्ति।

वैद्य: रोगी भेषजं परिचारक: **च** चिकित्साया: चत्वार: पादा: भवन्ति।

2. अपि इसके दो अर्थ होते हैं —

अपि का प्रथम अर्थ—भी—Also

अपि का दूसरा अर्थ

- ❖ प्रश्ननिर्माण के लिए
- ❖ अपि इस अव्यय के उदाहरण

"भी" इस अर्थ में अपि के उदाहरण

- ❖ सीता अपि रामेण सह वनं गच्छति।
  - सीता भी राम के साथ वन जाती है।
  - Sita also goes to jungle with Ram.
- ❖ कर्णः अपि पाण्डवः आसीत्।
  - कर्ण भी पाण्डव था।
  - Karna also was a Pandava.
- ❖ अहम् अपि विद्यालयं गच्छामि।
  - मैं भी विद्यालय जाता हूँ।
- ❖ वर्षासमये मेघाः अपि गर्जन्ति।
  - बारिश के समय बादल भी गरजते हैं।

प्रश्ननिर्माण के लिए अपि का प्रयोग

यदि अपि इस अव्यय को किसी वाक्य के पहले स्थान पर लिखा या बोला जाए तो वह वाक्य प्रश्न बन जाता है। जैसे कि —

- ❖ अपि कर्णः पाण्डवः अस्ति?
  - क्या कर्ण पाण्डव है?
- ❖ अपि रामः अयोध्यापतिः अस्ति?
  - क्या राम अयोध्यापति है?
- ❖ अपि अवगतम्?
  - समझा क्या?

छात्राः चरकसंहितां पठन्ति, सुश्रुतसंहिताम् अपि पठन्ति।

व्याधयः बालान् बाधन्ते, युवकान् अपि बाधन्ते।

अष्टाङ्गहृदये केवलं रोगनिदानं न, रोगपरिहारः अपि अस्ति।

3. एव–ही

- ❖ शिशुः क्षीरम् एव पिबति।
- ❖ छात्राः ब्रह्ममुहूर्ते एव उत्तिष्ठन्तु।
- ❖ मत्स्याः जले एव जीवन्ति।

आयुर्वेद से उदाहरण

- ❖ दोषवैषम्यम् एव रोगकारणम्।
- ❖ कुपितः वायुः एव विकारान् जनयति।
- ❖ ज्वरः एकः एव सन्तापलक्षणः।
- ❖ ब्रह्मदेवः एव आयुर्वेदस्य प्रथमोपदेष्टा।

4. इति

स्थान, वचन, कथन, सन्देश इत्यादि के उदाहरण के अन्त में "इति" अव्यय का प्रयोग होता है। एक वाक्य के पूरा हो जाने पर दूसरे वाक्य के आरम्भ में यह बताने के लिए कि यह वाक्य उसने कहा है 'के लिए' दोनों वाक्यों के मध्य में इति का प्रयोग होता है। संस्कृत में प्रायः ग्रन्थ अथवा अध्याय की समाप्ति पर "इति" का प्रयोग देखा गया है।

"संस्कृतम् एव राजभाषा भवेत्" **इति** डॉ० भीमराव अम्बेडकरः उक्तवान्।

रामः मम शत्रु अस्ति इति रावण उक्तवान्।

इति प्रथमोऽध्यायः।

मम नाम रमेशः इति।

आयुर्वेद से उदाहरण

- ❖ निम्बपत्राणि कृमिनाशकानि भवन्ति। मम आचार्य वदति।
- ❖ 'निम्बपत्राणि कृमिनाशकानि भवन्ति' **इति** मम आचार्य वदति।
- ❖ पञ्चगव्यं बहुषु रोगेषु हितकरं भवति। वैद्याः वदन्ति।
- ❖ 'पञ्चगव्यं बहुषु रोगेषु हितकरं भवति' **इति** वैद्याः वदन्ति।

5. खलु—वास्तव में

- ❖ खलु, एतस्य एका व्याघ्रा अस्ति।
- ❖ गुणः खलु अनुरागस्य कारणं।

अर्थ— केवल गुण ही प्रेम होने का कारण है।

6. ननु—अवधारण, सम्बोधन, प्रार्थना, याचना

- ❖ ननु कति सर्वाः पदार्थाः?
- ❖ ननु कति सर्वाः गुणाः?

7. हि—केवल

- ❖ सर्वैः हि स्वधर्मः आचरणीयः।

न हि ज्ञानावयवेन कृत्स्ने ज्ञेये ज्ञानमुत्पद्यते। (चरक/विमान स्थान 11.62)

8. उच्चैः—ऊँचे

- ❖ नगरे गृहाणि उच्चैः भविष्यन्ति। (नगर में घर ऊँचे होते हैं।)
- ❖ गीता गृहे उच्चैः हसति। (गीता घर में ऊँचा हँसती है।)
- ❖ उपवने वृक्षाः उच्चैः आसन्। (बाग में पेड़ ऊँचे थे।)

9. नीचैः—नीचे

- ❖ मीरा नीचैः तिष्ठति।
- ❖ त्वं सर्वदा नीचैः एव वदसि। (तुम हमेशा धीमे बोलते हो।)

10. विना—बिना

विना जलम् विना जीवनम् न अस्ति।

अध्याय 5

कारक प्रकरण

कारक का अर्थ — 'कारक' शब्द का अर्थ है क्रिया से सम्बन्ध रखने वाला। कारक शब्द 'कृ' धातु में 'ण्वुल्' प्रत्यय लगकर बना है, जिसका अर्थ है 'करने वाला'। क्रिया को सम्पन्न करने में जो साधन का कार्य करे, **कारक** कहलाता है।

कारक की परिभाषा

'**क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्, क्रियाजनकत्वं वा कारकत्वम्।**' अर्थात् क्रिया मे जिसका अन्वय हो या जो क्रिया का जनक हो, वह **कारक** कहलाता है। यथा — **रामः गृहं गच्छति।** राम घर जाता है। यहाँ राम और घर का 'जाना' क्रिया से सीधा सम्बन्ध है, अतः राम और घर दोनों ही कारक हैं।

इसके विपरीत जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता, वे कारक नहीं होते हैं। यथा — **रमेशः सुरेशस्य गृहं गच्छति।** रमेश सुरेश के घर जाता है। इस वाक्य में रमेश जाना क्रिया को संपन्न करने वाला है और घर जाया जा रहा है, इसलिए रमेश और घर जाना क्रिया से सम्बंधित होने के कारण ये दोनों ही कारक हैं, परन्तु सुरेश का जाना क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं है, उसका सम्बन्ध तो घर से है, अतः क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध न होने के कारण **सुरेशस्य** कारक नहीं होगा।

कारक के भेद या प्रकार

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहः कारकाणि षट्।।

कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण — संस्कृत में ये छः कारक कहे गये हैं।

कारक	विवरण	सूत्र
कर्ता	क्रिया को करने वाला	प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचन-मात्रे प्रथमा
कर्म	क्रिया का कर्म	कर्तुरीप्सिततमं कर्म, कर्मणि द्वितीया।
करण	क्रिया के होने में अत्यंत सहायक	साधकतमं करणम्, कर्तृकरणयो-स्तृतीया।
सम्प्रदान	जिसके लिए क्रिया की जाए	कर्मणा यमभिप्रेति स सम्प्रदानम्, चतुर्थी सम्प्रदाने।
अपादान	जिससे क्रिया दूर हो या निकले	ध्रुवमपायेऽपादानम्, अपादाने पञ्चमी।
अधिकरण	जहाँ क्रिया सम्पन्न हो	आधारोऽधिकरणम् सप्तम्यधि-करणे च।

क्रिया के साथ षष्ठी (सम्बन्ध) का सीधा सम्बन्ध न होने के कारण उसे कारक नहीं माना गया है, वह विभक्ति कहलाता है। कारक के सम्बन्ध को अभिव्यक्त करने के लिए जो प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, **विभक्ति** कहलाते हैं। विभक्तियाँ सात प्रकार की होती हैं–

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिये
पंचमी	अपादान	से, अलग होने के लिए
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर

कर्त्ता (प्रथमा विभक्ति) का सूत्र —

'**प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।**' (2.3.46)

केवल प्रातिपादिक अर्थ, लिङ्ग, परिमाण एवं वचन (संख्या) का जहाँ बोध कराना हो, वहाँ प्रथमा विभक्ति होती है। प्रत्येक पद के अर्थ को प्रातिपदिकार्थ कहते हैं। किसी के नाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या जाति को बोध हो रहा हो वह प्रतिपदिकार्थ है।

प्रातिपदिकार्थ — उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः और ज्ञानम्, ये सभी प्रातिपादिकमात्र के उदाहरण हैं। यथा— **कृष्णः रावणं हतः।** कृष्ण ने रावण को मारा।

लिङ्गमात्र इति — लिङ्गमात्र के उदाहरण अनियत लिङ्ग शब्द हैं, यथा— तटः तटी तटय: — यहाँ जाति और द्रव्य से अधिक लिङ्गमात्र अर्थ की प्रतीति होती है, इसलिए यहाँ प्रथमा विभक्ति हुई। तट शब्द अनियत लिंग है, इसका कोई नियत लिंग नहीं है, यह कभी पुंल्लिंग, कभी स्त्रीलिंग और कभी नपुंसकलिंग होता है।

परिमाणेति — परिमाण मात्र में – **द्रोणो ब्रीहिः।** यहाँ परिमाण अर्थ में द्रोण शब्द में प्रथमा विभक्ति होगी।

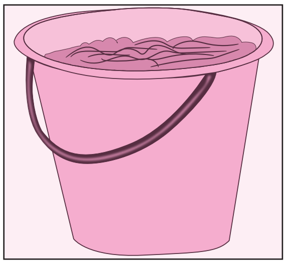

वचनमिति — वचन संख्या को कहते हैं। संख्यावाचक शब्दों से संख्या अर्थ में ही प्रथमा विभक्ति होती है। विभक्ति के द्वारा प्रातिपादिक संख्या का अनुवाद होता है, यथा— **एकम्, द्वौ, बहवः।**

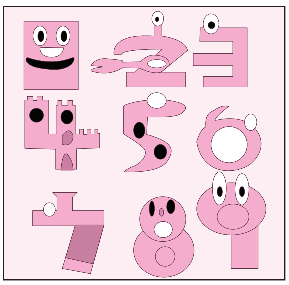

सम्बोधने च (2.3.47) — सम्बोधन का बोध कराने के लिए भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा— **हे राम !**

उदाहरण

सः गृहं गच्छति। वह घर जाता है।

रमा फलं खादति। रमा फल खाती है।

हे राम ! अत्र आगच्छ। हे राम ! यहाँ आओ।

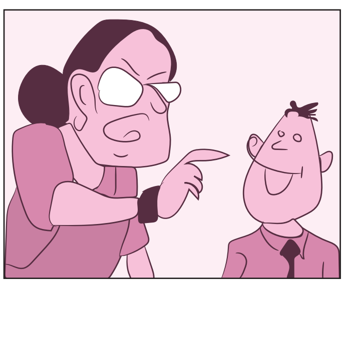

कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति) का सूत्र — '**कर्तुरीप्सिततमं कर्म** (1.4.49) **कर्मणि द्वितीया** (2.3.2)।

नियम 1 – अकथितं च। (1.4.51)

अप्रधान या गौण कर्म को अकथित कर्म कहते हैं। सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण आदि कारकों की जहाँ अविवक्षा हो वहाँ उनकी कर्म संज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यह कर्म कभी अकेला प्रयुक्त न होकर सदैव मुख्य कर्म के साथ ही प्रयुक्त होता है। संस्कृत भाषा में इस तरह की सोलह (16) धातुएँ हैं, उनके प्रयोग में एक तो मुख्य कर्म होता है और दूसरा अविवक्षित गौण कर्म होता है। इस गौण कर्म में भी द्वितीया विभक्ति होती है। ये धातुएँ ही द्विकर्मक धातुएँ कही जाती हैं। जो निम्नलिखित हैं —

दुह्याच्पच्दण्ड्-रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथ्मुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यानीहृकृष्वहाम्।।

दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड देना), रुध् (रोकना, घेरना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना, चयन करना), ब्रू (कहना, बोलना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् (चुराना), नी (ले जाना), हृ (हरण करना), कृष् (खींचना), वह् (ढोकर ले जाना)। इन 16 धातुओं में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

1. **दुह् (दुहना) — श्यामः गां दोग्धि।** श्याम गाय से दूध दुहता है।
2. **याच् (माँगना) — महेशः हरिं कलमं याचते।** महेश हरि से कलम माँगता है।
3. **पच् (पकाना) — रमा तण्डुलान् ओदनं पचति।** रमा चावलों से भात पकाती है।
4. **दण्ड् (दण्ड देना) — राजा सेवकं शतं दण्डयति।** राजा सेवक को सौ रुपये का दण्ड देता है।
5. **रुध् (रोकना, घेरना) — ग्वालः व्रजं गामम् अवरुणद्धि।** ग्वाला व्रज में गाय को रोकता है।
6. **प्रच्छ् (पूछना) — अध्यापकः छात्रान् प्रश्नं पृच्छति।** अध्यापक छात्रों से प्रश्न पूछता है।
7. **चि (चुनना, चयन करना) — मालाकारः वृक्षं पुष्पं चिनोति।** माली वृक्ष से पुष्प चुनता है।
8. **ब्रू (कहना, बोलना) — गुरु शिष्यं धर्मं ब्रूते।** गुरु शिष्य से धर्म कहता है।
9. **शास् (शासन करना, कहना) — गुरु शिष्यं धर्मं शास्ति।** गुरु शिष्य से धर्म कहता है।

नियम 11 – बहिर्योगे पंचमी।

बहि: (बाहर) के योग में पंचमी विभक्ति होती है। यथा—

❖ **ग्रामात् बहि: मन्दिरं वर्तते।** गाँव के बाहर मन्दिर है।

नियम 12 – पञ्चम्यपाङ्परिभि:। (2.3.10)

अप, आङ्, परि इन कर्मप्रवचनीय संज्ञाओं के योग में पंचमी विभक्ति होती है। यथा—

❖ **आमुक्ते: संसार:।** मुक्ति तक संसार है।

नियम 13 – अपेक्षार्थे पञ्चमी।

तुलना में जिसे श्रेष्ठ बताया जाए, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। यथा—

❖ **विद्या धनादपि गरीयसी।** विद्या धन से भी श्रेष्ठ है।

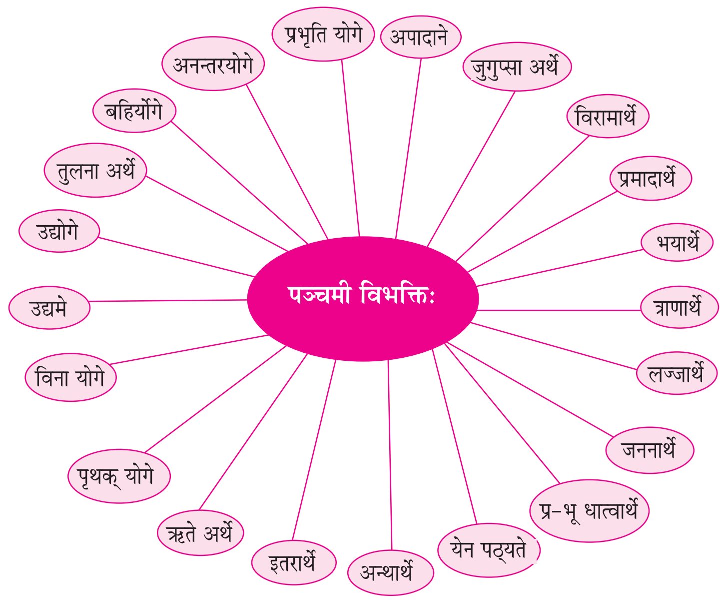

अपादाने	वृक्षात् पत्रं पतति	त्राणार्थे	वीर: बालकं सिंहात् त्रायते
विरामार्थे	सत्यनिष्ठावान् जन: कर्त्तव्यात् न कदापि विरमति	प्रभृतियोगे	शैशवात् प्रभृति न कदापि अनृतमुक्तम्
जुगुप्सा अर्थे	भक्त: पापात् जुगुप्सते	लज्जार्थे	वधु: श्वसुरात् लज्जते
अनन्तरयोगे	सोमवासरात् अनन्तरमागमिष्यामि	जननार्थे	ब्रह्मण: प्रजा: जायन्ते
बहिर्योगे	नगरात् बहि: रमणीयमुद्यानमस्ति	प्र-भू धात्वार्थे	गंगा हिमालयात् प्रभवति
तुलना अर्थे	राम: श्यामात् पटुतर: अस्ति	येन पठ्यते	छात्र: अध्यापकात् अधीते
उद्योगे	उद्योगात् नर: सर्व प्राप्तुमर्हति	अन्यार्थे	ईश्वरात् अन्य: क: रक्षक:
उद्यमे	उद्यमात् विना धनं न लभते	भयार्थे	बालक: कुक्कुरात् बिभेति
विना योगे	ज्ञानात् विना न मुक्ति:	प्रमादार्थे	स्वाध्यायात् मा प्रमदितव्यम्
ऋते अर्थे	श्रमात् ऋते कुत: विद्या	इतरार्थे	धर्मात् इतर: क: अवलम्ब:

पृथक् योगे	श्रमात् पृथक् कुत: विद्या

3. गङ्गा **हिमालयेन** प्रभवति।

4. मालाकारः **पुष्पाणि** स्पृह्यति।

उत्तर:- 1. ग्रामात् 2. कूपात् 3. हिमालयात् 4. पुष्पेभ्यः

प्रश्न:- कोष्ठक से उचित शब्द लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

1. सः .... काणः अस्ति। (नेत्रेण, नेत्रात्)
2. .... परितः वृक्षाः सन्ति। (ग्रामस्य, ग्रामम्)
3. .... विना नरः पशुतुल्यः। (विद्या, विद्यया)
4. सीता .... सह वनम् अगच्छत् (रामेण, रामस्य)

उत्तर:- 1. नेत्रेण 2. ग्रामम् 3. विद्यया 4. रामेण

प्रश्न:- चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किन उपपद विभक्तियों में किया जाता है?

प्रश्न:- कारक किसे कहते हैं? इसके कितने प्रकार होते हैं? इनकी संख्या कितनी है?

प्रश्न:- पञ्चमी विभक्ति में किन उपपद विभक्तियों का प्रयोग होता है।

प्रश्न:- आयुर्वेदिक साहित्य से प्रस्तुत निम्नलिखित वाक्यों में से उपपद विभक्ति के अनुसार कारक की पहचान करें।

- **नमः** पुरुषसिंहाय विष्णवे विश्वकर्मणे। च०चि० 23.91
- गुणत्रयविभेदेन मूर्तित्रयमुपेयुषे। त्रयीभुवे त्रिनेत्राय त्रिलोकी-पतये नमः।। च०सू०/आयुर्वेददीपिका/1/1
- सर्वभेषजोत्तमे **स्वाहा**। च०चि०23/94.
- या देवानमृतं भूत्वा **स्वधा** भूत्वा पितृंश्च या। सोमो भूत्वा द्विजातीन् या युङ्क्ते श्रेयोभिरुत्तमैः। । च०चि० 24.7
- उपद्रवैर्वा **जुष्टस्य** भग्नं कृच्छ्रेण सिद्ध्यति। (सु०चि०3)
- प्रयोजनञ्चास्य स्वस्थस्य स्वास्थयरक्षणमातुरस्य विकार-प्रशमनं च। (सू० 30/36)

वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

- अग्निवेश पुस्तक पढ़ता है।
- गङ्गा हिमालय से निकलती है।
- वैद्य रोगी को औषध देता है।
- धर्म का आचरण करो।
- राम दशरथ का पुत्र है।
- भारतवर्ष हमारा राष्ट्र है।
- गुरु छात्र पर क्रोध करते हैं।
- वह पाप से घृणा करता है।
- वैद्यों में रमेशचन्द्र श्रेष्ठ है।
- वह एक आँख से काणा है।

❖ **अधोदत्ते श्लोके रेखाङ्कितानां पदानां कारकसम्बन्धं विशदीकृत्वा तवनुसृत पदानाम् अर्थं लिखन्तु।**

<u>शरीरं</u> हि विना <u>वायुं समतां</u> याति दारुभिः।
<u>मरणं</u> तस्य <u>निष्क्रान्तिः</u> ततो वायुं निरोधयेत्।

❖ **अधोदत्ते श्लोके रेखाङ्कितानां पदानां कारकसम्बन्धं विशदीकृत्वा तदनुसृत्य पदानाम् अर्थं लिखन्तु।**

<u>दर्शनस्पर्शनप्रश्नैः</u> परीक्षेत च <u>रोगिणम्</u>
<u>रोग</u> निदान - प्राग् प्राग् - रूप लक्षणोपशयाप्तिभिः।
<u>आयुर्वेदोपदेशेषु</u> विधेयः <u>परमादरः</u>।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न:- संस्कृते कति कारकाणि भवन्ति?

1. सप्त 2. अष्टौ
3. षट् 4. पञ्च

उत्तर:- षट्

स्पष्टीकरण

- ❖ कर्त्ता कारक
- ❖ कर्म कारक
- ❖ करण कारक
- ❖ सम्प्रदान कारक
- ❖ अपादान कारक
- ❖ अधिकरण कारक

इसके अतिरिक्त किञ्चित् साम्य के कारण कारक के अन्तर्गत जिन्हें हम पढ़ते हैं— 'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' को कारक इसीलिये नहीं माना जाता, क्योंकि इनका सम्बन्ध क्रिया से नहीं होता है। जैसे— **'रामस्य पिता आगच्छति'** यहाँ आगच्छन् क्रिया का सम्बन्ध पिता से है, क्योंकि आने का कार्य वही करते हैं, राम नहीं। अतः पिता तो कारक है पर राम प्रस्तुत वाक्य में सम्बन्ध मात्र है।

प्रश्न:- 'गां दोग्धि पयः' इत्यत्र कस्य सूत्रस्य उपयोगः भवति?

1. स्वतन्त्र कर्त्ता
2. कर्तुरीप्सिततमं कर्म
3. तथायुक्तं चानीप्सितम्
4. अकथितं च

उत्तर:- अकथितं च।

प्रश्नानुवाद — 'गां दोग्धि पयः' यहाँ किस सूत्र का उपयोग होता है?

स्पष्टीकरण — गां दोग्धि पयः- इस वाक्य में अकथितं च सूत्र का उपयोग हुआ है। जहाँ दुह् धातु के योग में द्विकर्मक

का सम्बन्ध होने से यहाँ द्वितीया हुई। गां दोग्धि पय: (गाय से दूध दुहता है।)

नियम 1 – '**अकथितं च**' इस सूत्र के अनुसार अपादन आदि कारकों के होने पर भी कर्ता द्वारा उसका प्रयोग न किया जाये तो उसे अकथित कहा जाता है। दुह्, याच् आदि 16 धातुओं और उनके समानार्थी धातुओं के योग में अपादान आदि के अकथित होने पर उनकी कर्मसंज्ञा होती है और **इन 16 धातुओं को द्विकर्मक धातु** कहा जाता है।

दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथ् मुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यानीहृकृष्वहाम्।।

इन **सोलह धातुओं** का प्रयोग इस प्रकार है —

1. दुह् (दुहना)
- गां दोग्धि पय:।

  यहाँ अपादानकारक का अर्थ प्रकट होने पर भी उक्त सूत्र से कर्मकारक हुआ है।

2. याच् (माँगना)
- बलिं याचते वसुधाम्।
- बलिं भिक्षते वसुधाम्।
- निर्धन: राजानं धनं याचते।

  याच् धातु के समानार्थी 'भिक्ष्' धातु के प्रयोग पर भी द्वितीया विभक्ति ही होती है।

3. पच् (पकाना)
- तण्डुलान् ओदनं पचति।

4. दण्ड् (दण्ड देना)
- गर्गान् शतं दण्डयति।

5. रुधि (रोकना)
- व्रजं गां अवरुणद्धि।

6. पृच्छ् (पूछना)
- माणवकं पन्थानं पृच्छति।

7. चि (चुनना)
- लतां पुष्पं चिनोति।

8. ब्रू, शास् (बोलना, उपदेश करना)
- माणवकं धर्मं ब्रूते।
- गुरु: शिष्यं शास्त्रं शास्ति।
- अध्यापकं शास्त्रं शास्ति।

9. जि (जीतना)
- देवदत्तं शतं जयति।

10. मथ् (मथना)
- अमृतं क्षीरनिधिं मथ्नाति।

11. मुष् (चुराना)
- शतं मुष्णाति देवदत्तं।

12. नी, हृ, कृष्, वह् (ले जाना)
- ग्रामं अजां नयति।
- गृहं गावं हरति।
- ग्रामं अजां वहति।
- ग्रामं अजां कर्षति।

अत: स्पष्ट है कि गां दोग्धि पय: इस वाक्य में **अकथितं च** सूत्र का उपयोग हुआ है।

प्रश्न:- व्याकरण में कर्म का मुख्य लक्षण क्या कहा गया है?

1. तथायुक्तं चानीप्सितम्।
2. अकथितञ्च।
3. कर्तुरीप्सिततमं कर्म।
4. ह्रक्रोरन्यतरस्याम्।

उत्तर:- कर्तुरीप्सिततमं कर्म।

कर्म — वाक्य में कर्ता के सबसे अभीष्ट होता है उसे कर्म कहते हैं।

कर्म का लक्षण — कर्त्ता क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसकी '**कर्तुरीप्सिततमं कर्म**' इस सूत्र से कर्म संज्ञा होती है तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति आती है।

उदाहरण — 'अनुज: कथां लिखति।' इस वाक्य में 'कथां' इस वाक्य का कर्म है और 'लिखति' क्रिया है। दोनों में व्यवधानरहित सम्बन्ध है, अर्थात् कर्ता 'अनुज:' क्रिया 'लिखति' के द्वारा कर्म 'कथां' को प्राप्त कर रहा है, सम्बंधित हो रहा है।

अत: इस वाक्य में '**कर्तुरीप्सिततमं कर्म**' से इस सूत्र से कर्म का मुख्य लक्षण स्पष्ट होता है।

प्रश्न:- 'मासेन ग्रन्थोऽधीत:' इत्यत्र तृतीया विधायकं सूत्रं किम्?

1. कर्तृकरणयोस्तृतीया
2. येनाङ्गविकार:
3. अपवर्गे तृतीया
4. साधकतमं करणम्

उत्तर:- अपवर्गे तृतीया।

प्रश्नानुवाद — 'मासेन ग्रन्थोऽधीत:' यहाँ तृतीया विधायक सूत्र क्या है?

स्पष्टीकरण — मासेन ग्रन्थोऽधीत: — यहाँ तृतीया विधायक सूत्र **अपवर्गे तृतीया** है।

अध्याय 6

सन्धि

सन्धि नामक इस अध्याय से पाठ्यक्रम के अनुसार पन्द्रह (15) अङ्कों के प्रश्न आएगें।

दो वर्णों के निकट आने से उनमें जो विकार होता है उसे 'सन्धि' कहते है। इस प्रकार की सन्धि के लिए दोनों वर्णों का निकट होना आवश्यक है, क्योंकि दूरवर्ती शब्दो या वर्णो में सन्धि नहीं होती है। वर्णो की इस निकट स्थिति को ही सन्धि कहते हैं। अतः संक्षेप में यह समझना चाहिए कि दो वर्णो के पास-पास आने से उनमें जो परिवर्तन या विकार होता है उसे संस्कृत व्याकरण में सन्धि कहते है।

व्याकरण— शास्त्र में सन्धि करने के अपने नियम होते हैं।वर्णों के सन्धि के माध्यम से परस्पर मिल जाने से उनमें विशेष परिवर्तन हो जाता है, सन्धि करे या नहीं करें, इस विषय में आचार्य का स्पष्ट निर्देश है कि

आवश्यक (नित्य)— एक शब्द के भिन्न-भिन्न अवयवों में, धातु और उपसर्ग में तथा समास में सन्धि आवश्यक रूप से करनी ही चाहिये।

विवक्षा (ऐच्छिक)— एक ही वाक्य के पृथक् - पृथक् शब्दांश में सन्धि करना या न करना सन्धि करने वाले की इच्छा पर निर्भर करता है।

विशेष— अल्प विराम या पूर्ण विराम होने के बाद सन्धि नहीं होती। पद्म में सन्धि आवश्यकरूप से करनी चाहिये अन्यथा छन्दो-दोष माना जाता है।

सूत्र और वार्तिक ही व्याकरण शास्त्र हैं और जो भी कार्य यहाँ होगा, वह सूत्रों के आदेश पर ही होगा।

प्रकार स्थूल रूप से सन्धि तीन प्रकार की होती है:

1. स्वर सन्धि
2. व्यञ्जन - सन्धि
3. विसर्ग - सन्धि

संस्कृत में स्वर-सन्धि आठ प्रकार की होती हैं-

1. दीर्घ सन्धि - अकः सवर्णे दीर्घः
2. गुण सन्धि - आद्‌गुणः
3. वृद्धि सन्धि - वृद्धिरेचि
4. यण् सन्धि - इकोऽयणचि
5. अयादि सन्धि - एचोऽयवायावः
6. पूर्वरूप सन्धि - एडः पदान्तादति
7. पररूप सन्धि - एडि पररूपम्
8. प्रकृति भाव सन्धि - ईदूद्विवचनम् प्रग्रह्यम्

1. दीर्घ सन्धि

सूत्र—अकः सवर्णे दीर्घः

अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण (बिल्कुल वैसा ही) आये तो दोनों मिलकर दीर्घ बन जाते हैं।

अक् + अक् (अ, इ, उ, ऋ) = दीर्घः

दीर्घ सन्धि के चार नियम होते हैं।

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ, ॠ हो जाते हैं।

- अ/आ = अ/आ = आ
- इ/ई + इ/ई = ई
- उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ
- ऋ/ ॠ + ऋ/ ॠ = ॠ

जैसे -

1. अ/आ + अ/आ = आ

- अ + अ = आ ⟶ धर्म + अर्थ = धर्मार्थ
- अ + आ = आ ⟶ हिम + आलय = हिमालय
- अ + आ = आ⟶ पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
- आ + अ = आ ⟶ विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

- आ + आ = आ ⟶ विद्या + आलयः = विद्यालयः
- अ +अ = आ ⟶ शत्रुश्च + अबुद्धिमताम् = शत्रुश्चाबुद्धिमताम्
- अ + आ = आ, पञ्च + अर्थाः ⟶ पञ्चार्थाः
- अ+आ = आ, सत्त्व + आत्मसंयोगः = सत्त्वात्मसंयोगः
- आ+अ, तृष्णा + अतीसारौ = तृष्णातीसारौ
- आ+आ = आ, या+ आमप्रभवा = याऽऽमप्रभवा,
  - दैत्य+अरि = दैत्यारिः
  - शश+अङ्क = शशाङ्क
  - रत्न+आकरः = रत्नाकरः
  - श्रद्धा+अस्ति = श्रद्धास्ति
  - दया+अर्णवः = दयार्णवः

2. इ और ई की सन्धि

- इ + इ = ई ⟶ रवि + इंद्रः = रवींद्र; मुनि + इंद्र = मुनींद्रः
- इ + ई = ई ⟶ गिरि + ईशः = गिरीश; मुनि + ईश = मुनीशः
- ई + ई = ई ⟶ नदी + ईशः = नदीश; मही + ईश = महीशः
- ई + इ = ई ⟶ मही + इंद्रः = महींद्र; नारी + इंदु = नारींदु
  - साक्षी + इत्युच्यते = साक्षीत्युच्यते
  - हरि + ईशः = हरीशः
  - मुनि + ईशः = मुनीश्वरः
  - परि + ईक्षा = परीक्षा
  - क्षिति + ईश्वरः = क्षितीश्वरः

इ + इ = ई,

- नभसि + इन्दुवत् = नभसीन्दुवत्
- अभि + इष्टः = अभीष्टः
- अति + इन्द्रियः = अतीन्द्रियः
- बुद्धि + इन्द्रियाणाम् = बुद्धीन्द्रियाणाम्
- नभसि + इन्दुवत् = नभसीन्दुवत्
- कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः , बुद्धि + ईक्षणम् = बुद्धीक्षणम्।

ई+ ई = ई

- पुरी + ईक्षणम् = पुरीक्षणम्
- नदी + ईक्षणम् = नदीक्षणम्
- पुरी + ईक्षणम् = पुरीक्षणम्
- नदी + ईक्षणम् = नदीक्षणम्

यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत् तद्रव्यम्। (च.सू. 1)

कृत्स्नो हि लोको बुद्धिमतामाचार्यः शत्रुश्चाबुद्धिमताम्।। (च.वि 8.14)

3. उ और ऊ की सन्धि

- उ + उ = ऊ ⟶ भानु + उदयः = भानूदय; विधु + उदयः = विधूदयः
- उ + ऊ = ऊ ⟶ लघु + ऊर्मि = लघूर्मि; सिधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि
- ऊ + उ = ऊ ⟶ वधू + उत्सव = वधूत्सव; वधू + उल्लेखः = वधूल्लेखः
- ऊ + ऊ = ऊ ⟶ भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व; वधू + ऊर्जा = वधूर्जा
- गुरु + उदयः = गुरूदयः
- सु + उपविष्टः = सूपविष्टः
- सुबहु + उदकम् = सुबहूदकम्
- सु + उपविष्टः = सूपविष्टः,
- सुबहु + उदकम् = सुबहूदकम्
- कटु + उष्णानि = कटूष्णानि
- विधु + उदयः = विधूदयः
- लघु + उत्तरः = लघूत्तरः
- प्रभु + उक्तिः = प्रभूक्तिः
- मधु + उदकम् = मधूदकम्
- कटु + उष्णानि = कटूष्णानि
- मधु + उदकम् = मधूदकम्
- जानु + ऊरुजंघादयः = जानूरुजंघादयः
- भानु + ऊष्मा: = भानूष्माः
- लघु + ऊर्जा = लघूर्जा
- सिन्धु + ऊर्मिः = सिन्धूर्मिः

4. ऋ और ऋ की सन्धि

- ऋ + ऋ = ॠ ⟶ पितृ + ऋणम् = पित्रणम्
- भ्रातृ + ऋद्धिः = भ्रातृद्धिः
- पितृ + ऋकारः = पितृकारः
- होतृ + ऋद्धिः = होतृर्द्धिः

ऋ के सामने ऋ ऋ एवं लृ के सामने लृ आ जाते है तो सन्धि विकल्प से होती है अर्थात् या तो दीर्घ ॠ हो जाता है या फिर दोनों स्वर उसी स्थिति में रहते हैं।

शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। (च.सू. 1.42)

बुद्धीन्द्रियाणि पञ्चैव पञ्च कर्मेन्द्रियाणि च समनस्काश्च पञ्चार्था विकारा इति संज्ञिताः।। (च.शा. 1.64)

यथा—

(i) अ+ए = ए

- प्र + एजते = प्रेजते
- सम + एषते –समेषते
- अव + एषताम्–अवेषताम्
- प्र + एजिता–प्रेजिता
- उप + एहि –उपेहि
- उप + एधते–उपेधते

(ii) अ+ओ = ओ

- उप् + ओषति –उपोषति
- उप + ओणति –उपोणति
- उप + ओहति –उपोहति
- सम + ओदते –समोदते
- अव + ओखति –अवोखति
- प्र + ओखता–प्रोखता

8. प्रकृति-भाव

सूत्रः—ईद्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

प्लुत / प्रग्रह्य +अच् = प्रकृतिभाव

द्विवचनान्त शब्द के अन्त में यदि ई, ऊ, ए आये और आगे यदि कोई स्वर आये तो ई, ऊ, ए में कोई परिवर्तन नहीं हो तो, दोनों शब्द यथास्वरूप रह जाते हैं। इसे प्रगृह्य कहते हैं और प्रगृह्य संज्ञा होने पर प्रकृतिभाव हो जाता है।

कुछ विद्वान इसे सन्धि स्वीकार नही करते, वस्तुतः यह तो सन्धि का निषेध है।

हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू।

एहि कृष्ण3 अत्र गौश्चरति।

कृष्ण का अन्तिम वर्ण प्लुत है उससे परे अच् है (अत्र का अकार है) इसीलिए प्रकृतिभाव हो गया है।

(i) ई+अ/स्वर = ई स्वर

- अद्री + एतौ (अद्री द्विवचन) = अद्री एतौ
- कवी + एतौ (कवी-द्विवचन) = कवी एतौ
- अरी + एतौ = अरी एतौ

(ii) ऊ+अ/स्वर = ऊ स्वर

- प्रभू + इमौ = प्रभू इमौ (प्रभू द्विवचन)
- पशू + इमौ = पशू इमौ
- वायू + इमौ = वायू इमौ

(iii) ए+अ/स्वर = ए स्वर

- कुले + उत्कृष्टे –कुले उत्कृष्टे
- औषधे + अमू –औषधे अमू
- यमुने + अमू – यमुने अमू
- क्रिये + अमू = क्रिये अमू

+	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ
अ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर्	अर्	ऐ	ऐ	औ	औ
आ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर्	अर्	ऐ	ऐ	औ	औ
इ	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
ई	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
उ	व	वा	वि	वी	ऊ	ऊ	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऊ	व	वा	वि	वी	ऊ	ऊ	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऋ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ॠ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ए	अय	अया	अयि	अयी	अयु	अयू	अयृ	अयॄ	अये	अयै	अयो	अयौ
ऐ	आय	आया	आयि	आयी	आयु	आयू	आयृ	आयॄ	आये	आयै	आयो	आयौ
ओ	अव	अवा	अवि	अवी	अवु	अवू	अवृ	अवॄ	अवे	अवै	अवो	अवौ
औ	आव	आवा	आवि	आवी	आवु	आवू	आवृ	आवॄ	आवे	आवै	आवो	आवौ

Legend

	सवर्णदीर्घः
	गुणः
	वृद्धिः
	यण्
	यान्तादेश/वान्तादेश

सन्धि	सन्धिसूत्र	सूत्र का अर्थ	उदाहरण
3. जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	झल् को जश् आदेश	• तत् + टीका = तट्टीका • षट् + आननः = षडाननः
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल् +ख = र् च	• जगत् + ईशः = जगदीशः • छेद + ता = छेत्ता लिभ् + सा = लिप्सा
5. छत्व सन्धि	शश्छोऽटि	झय् + शकार/छकार + अट् श् के स्थान पर विकल्प से छ्	• चलत् + शुकः = चलच्शुकः/ चलच्छुकः • तत् + श्रुत्वा = तच्श्रुत्वा /तच्छ्रुत्वा
6. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म् + हल् = अनुसार (ं)	• हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे त्वम् + करोषि = त्वं करोषि
7. परसवर्ण सन्धि / तोर्लि सन्धि/ लत्व सन्धि	तोर्लि	तवर्ग+ल् = ल्	• उद् + लेख = उल्लेखः • तद् + लीनः = तल्लीनः
8. परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार + यय् = परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	• गं + गा = गङ्गा • मं + चः =मञ्चः
9. अनुनासिक सन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	यर् + अनुनासिक = अनुनासिक	• जगत् + नाथः = जगन्नाथः • दिक् + नागः = दिङ्नागः
10. पूर्वसवर्णसन्धि	झयो होऽन्तरस्याम्	वर्ग के (1, 2, 3, 4) + ह = 1, 2, 3, 4 को 3 (तीसरा वर्ण) + ह् (को वर्ग का चतुर्थ वर्ण)	• तत् + हितम् = तद्धितम् • वाक् + हरिः = वाग्घरिः
11. तुगागम सन्धि	छे च	हस्व, दीर्घ स्वर + छ = तुक् (च)	• वि + छेदः = विच्छेदः • स्व + छः = स्वच्छः
12. रुत्वादेश सन्धि	नश्छव्यप्रशान्	न् + छव् +अम् = अनुस्वार+श् / स्	• श्रीमान् + चलति = श्रीमाँश्चलति • महान् + छात्रः = महाँश्छेदः

विसर्ग सन्धि

सन्धि	सन्धिसूत्र	सूत्र का अर्थ	उदाहरण
1. सत्व सन्धि	विसर्जनीयस्य सः	विसर्ग (:) + खर् = स्	• राम + चलति = रामस् + चलति रामश्चलति • निः + चयः निस् + चयः निश्चयः
2. रुत्व सन्धि	ससजुषो रुः	पदान्त सकार/सजुष् = रु	• कविस्+अयम् कवि रु + अयम् कवि र् अयम् कविरयम्
3. उत्व सन्धि	अतो रोरप्लुतादप्लुते	अ + रु + अ = उ	• शिवस् + अर्च्यः = शिव रु + अर्च्यः शिव र् + अर्च्यः शिव उ + अर्च्यः शिवो + अर्च्यः शिवोऽर्च्यः • मनस् + रथः = मनोरथः
4. रलोप सन्धि	रोरि	र् + र् = पूर्व र् का लोप	• बालकास् + रमन्ते = बालका र् + रमन्ते बालका रमन्ते
5. रेफ़ को विसर्ग	खरवासनयोर्विसर्जनीयः	र् + खर् = विसर्ग (:) र् + ... = विसर्ग (:)	• रामर् + खादति = रामः खादति

अभ्यास वर्ग

सन्धि अभ्यास

अभ्यासप्रश्नाः 01 (क) सन्धिं करोतु-

1. रत्न + आकरः -.........
2. कार्य + आलयः -.........
3. कवि +इन्द्रः -.........
4. श्री +ईशः -.........
5. बधू +उत्सवः -.........

अभ्यासप्रश्नाः 01 (ख) सन्धिविच्छेदं करोतु-

1. विद्यालयः -.........
2. कमलाकरः -.........
3. मुनीशः -.........
4. गिरीन्द्रः -.........
5. सूक्तम् -.........

अभ्यासप्रश्नाः 02 (क) सन्धिं करोतु-

1. शकुन्तला + इति -.........
2. हित +उपदेशः -.........
3. महा +उदयः -.........
4. महा +ऋषिः -.........
5. सा +इयम् -.........

अभ्यासप्रश्नाः 02 (ख) सन्धिविच्छेदं करोतु-

1. परोपकारः -.........
2. देवेन्द्रः -.........
3. गंगोदकम् -.........
4. महर्षिः -.........
5. राजर्षिः -.........

अभ्यासप्रश्नाः 03 (क) सन्धिं करोतु-

1. तथा + एव -.........
2. सा +एषा -.........
3. महा +ओषधिः -.........
4. दिव+ ओकसः -.........
5. विद्या + ऐश्वर्यम् -.........

अभ्यासप्रश्नाः 03 (ख) सन्धिविच्छेदं करोतु-

1. तवैव -.........
2. एकैकम् -.........
3. महौषधम् -.........
4. मैनम् -.........
5. तथैव -.........

अभ्यासप्रश्नाः 04 (क) सन्धिं करोतु-

1. सु +आगतम् -.........
2. प्रति+उपकारः -.........
3. अति +आचारः -.........
4. अभि +उदयः -.........
5. सति +अपि -.........

अभ्यासप्रश्नाः 04 (ख) सन्धिविच्छेदं करोतु-

1. इत्यादि -.........
2. अत्यन्तम् -.........
3. अन्वयः -.........
4. देव्युवाच -.........
5. स्वादिः -.........

अभ्यासप्रश्नाः 05 (क) सन्धिं करोतु-

1. पो +अनः -.........
2. भो +अनम् -.........
3. चे +अनम् -.........
4. कस्मै +अदात् -.........
5. भौ +अकः -.........

अभ्यासप्रश्नाः 05 (ख) सन्धिविच्छेदं करोतु-

1. भवामि -.........
2. पवित्रम् -.........
3. दायकः -.........
4. तावेतौ -.........
5. भवति -.........

अभ्यासप्रश्नाः 06 (क) सन्धिं करोतु-

1. उप +एजते -.........
2. प्र +ओघोयति -.........
3. उप +एहि -.........
4. अव +एहि -.........
5. प्र +ओषति -.........

अभ्यासप्रश्नाः 06 (ख) सन्धिविच्छेदं करोतु-

1. अपेजते -.........
2. प्रोषिता -.........
3. अवेहि -.........
4. उपेहि -.........
5. शिवेहि -.........

अभ्यासप्रश्नाः 07 (क) सन्धिं करोतु-

1. गो +अग्रम् -.........
2. पर्वते +अस्मिन् -.........

अध्याय 7

समास प्रकरण

समास की परिभाषा

समास— दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया शब्द बनाने को समास कहते हैं।

समास का अर्थ हैं संक्षेप करना। समास कर लेने पर समास को प्राप्त हुए शब्दों के बीच की विभक्तियाँ नहीं रहती व अन्त में पूरे (मिलकर बने हुए) शब्द में एक विभक्ति लग जाती है।

समसनं समास— अर्थात संक्षिप्त होने को समास कहते हैं।

"अनेकपदानामेकपदीभवनं समासः"— अनेक पदों का मिलकर एक पद होना समास है।

परार्थ का बोध करवाने वाले को वृत्ति कहते हैं।वृत्तियाँ पाँच प्रकार की होती है। वृत्तियों के अर्थ का बोध करवाने वाले को विग्रह वाक्य कहते हैं।

1. **कृत्—** उदाहरण -कारकः -करोति इति कारकः।
2. **तद्धित—** उदाहरण- शारीरः-शरीरे भवः शारीरः।
3. **समास—** उदाहरण -अष्टाङ्गसंग्रहः - अष्टाङ्गानां संग्रहः इति अष्टाङ्गसंग्रह।
4. **एकशेष—** उदाहरण-पितरौ-माता च पिता च इति पितरौ।
5. **सनाद्यन्त—** सन् आदि धातुओं में लगने वाले प्रत्यय उदाहरण-पिपठिष्यति-पठितुम् इच्छति इति पिपठिष्यति।

विग्रह— समास को अलग करके उसकी पहले वाली स्थिति में रखने को विग्रह कहते हैं।

उदाहरण— राज्ञः पुरुषः (विग्रह)= राजपुरुषः (समास)।

यहाँ विग्रह वाक्य में राज्ञः(राजा का) एक शब्द है व पुरुषः (व्यक्ति) दूसरा शब्द है। इन दोनों शब्दों से मिलकर एक शब्द "राजपुरुषः" बन गया। "राज्ञः" शब्द में स्थित मध्य की षष्ठी विभक्ति का लोप हो गया।

विग्रह वाक्य दो प्रकार के बनते हैं:-

1. लौकिक विग्रह
2. अलौकिक विग्रह

लौकिक विग्रहः—जिसका लोक व्यवहार में प्रयोग हो।

अलौकिक विग्रहः—जिसका सम्बन्ध व्याकरण से हो,उसे अलौकिक विग्रह कहते हैं।

यथाः—भूतपूर्व

पूर्व+भूतः—लौकिक विग्रह

पूर्व+अम्+भूत +सु—अलौकिक विग्रह

अलौकिक विग्रह में शब्द से सम्बन्धित विभक्ति का प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। अतः इन्हें जानना भी अत्यन्त आवश्यक है:—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु (स्)	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अस्)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस्
पंचमी	ङसि (अस्)	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस् (अस्)	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस्	सुप् (सु)

समास के भेद

समासः पञ्चधा— समास पाँच प्रकार के होते है।

1.	अव्ययीभावः	2.	तत्पुरुषः	3.	बहुव्रीहिः
4.	द्वन्द्वः	5.	केवल समास।		

1. **केवल समास—**"विशेषसंज्ञा-विनिमुर्क्तः केवल समासः" इस समास में समास तो होता है किंतु समास विशेष की संज्ञा नहीं होती है।

विशेषसंज्ञा— अव्ययीभावादिरूपास्ताभिर्विनिर्मुक्त इत्यर्थः। - अर्थात अव्ययीभाव आदि संज्ञा से विनिर्मुक्त का नाम केवल समास है।

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
भूतपूर्वः	जो पहले हो चुका हो	पूर्वं भूतः	'सह सुपा'
वागर्थाविव	वाणी और अर्थ के समान	वागर्थौ इव	इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च (वार्तिक)

2. **अव्ययीभावसमास**—"पूर्वपदार्थप्रधानः" इस समास में पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता होती है।

- पूर्व पद प्रधान होता है।
- पूर्व पद या पूरा पद अव्यय होता है। (वे शब्द जो लिंग, वचन, कारक, काल के अनुसार नहीं परिवर्तित होते, उन्हें अव्यय कहते हैं)
- यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयुक्त हो, वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है।
- संस्कृत के उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभव समास होते हैं।

अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धयर्थाऽभावाऽत्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्ययथाऽऽबुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश -सम्पत्ति-कल्याऽन्तवचनेषु। 2/1/6

- विभक्ति, समीप, समृद्धि, समृद्धि का नाश, अभाव,नाश, अनुचित, शब्द की अभिव्यक्ति, पश्चात्, यथा, क्रमशः, एकसाथ, समानता, सम्पत्ति, सम्पूर्णता और अन्त इन सोलह अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास की अव्ययीभाव संज्ञा होती है।

1. **विभक्तिः** सप्तमी विभक्ति के अर्थ में अधि अव्यय का प्रयोग होता है।
   - हरौ इति = अधिहरि (हरि में)।
   - आत्मनि इति = अध्यात्म (आत्मा में)।
2. **समीप** : सुबन्त प्रत्ययों का उप के साथ समास होता है।
   - नद्याः समीपम् = उपनदम् (नदी के समीप)
   - गङ्गायाः समीपम् = उपगङ्गम् (गंगा के समीप)
   - नगरस्य समीपम् = उपनगरम् (नगर के समीप)
3. **समृद्धिः** सु अव्यय का प्रयोग समृद्धि अर्थ में होता है।
   - मद्राणां समृद्धि = सुमन्द्रम् (मद्रवासियों की समृद्धि)
   - भिक्षाणां समृद्धि = सुभिक्षम् (भिक्षाटन की समृद्धि)
4. **व्यर्द्धिः** दुर् = दरिद्रता या नाश।
   - यवनानां व्युद्धि = दुर्यवनम् (चवनों की दुर्गति)
   - भिक्षाणां व्युद्धि = दुर्भिक्षम् (भिक्षा का अभाव)
5. **अर्थाभावः** अभाव अर्थ में निर् का प्रयोग।
   - मक्षिकाणाम् अभाव = निर्मक्षिकम् (मक्खियों का अभाव)
   - विघ्नानाम् अभाव = निर्विघ्नम् (विघ्नों का अभाव)।
6. **अत्ययः** अति का प्रयोग नाश के अर्थ में होता है।
   - हिमस्य अत्ययः = अतिहिमम् (हिम का नाश)
   - रोगस्य अत्ययः = अतिरोगम् (रोग का नाश)
7. **असंप्रतिः** अति – अनुचित अर्थ में प्रयोग।
   - निद्रा सम्प्रति न युज्यते = अतिनिद्रम् (इस समय नींद उचित नहीं)
   - स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते = अतिस्वप्नम् (इस समय सोना उचित नहीं)
8. **शब्द-प्रादुर्भावः** प्रसिद्धि के अर्थ में प्रयोग।
   - हरि शब्दस्य प्रकाशः = इतिहरि ('हरि' शब्द का प्रकट होना)
   - विष्णुशब्दस्य प्रकाशः = इतिविष्णु ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
9. **पश्चात्ः** अनु अव्यय का प्रयोग पश्चात् अर्थ में होता है।
   - विष्णोः पश्चात् = अनुविष्णु (विष्णु के पीछे)
   - रामस्य पश्चात् = अनुरामम् (राम के पीछे)
10. **योग्यताः**

(i) अनुरुप (उचित) अर्थ में- अनु अव्यय का प्रयोग योग्यता अर्थ में

- रूपस्य योग्यम् = अनुरूपम् (रूप के योग्य)
- गुणस्य योग्यम् = अनुगुणम् (गुण के योग्य).

(ii) वीप्सा – प्रति अव्यय का प्रयोग आवृति (पुनः वही अवस्था आने पर)

- गृहम् गृहम् = प्रतिगृहम् (घर-घर)
- दिनम् दिनम् = प्रतिदिनम् (दिन-दिन)।

(iii) अनतिक्रम्य-अतिक्रमण नहीं करने के अर्थ में।

- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्तिम् (शक्ति भर)
- बलम् अनतिक्रम्य = यथाबलम् (बल भर)

(iv) सादृश्य –समान के अर्थ में प्रयोग।

- हरेः सादृश्यम् = सहरि (हरि की समानता)
- रूपस्य सादृश्यम् = सरूपम् (रूप की समानता)

प्रथमानिर्दिष्ट शङ्कुला की उपसर्जनसंज्ञा तथा पूर्वप्रयोग कर शङ्कुलाखण्ड बना।

सु विभक्ति, रुत्व तथा विसर्ग करके शङ्कुलाखण्डः सिद्ध हुआ।

शङ्कुलाखण्डः तत्कृतार्थेन गुणवचनेन का उदाहरण है।

सूत्रः- **चतुर्थीतदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः।**

सूत्रार्थः चतुर्थ्यन्त सुबन्त पदों का 'तदर्थ' तथा 'हित' के अर्थ में समास होता है।

समास-विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
यूपाय दारु	यूपदारु	यूप के लिए लकड़ी
रन्धनाय स्थाली	रन्धनस्थाली	राँधने के लिए थाली

सूत्रः- **पंचमीभयेन।**

सूत्रार्थः भयार्थक शब्दों के योग में पंचम्यन्त शब्दों का समास होने पर पंचमी तत्पुरुष समास होता है।

जैसे—चोरात् भयम् = चौरभयम् = चोर से भय।

समास-विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
प्रेतात् भीतिः	प्रेतभीतिः	प्रेत से डर
सर्पात् भीतः	सर्पभीतः	सर्प से डरा हुआ
व्याघ्रात भीतः	व्याघ्रभीतः	बाघ से डर

सूत्रः- **षष्ठी।**

सूत्रार्थः षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। परन्तु; 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र से निर्धारण में होने वाली षष्ठी विभक्ति का समास नहीं होता।

जैसे— कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ) इसमें समास नहीं हुआ है।

समास-विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
गजानां राजा	गजराजः	गजों का राजा
राष्ट्रस्य पतिः	राष्ट्रपतिः	राष्ट्र का पति/स्वामी।
राज्ञः पुरुषः	राजपुरुषः	राजा का पुरुष

सूत्रः- **सप्तमी शौण्डैः।**

सूत्रार्थः सप्तम्यन्त शौण्ड (चालाक/धूर्त/निपुण) आदि शब्दों के साथ सदा सप्तमी तत्पुरुष समास होता है।

समास-विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
अक्षेषु शौण्डः	अक्षशौण्डः	जुए में धूर्त/निपुण
शास्त्रे प्रवीणः	शास्त्रप्रवीणः	शास्त्र में प्रवीण
सभायां पण्डितः	सभापंडितः	सभा में पंडित
प्रेमिण धूर्तः	प्रेमधूर्तः	प्रेम में धूर्त

सूत्रः- **उपपदतत्पुरुष।**

सूत्रार्थः प्रथमान्त + असुबन्त कृदन्त, उत्तानः शेते = उत्तानशयः। उत्ताना शेते = उत्तानशया पन्नं गच्छति इति पन्नगः (पन्न स् ग (गम् +ड)),। ध्वाङ्क्ष इव रौति= ध्वाङ्क्षरावी (ध्वाङ्क्ष स्- राविन् (रु+णिनि)), इत्यादि।

सूत्रः- **अनेकमन्यपदार्थ।**

सूत्रार्थः समस्यमान पदों से बहिर्भूत किसी अप्रथमान्त पद के अर्थ में विद्यमान अनेक प्रथमान्त पदों का समास होता है और उस समास का नाम बहुव्रीहि है।

सूत्रः- **चार्थे द्वन्द्वः।**

सूत्रार्थः अनेक (दो या दो से अधिक) सुबन्त जब 'च' के अर्थ में विद्यमान रहते हैं तब उनमें द्वन्द्व समास विकल्प से होता है। 'च' के चार अर्थ होते हैं 'समुच्चयान्वाचयेतरे तरयोगसमाहाराश्चार्थाः।'

1. परस्पर निरपेक्षस्य अनेकस्य एकस्मिन्नन्वयः समुच्चयः। अर्थात् जहाँ उद्देश्यपद एक-दूसरे से स्वतन्त्र होकर विधेयपद से अन्वित होते हैं वहाँ 'चार्थ' समुच्चय रूप होता है और वहाँ एक ही 'च' का प्रयोग किया जाता है। यथा — "ईश्वरं गुरु च भजस्वष्। किन्तु समुच्चय में समास नहीं होता है।
2. अन्यतरस्यानुषङ्गिकत्वेऽन्वाचयः। अर्थात् जहाँ 'च' द्वारा अन्वित एक पदार्थ प्रधान और दूसरा गौण रहता है वहाँ चार्थ 'अन्वाचय' रूप रहता है और वहाँ भी एक ही च का प्रयोग किया जाता है। जैसे— 'भिक्षामट गाव आनय'। अन्वाचय में भी समास नहीं होता है।
3. मिलितानामन्वय इतरेतरयोगः। अर्थात् जहाँ उद्देश्य पद परस्पर सम्बद्ध होकर विधेय पद से अन्वित होते हैं वहाँ 'च' का अर्थ इतरेतरयोग होता है। यथा— रामश्च कृष्णश्च रामकृष्णौ तौ भजस्व। इसमें समास होता है।
4. समूहः समाहारः। अर्थात् जहाँ समूह अर्थ प्रकट होता है। वहाँ चार्थ समाहार है। जैसे—हस्तौ च पादौ च इत्येतेषां समाहारः हस्तपादम्। इसमें भी द्वन्द्व समास होता है।

अध्याय 8

शब्दरूप

स्वरान्त	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
अ-कारान्त	वात, वैद्य, राम, रुग्ण	--------	पित्त, वन
आ-कारान्त	--------	बला, कला, स्थिरा, माला	--------
इ-कारान्त	अग्नि,मुनि	सम्प्राप्ति, मति, प्रकृति	अस्थि, वारि, अक्षि, दधि
ई-कारान्त	--------	धमनी,धेनु	--------
उ-कारान्त	ऋतु, भानु, गुरु	वर्षाभू, वधू	अश्रु, मधु
ऊ-कारान्त	--------	--------	--------
ऋ-कारान्त	नृ, धातृ, पितृ	मातृ	ज्ञातृ, धातृ
ओ-कारान्त	गो	--------	--------
व्यञ्जनान्त	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
न्-कारान्त	श्लेष्मन्, रोगिन्, ज्ञानिन्	--------	वर्त्मन्, दण्डिन्
स्-कारान्त	चन्द्रमस्	जलौकस्, सुमनस्	स्त्रोतस्, मनस्
त्-कारान्त	मरुत्	योषित्, सरित्	शकृत्, जगत्
द्-कारान्त	सुहृद्	परिषद्	--------
ज्-कारान्त	भिषज्	स्त्रज्	---------
श्-कारान्त	कीदृश्, एतादृश्	--------	--------
च्-कारान्त	--------	वाच्	--------
ष्-कारान्त	--------	प्रावृष्	सर्पिष्, आयुष्

संस्कृत की विभक्तियाँ, कारक और उनका अर्थ:—

वाक्य की सबसे छोटी इकाई को **शब्द** कहते हैं। शब्दों के अनेक रूप (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) होते हैं। संस्कृत भाषा में प्रयोग करने के लिए इन शब्दों को '**पद**' बनाया जाता है। संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों को पद बनाने हेतु इनमें प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। इन शब्दरूपों का प्रयोग (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में भिन्न-भिन्न रूपों में) होता है। इन्हें सामान्यतया शब्दरूप (Shabd Rupa) कहा जाता है।

क्रम	कारक	चिन्ह
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के साथ, के जैसा
चतुर्थी	संप्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से, अलग होने के अर्थ में
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर

प्रत्येक विभक्ति के तीन वचन होते हैं:—

1. एकवचन
2. द्विवचन
3. बहुवचन

याद रखने योग्य बातें—

1. कोई शब्द जब इन विभक्तियों में होता है तब वह पद **सुबन्त** कहलाता है।
2. वाक्यों में केवल पदों का ही प्रयोग है। पद पाँच प्रकार के होते हैं —

1.	विशेष्य	2.	विशेषण	3.	सर्वनाम
4.	अव्यय	5.	क्रिया।		

3. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, या गुण के नाम को **विशेष्य पद** (संज्ञा) कहते है। जैसे— रामः, नदी, लता, क्रोधः आदि।
4. जो विशेष्य के गुण को प्रकट करे वह **विशेषण पद** कहलाता है। जैसे—**सुंदरी** नारी, **स्वच्छं** जलं आदि।
5. जो संज्ञापदों की पुनरावृत्ति रोकता है **सर्वनाम पद** कहलाता है। जैसे— अन्य, तद्, यद्, इदम् आदि।

6. **अव्यय** उन शब्दों को कहा जाता है, जो लिंग-वचन, एवं विभक्तियों से सदा अप्रभावित रहता है। जैसे—यदा, कदा, एकदा, आदि।
7. गम्, गद्, स्था आदि शब्दों को **धातु** या **क्रिया** कहते हैं।

8.1 पुंल्लिङ्ग शब्दरूप "वात"

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वात:	वातौ	वाता:
द्वितीया	वातम्	वातौ	वातान्
तृतीया	वातेन	वाताभ्याम्	वातै:
चतुर्थी	वाताय	वाताभ्याम्	वातेभ्य:
पञ्चमी	वातात्	वाताभ्याम्	वातेभ्य:
षष्ठी	वातस्य	वातयो:	वातानाम्
सप्तमी	वाते	वातयो:	वातेषु
सम्बोधन	हे वात!	हे वातौ!	हे वाता:!

वैद्य

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वैद्य:	वैद्यौ	वैद्या:
द्वितीया	वैद्यम्	वैद्यौ	वैद्यान्
तृतीया	वैद्येन	वैद्याभ्याम्	वैद्यै:
चतुर्थी	वैद्याय	वैद्याभ्याम्	वैद्यैभ्य:
पञ्चमी	वैद्यात्	वैद्याभ्याम्	वैद्यैभ्य:
षष्ठी	वैद्यस्य	वैद्ययो:	वैद्यानाम्
सप्तमी	वैद्ये	वैद्ययो:	वैद्येषु
सम्बोधन	हे वैद्य!	हे वैद्यौ!	हे वैद्या:!

राम

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राम:	रामौ	रामा:
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामै:
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
षष्ठी	रामस्य	रामयो:	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयो:	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामा:!

रुग्ण

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रुग्ण:	रुग्णौ	रुग्णा:
द्वितीया	रुग्णम्	रुग्णौ	रुग्णान्
तृतीया	रुग्णेन	रुग्णाभ्याम्	रुग्णै:
चतुर्थी	रुग्णाय	रुग्णाभ्याम्	रुग्णेभ्य:
पञ्चमी	रुग्णात्	रुग्णाभ्याम्	रुग्णेभ्य:
षष्ठी	रुग्णस्य	रुग्णयो:	रुग्णानाम्
सप्तमी	रुग्णे	रुग्णयो:	रुग्णेषु
सम्बोधन	हे रुग्ण	हे रुग्णौ	हे रुग्णा:

इकारान्त पुंल्लिङ्ग "अग्नि"

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अग्नि:	अग्नी	अग्नय:
द्वितीया	अग्निम्	अग्नी	अग्नीन्
तृतीया	अग्निना	अग्निभ्याम्	अग्निभि:
चतुर्थी	अग्नये	अग्निभ्याम्	अग्निभ्य:
पञ्चमी	अग्ने:	अग्निभ्याम्	अग्निभ्य:
षष्ठी	अग्ने:	अग्न्यो:	अग्नीनाम्
सप्तमी	अग्नौ	अग्न्यो:	अग्निषु
सम्बोधन	हे अग्ने!	हे अग्नी!	हे अग्नय:!

मुनि

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनि:	मुनी	मुनय:
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभि:
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
पञ्चमी	मुने:	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
षष्ठी	मुने:	मुन्यो:	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्यो:	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनय:!

उकारान्त "गुरु"

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरु:	गुरू	गुरुव:
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरुन्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभि:
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्या:
पञ्चमी	गुरो:	गुरुभ्याम्	गुरुभ्या:
षष्ठी	गुरो:	गुर्वो:	गुरुणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वो:	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरव:!

अध्याय 9

धातु

संस्कृत व्याकरण में क्रियाओं (verbs) के मूल रूप को **धातु** कहते हैं। धातु ही संस्कृत शब्दों के निर्माण के लिए मूल तत्त्व (Basic Material) है। इनकी संख्या लगभग 3356 है। धातुओं के साथ उपसर्ग, प्रत्यय मिलकर तथा सामासिक क्रियाओं के द्वारा सभी शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि) का निर्माण होता हैं। अन्य अर्थों में कहा जाए तो संस्कृत का लगभग प्रत्येक शब्द अन्ततः धातुओं के रूप में तोड़ा जा सकता है।

'धातु' शब्द स्वयं '**धा**' में '**तिन्**' प्रत्यय जोड़ने से बना है।

व्याकरणशास्त्र में पाँच अंगों की परम्परा दिखती है। इसीलिए '**पञ्चाङ्ग व्याकरण**' भी प्रसिद्ध है। पाँच अंग ये हैं— सूत्रपाठ, **धातुपाठ**, गणपाठ, उणादिपाठ तथा लिंगानुशासन। इन पाँच अंगों में से धातुपाठ अति महत्त्वपूर्ण है। प्रायः सभी शब्दों की व्युत्पत्ति धातुओं से की जाती है। कहा गया है — **सर्वं च नाम धातुजमाह**।

भ्वादिगण का प्रथम गण है तथा परस्मैपदी धातु है। सभी भ्वादिगण धातु के धातु रूप इसी प्रकार बनते हैं, जैसे— अच्, अस्, गम्, घ्रा, जि, पठ्, भज्, यज्, लिख्, वद्, स्था, सेव्, श्रु, सद् आदि।

धातुओं से निष्पन्न शब्द

1. कृ (करना)
   - **संज्ञा** : कार्य, उपकरण, कर्मन्, प्रक्रिया
   - **विशेषण** : कर्मठ, सक्रिय, उपकारी
   - **क्रिया** : करोति, नमस्कुरु, प्रतिकरोमि, कुर्मः
2. भू (होना)
   - **संज्ञा** : भवन, प्रभाव, वैभव, भूत, उद्भव, भविष्य
   - **विशेषण** : भावी, भावुक, भावात्मक, भौगोलिक
   - **क्रिया** : भविष्यति, अभवं, अभव, संभवेत्, संभवामि
3. गम् (जाना)
   - **संज्ञा** : गति, आगन्तुक, जगत्, संगम, प्रगति, अन्तर्गामित्व, गन्ता
   - **विशेषण** : गमनशील, सर्वगत, निर्गामी, सुगम
   - **क्रिया** : संगच्छ, निर्गच्छति, उपगमिष्यामि

धातुओं को **सकर्मक** और **अकर्मक** इन दो भागों में विभाजित किया गया है। जिस धातु अर्थात् क्रिया के साथ कर्म लगा हो वह सकर्मक और जिनके साथ कर्म न लगा हो वह अकर्मक कहलाती है। जैसे—**रामः पठति**। राम पढ़ता है। यहाँ प्रश्न उत्पन्न होगा कि राम क्या पढ़ता है? **रामः रामायणं पठति।** पठति क्रिया के साथ **रामायणं** यह कर्म है। अतः यह पठ् धातु सकर्मक है। इसी प्रकार **रामः शेते** (राम सोता है) में राम क्या सोता है? यह प्रश्न समाप्त हो जाता है कि राम क्या सोता है? कर्म लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

धातुओं का वर्गीकरण

पाणिनीय धातुपाठ में धातुओं के निम्नलिखित वर्ग हैं—

भ्वादि (भू+आदि)	अदादि (अद्+आदि)	जुहोत्यादि	दिवादि	स्वादि
तुदादि	रुधादि	तनादि	क्र्यादि (क्री+आदि)	चुरादि

परस्मैपदी धातुएँ :—जिन क्रियाओं का फल कर्ता को छोड़कर अन्य (कर्म) को मिलता है, उन्हें परस्मैपदी धातु कहते हैं। **यथा**—गम्, पठ्।

आत्मनेपदी धातुएँ :— जिन क्रियाओं का फल सीधा कर्ता पर पड़ता हो उन्हें आत्मनेपदी कहते हैं। जो धातु अनुदात्तेत् अर्थात् अनुदात्त की इत्संज्ञा वाला हो और जो धातु ङित् हो, ऐसे धातुओं से आत्मनेपद का प्रयोग करना चाहिए। **यथा**—लभ् (प्राप्त करना), नी(ले जाना)।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्

उभयपद :—जो क्रियाएँ परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों प्रकार के रूप रखती है, वे उभयपदी कहलाती है। **यथा**—कृ, नी इत्यादि। जैसे पाण्डु के सभी पुत्रों को 'पाण्डव' कहकर काम चला लिया जाता है वैसे ही परस्मैपद और आत्मनेपद कहकर नौ-नौ प्रत्ययों का नाम ले लिया जाता है, अलग-अलग अट्ठारहों प्रत्यय नहीं गिनाना पड़ता।

भू-भव् धातु (होना)

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवत:	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथ:	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवाव:	भवाम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभव:	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

5. विधिलिङ् लकार
(चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

अस् (होना)

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्त:	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थ:	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्व:	स्म:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसी:	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि.सत्तात्	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

5. विधिलिङ् लकार
(चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्यु:
मध्यम पुरुष	स्या:	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

दृश्-पश्य धातु का अर्थ है 'देखना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्य:	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु:
मध्यम पुरुष	पश्ये:	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

गम्-गच्छ् धातु का अर्थ है 'जाना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु:
मध्यम पुरुष	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

पच् धातु का अर्थ है 'पकाना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचत:	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथ:	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचाव:	पचाम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथ:	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्याव:	पक्ष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपच:	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयु:
मध्यम पुरुष	पचे:	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

अध्याय 10

प्रत्यय

प्रत्यय

वे शब्द होते हैं जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। **यथा—** भू + क्त = भूतः, भू + तव्य = भवितव्य, भू + तुमुन् = भवितुम् आदि।

प्रत्यय के प्रकार या भेद

संस्कृत में प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं— सुप्, तिङ्, कृत्, तद्धित् और स्त्री—

1. **सुप् प्रत्यय (सुबन्त प्रकरण)**- ये संज्ञा पदों में नाम विभक्ति वचन आदि के बारे में बताते हैं।
2. **तिङ् प्रत्यय (तिङ्न्त प्रकरण)**- ये धातुओं के काल पुरुष आदि के बारे में बताते हैं।
3. **कृत् प्रत्यय**- ये धातुओं के नामपद (संज्ञापद) बनाते हैं।
4. **तद्धित् प्रत्यय**- ये नामपदों के विभिन्न रूपों के प्रयोग बताते हैं।
5. **स्त्री प्रत्यय**- ये नामपदों के स्त्रीवाचक रूप बताते हैं।

1. क्त (तु) — भूतकालिक क्रिया और विशेषण शब्द बनाने के लिए 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

- 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में किया जाता है।
- इसका प्रयोग करते समय कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति रखी जाती है।
- 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग कर्म के लिङ्ग, विभक्ति और वचनों के अनुसार होता है।
- जिस प्रत्यय को धातु से जोड़कर संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय बनाया जाता है, उसको क्त प्रत्यय कहते हैं।
- क्तवतू निष्ठा (1.1.26), इति-निष्ठा (3.2.102)

  इसका अर्थ यह है कि-क्त और क्तवतु इन दोनों प्रत्ययों को **निष्ठा** कहते हैं (यानी इन दोनों प्रत्ययों को मिलाकर निष्ठा ऐसा नाम दिया गया है)। वे निष्ठा नाम के दो प्रत्यय (क्त और क्तवतु) **भूतकाल** में होते हैं।
- कर्ता के लिङ्ग और वचन का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता; यथा—
  - रामेण पुस्तकं पठितम्।
  - मया पुस्तिका पठिता।
  - सीतया ग्रन्थः पठितः।

धातु	प्रत्यय	प्रत्यय युक्त शब्द	अर्थ	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
आ + गम्	क्त	आगत	आया	आगतः	आगता	आगतम्
आ + दिश्	क्त	आदिष्ट	आदेश दिया	आदिष्टः	आदिष्टा	आदिष्टम्
आ + नी	क्त	आनीत	लाया	आनीतः	आनीता	आनीतम्
आ + रुह्	क्त	आरूढ़	चढ़ा	आरूढः	आरूढा	आरूढम्
इष्	क्त	इष्ट	इच्छा की	इष्टः	इष्टा	इष्टम्
कृ	क्त	कृत	किया	कृतः	कृता	कृतम्
पठ्	क्त	पठित	पढ़ा	पठितः	पठिता	पठितम्
वच्	क्त	उक्त	कहा	उक्तः	उक्ता	उक्तम्
श्रु	क्त	श्रुत	सुना	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्
पच्	क्त	पक्व	पका हुआ	पक्वः	पक्वा	पक्वम्

धातु	प्रत्यय	प्रत्यय युक्त शब्द	अर्थ	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पठ्	क्त	पठित	पढ़ा	पठितः	पठिता	पठितम्
पा	क्त	पीत	पिया	पीतः	पीता	पीतम्

2. क्तवतु – इस प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल में होता है।

गच्छति

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
पु०	गतवान्	गतवन्तौ	गतवन्तः
स्त्री०	गतवती	गतवन्तौ	गतवत्यः
नपु०	गतवत्	गतवती	गतवन्ति

यथा–

पुल्लिङ्ग

नरेशः पुस्तकं पठितवान्। नरेश ने पुस्तक पढ़ी।

स्त्रीलिङ्ग

माला गृहं गतवती। माला घर गई।

रमा कार्यं कृतवती। रमा ने कार्य किया।

नपुंसकलिङ्ग

मनः शान्तं भवितवत्। मन शान्त हुआ।

द्विवचन में प्रयोग

छात्रौ ग्रन्थानि पठितवन्तौ। दो छात्रों ने ग्रन्थों को पढ़ा।

आवाम् नगरं गतवन्तौ। हम दोनों नगर में गए।

बहुवचन में प्रयोग

छात्राः ग्रन्थानि पठितवन्तः। छात्रों ने ग्रन्थ पढ़े।

वयं कार्याणि कृतवन्तः। हम सबने कार्य किया।

भरद्वाजः हिमालयं गच्छति। भरद्वाजः हिमालयं गतवान्।

इन्द्रः आयुर्वेदम् उपदिशति। इन्द्रः आयुर्वेदम् उपदिष्टवान्।

सः युद्धं करोति। सः युद्धं कृतवान्।

ते रुद्रं प्रर्थयन्ति। ते रुद्रं प्रार्थितवन्तः।

1. **अहं गृहं गतवान्।**
   मैं घर को गया।
2. **रामेण इदं कार्यं कृतम्।**
   राम के द्वारा यह कार्य किया गया।
3. **बालकः भोजनं भुक्तवान्।**
   बालक ने भोजन खाया।
4. **शिष्येण लेखः लिखितः।**
   शिष्य के द्वारा लेख लिखा गया।
5. **तत्र एकं पत्रं पतितवान्।**
   वहाँ एक पत्ता गिरा।
6. **रामः रावणं हतवान्।**
   राम ने रावण को मारा।

3. त्वा (त्वा) — जब किसी क्रिया के हो जाने पर दूसरी क्रिया आरम्भ होती है, तब सम्पन्न हुई क्रिया को, '**पूर्वकालिक क्रिया**' कहते हैं। हिन्दी में इसका बोध करके लगाकर होता है। पूर्वकालिक क्रिया का बोध कराने के लिए संस्कृत में धातु के आगे त्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ा जाता है। त्त्वा (त्वा) प्रत्ययान्त धातुओं के रूप नहीं चलते।

'त्त्वा' (त्वा) प्रत्यय लगाकर धातुओं के रूप

धातु	कृदन्त
कृ + त्त्वा	कृत्वा
आप् + त्त्वा	आप्त्वा
क्री + त्त्वा	क्रीत्वा
दा + त्त्वा	दत्त्वा
नम् + त्त्वा	नत्वा
श्रु + त्त्वा	श्रुत्वा
गम् + त्त्वा	गत्वा
पा + त्त्वा	पीत्वा
हन् + त्त्वा	हत्वा
लिख् + त्त्वा	लिखित्वा
खाद् + त्त्वा	खादित्वा
स्था + त्त्वा	स्थित्वा

तव्यत् (तव्य), अनीयर् (अनीय) — सामान्यतः क्रिया में विधिलिङ् लकार चाहिए, के अर्थ में तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इन शब्दों का प्रयोग सकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातुओं के भाववाच्य में होता है। कर्तृवाच्य में इनका प्रयोग नहीं होता। ये शब्द योग्य के अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं; यथा—

- पठ् + तव्यत् (तव्य) = पठितव्य (पढ़नी चाहिए)।
- पठ् + अनीयर् (अनीय) = पठनीय (पढ़नी चाहिए या पढ़ने योग्य)।
- मया पुस्तकं पठितव्यम् (पठनीयम्) = मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जानी चाहिए (या, मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए)।

इन प्रत्ययों से बने शब्दों का प्रयोग लिंग, वचन और विभक्ति के अनुसार किया जाता है। इनके रूप पुंल्लिङ्ग में 'बालक', नपुंसकलिङ्ग में 'फल और स्त्रीलिङ्ग में 'बाला' के समान बनेंगे।

अध्याय 11

विशेषण-विशेष्य

विशेषण-विशेष्य

जिस शब्द से संज्ञा पद की विशेषता प्रकट होती है, वह शब्द **विशेषण** कहलाता है। जिस शब्द की विशेषता प्रकट होती है, वह **विशेष्य** होता है। विशेषण विशेष्य के अनुसार ही गुणों वाला होता है। अर्थात् विशेष्य का जो लिंग, वचन और विभक्ति होती है, विशेषण का भी वही लिंग, वचन और विभक्ति होती है। कहा भी है।

यल्लिङ्ग यद्वचनं या च विभक्तिः विशेष्यस्य।
तल्लिङ्ग तद्वचनं सा च विभक्तिः विशेषणस्य।।

(अर्थात् जो लिंग, जो वचन और जो विभक्ति विशेष्य की होती है वही लिंग, वही वचन और वही विभक्ति विशेषण की होती है।)

उदाहरण— जैसे बहुत-सी गोमाताएँ किसी स्थान पर बैठी हुई हैं और आपसे कहा जाए कि "काली गाय को ले आओ" तब आप उन सभी गोमाताओं में से केवल काली गोमाता को ही लायेंगे। अब यहाँ जो "काली" शब्द है वह गोमाता की विशेषता बता रहा है। इसी प्रकार कहीं बहुत से बालक बैठे हों और कोई कहे कि "मैं बालक को फल दूँगा" तो सभी बालक रसगुल्ला लेने आ जाएँगे, किन्तु यदि वह कहे कि "मैं पीले कुर्ते वाले बालक को फल दूँगा" तब 'पीले कुर्ते वाला' विशेषण हो गया, इस विशेषण ने उस बालक को अन्य बालकों से अलग कर दिया।

यथा— "कपिला गाय" कहा जाए तो '**कपिला**' **विशेषण** है और '**गाय**' **विशेष्य** है।

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
सुन्दर : बालकः	सुन्दरी बालिका	सुन्दरं वनम्
महान् ग्रन्थः	महती नाटिका	महत् नगरम्
लघुः कायः	लघ्वी कथा	लघु काव्यम्
श्रेष्ठतमः पुरुषः	श्रेष्ठतमा नारी	श्रेष्ठतमं पुष्पम्

विशेषण के भेद—विशेषण मुख्यतः छः प्रकार के होते हैं—

1. गुणवाचक विशेषण—किसी वस्तु के गुण तथा तुलनावाचक शब्द गुणवाचक विशेषण होते हैं। अथवा जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। गुण का तात्पर्य केवल अच्छी विशेषताओं से नहीं है, अपितु यहाँ गुण का तात्पर्य है किसी भी वस्तु या व्यक्ति की विशेष स्थिति, विशेष दया, विशेष दिशा, रंग, गंध, काल, स्थान, आकार, रूप, स्वाद, बुराई, अच्छाई, आदि। **यथा**—सुन्दरः बालकः। रम्यतरः, कृष्णः आदि।

- **गुण-दोष**- दयालुः, क्रूरः, शोभनः, दुष्टः, सरलः, परिश्रमी, सत्यनिष्ठः, सुन्दरः, मनोहरः, साधुः, आदि।
- **रंग**- श्वेतः, कृष्णः, रक्तः, पीतः, हरितः, नीलः आदि।
- **आकार**- उन्नतः, विशालः, ज्येष्ठः, कनिष्ठः, दीर्घः, लघुः, स्थूलः, कृषः आदि।
- **स्वाद**- मधुरः, अम्लः, कटुः, तिक्तः, लावणः, कषायः, आदि।
- **कालबोधक**- प्राचीनः, नवीनः, पुरातनः, नूतनः, क्षणिकः, दीर्घकालिकः आदि।
- **स्थान बोधक**- भारतीयः, पाश्चात्यः, वैदेशिकः, पर्वतीयः आदि।
- **अवस्था बोधक**- आर्द्रः, शुष्कः, ज्वलितः, पक्वः आदि।
- **दशा बोधक**- स्वस्थः, अस्वस्थः, रुग्णः, दुःखितः, सुखी आदि।
- **स्पर्श—बोधक**- कठोरः, कोमलः आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण— जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या सम्बन्धी विशेषता का बोध कराते हैं, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—

1. **निश्चित संख्या वाचकः** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या सम्बन्धी विशेषता का बोध कराते हैं, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे— एकः, चत्वारः, दश, एकः छात्रः, पञ्च बालिकाः आदि। वाक्यों में प्रयोग—
   - कक्षायां विंशतिः छात्राः सन्ति।

Paper - II Part - A संस्कृत

1. निरुक्ति तथा पर्याय	129
2. परिभाषापदानि	134
3. अष्टाङ्गहृदयम्	141
अध्याय 1 : मङ्गलाचरण	141
अध्याय 2 : दिनचर्या	156
अध्याय 4 : रोगानुत्पादनीय	169
अध्याय 11 : दोषादिविज्ञानीय	180
अध्याय 12 : दोषभेदीय	194
अध्याय 13 : दोषोपक्रमणीय	215
अध्याय 14 : द्विविधोपक्रमणीय	227
4. महत्त्वपूर्ण आयुर्वेद सुभाषित	238
5. पञ्चतन्त्रम्	248

अध्याय
1

निरुक्ति तथा पर्याय

A. पदानि

A-1 आयु

आ-उपसर्ग + युजिर योगे धातु से आयु शब्द निष्पन्न हुआ है।

"आसमन्नात चेतनया युनक्ति इति आयुः"

"आसमन्नात चेतनां युज्यते समाधियते अनेन इति आयुः"

अर्थात् प्रारम्भ से अन्त तक जो चेतना धातु की समाधि (आत्मज्ञान) का लाभ कराये, वो आयु है।

"आयु इति जीवित कालः।"

मनुष्य के जीवित काल को आयु कहा जाता है।

पर्यायः—महर्षि चरक के अनुसार- इन्द्रिय, शरीर, मन और आत्मा के संयोग को आयु कहते हैं। धारि, जीवित, नित्ययोग, अनुबंध और चेतना शक्ति का होना ये आयु के पर्याय हैं।

शरीरेन्द्रियसत्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्।
नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्य्यायैरायुरुच्यते।। (च.सू. 1.42)

अर्थात्- शरीर, इन्द्रिय, मन एवं आत्मा के संयोग का नाम ही "आयु" है।

पर्याय—

धारि—धारयति शरीरं पूतितां गन्तुं न ददाति इति जीवितम्।

जिवितम्—जीवयति प्राणान् धारयति इति जीवितम्। प्राण को धारण करता है।

नित्यग—नित्यं शरीरस्य क्षणिकत्वेन् गच्छतीति नित्यगः। प्रतिदिन आयु आती- जाती रहती है।

अनुबन्ध—अनुबध्नाति आयुः अपरापरशरीरादिसंयोग रुपतया इति अनुबन्धः। पर-अपर शरीर से या प्राण से सदा लगा रहता है।

A-2 शरीर

निरुक्ति— शृ+ईरन् **शीर्यते इति शरीरम्।**

शृणाति शीर्यते वा। शृ हिंसायाम्।

- शरीरं शृणातेः शम्नातेर्वा (यास्क) के अनुसार हिंसार्थक "शृ" तथा अशम (विनाश) अर्थ की "शम्" धातु से शरीर शब्द बनता है।

पर्याय— गात्रम्, वपुः, संहन, शरीर, वर्ष्मन, विग्रहः, कायः, देहः, मूर्तिः, तनुः, तनूः।

विशेष—शरीरमिति कस्मात् अग्नयो ह्यात्र श्रयन्ते —ज्ञानाग्नि-दर्शनाग्निः कोष्ठाग्निरिति। (गर्भोपनिषद्)

के अनुसार ज्ञानाग्नि, दर्शानाग्नि एवं कोष्ठाग्नि का अधिष्ठान होने के कारण ही इसे शरीर कहते हैं। कोष्ठाग्नि का कार्य ग्रहण किए गए द्रव्यों का पाचन दर्शाग्नि का कार्य रूप का दर्शन करना एवं ज्ञानाग्नि का कार्य शुभ एवं अशुभ कार्यों का सम्पादन करना है।

A-3 मन

निरुक्ति मन + असुन्, मन्यते ज्ञायते बुध्यते अनेन इति मनः।

जिसके द्वारा कुछ ज्ञात होता है,उसे मन कहते हैं।

"मननात् मनः" मनन करने की क्षमता के कारण इसे मन कहा जाता है।

पर्याय— चित्तम्, चित्त, हृदय, चेतः, छत् तथा मानस।

A-4 अग्नि

अग्नि शब्द "अगि गतौ" (भ्वादि. 5.2) धातु से बना है। गति के तीन अर्थ हैंः—ज्ञान, गमन और प्राप्ति। इस प्रकार विश्व में जहाँ भी ज्ञान, गति, ज्योति, प्रकाश, प्रगति और प्राप्ति है, वह सब अग्नि का ही प्रताप है।

निरुक्ति—आचार्य यास्क ने अग्नि की पाँच प्रकार से निरुक्ति बताई हैः-

1. "**अग्रणीर्भवतीति अग्निः।**" मनुष्य के सभी कार्यों में अग्नि अग्रणी होती है।
2. "**अयं यज्ञेषु प्रणीयते।**" यज्ञ में सर्वप्रथम अग्निदेव का ही आह्वान किया जाता है।

अध्याय 2

परिभाषापदानि

परिभाषापदानि

A-1 आयुर्वेद

आयुस्मिन् विद्यतेऽनेन वा आयुर्विन्दतीत्यायुर्वेद।

(सु. सू. 1/23)

आयु के हिताहित का विचार जिसमें हो, तथा दीर्घ आयु की प्राप्ति जिससे हो, उसे **आयुर्वेद** कहते हैं।

हिताहितं सुखं दुखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।। (च. सू. 1/41)

जिस शास्त्र में हित अहि, सुख-दुःख इन चार प्रकार की आयु का वर्णन किया गया हो, आयु के लिए किस तरह का आहार हितकर या अहितकर है, इसका वर्णन किया गया हो, आयु का मान बताया हो। इन सभी विषयों का जहाँ वर्णन किया गया है उसे **आयुर्वेद** कहते हैं।

आयुर्वेदयति बोधयति इति आयुर्वेदः।

अर्थात् जो शास्त्र (विज्ञान) आयु (जीवन) का ज्ञान कराता है उसे **आयुर्वेद** कहते हैं।

A-2 पञ्चमहाभूतानि

महाभूतानि खं यापुरिया क्षितिस्तथा।
शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धश्च तद्गुणाः।।

(च. शा. 1/21)।

आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये सभी पञ्चमहाभूत हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये क्रमशः स्वाभाविक गुण हैं।

तत्र शरीरं नाम चेतनाधिष्ठानभूतं महाभूतविकार समुदायात्मकं समयोगावहि। (च. शा. 6/4)

चेतना का अधिष्ठान और पञ्चमहाभूतरूपी विकारों का समुदाय **शरीर** कहलाता है। यह शरीर समायोगवाही होता है, अर्थात् सप्त धातु तीन दोष एवं मलों के समावस्था में रहने पर ही गति करता है।

A-3 त्रिगुणम्

त्रयाणां सत्त्वरजस्तमसां गुणानां समाहारः।

तीन गुणों का समूह त्रिगुण कहलाता है।

रजस्तमाश्चाभिभूय सत्वं भवति भारतः।
रजः सत्यं तमश्चैव तमः सत्यं रजस्वथा।। (गीता 14/10)

इस सृष्टि में तीन प्रकार के मानस या स्वभाव वाले पुरुषों का वर्णन किया गया है जो सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण होते हैं। अन्य द्रव्यों के समान मन को भी **त्रिगुणी** कहा गया है।

A-4 दोषा

दूषयन्ति मनः शरीरं चेतिदोषाः।

मन को, शरीर को दूषित करने के कारण इन्हें दोष कहते हैं।

नित्याः प्राण देहे वातपित्तकस्यस्त्रयः।
विकृताः प्रकृतिस्वापतिः। (च. सू. 18/45)

तात्पर्य यह है कि वात, पित्त एवं श्लेष्मा देह को प्राकृतावस्था में रहकर धारण करते हैं तथा विकृतावस्था में नाश करते हैं। ये वातादि दोष अपने-अपने स्थान में रहते हुए गति, ऊष्मा एवं स्निग्धता उत्पन्न कर शरीर की उत्पत्ति, पोषण एवं धारण के प्रति उत्तरदायी होते हैं, और जब विकृत होते हैं तो धातु एवं मलों को दूषित कर शरीर में रोग उत्पन्न करते हैं। इस कारण इन्हें 'दोष' नाम से जाना जाता है।

A-5 मला

मृज्यते शोध्यते इति मलः।

तात्पर्य यह है कि जो शरीर को निर्मल एवं शोधित करे, उसे **'मल'** कहते हैं।

जो मल स्वरूप हैं तथा अधिक समय तक शरीर में रुकने पर शरीर को मलिन कर देते हैं, वे **मल** कहलाते हैं।

वातपित्त कफा ज्ञेया मलिनीकरणन्मलाः।

(शार्ङ्गधर संहिता/पूर्व खण्ड 5/42)

अध्याय 3

अष्टाङ्गहृदयम्

आयुष्कामीय अध्याय 1

मङ्गलाचरण

रागादिरोगान् सततानुषक्तानशेषकायप्रसृतानशेषान्।
औत्सुक्यमोहारतिदाञ्जघान योऽपूर्ववैद्याय नमोऽस्तु तस्मै।।1।।

❖ **पदच्छेद**-राग-आदि-रोगान्, सतत-अनुषक्तान्, अशेष-काय-प्रसृतान्, अशेषान्। औत्सुक्य-मोह-अरतिदान्, जघान, यः, अपूर्व-वैद्याय, नमः, अस्तु, तस्मै।

❖ **अन्वय**- यः अशेषकायप्रसृतान्, सततानुषक्तान्, औत्सुक्य-मोहारतिदान, अशेषान् रागादिरोगान् जघान, तस्मै अपूर्ववैद्याय नमः अस्तु।

❖ **शब्दार्थ- यः** = जिन्होंने, **अशेषकायप्रसृतान्** = (सभी प्राणियों के) सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त, **सततानुषक्तान्** = निरन्तर संलग्न, **औत्सुक्यमोहारतिदान्** = उत्सुकता (विषयों के प्रति आसक्ति), मोह (बुद्धि - विभ्रम) एवं अरति (बेचैनी) को उत्पन्न करने वाले, **अशेषान्समस्त रागादिरोगान्** = राग आदि रोगों को, **जघान** = नष्ट किया, **तस्मै** = उन **अपूर्ववैद्याय** = अपूर्व वैद्य (मेरे से पूर्व के सभी वैद्य) के लिए **नमः** = (मेरा) प्रणाम, अस्तु = हो।

❖ **भावार्थ**- जिन्होंने सभी प्राणियों के सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त और निरन्तर संलग्न रहने वाले तथा उत्सुकता (विषयों के प्रति आसक्ति), मोह (बुद्धि - विभ्रम) एवं अरति (बेचैनी) को उत्पन्न करने वाले समस्त राग आदि रोगों को नष्ट किया उन अपूर्व वैद्य (अर्थात् भगवान बुद्ध) को मैं (वाग्भट) प्रणाम करता हूँ।

❖ **व्याकरणांशाः-**

रागादिरोगान्-राग + आदि-रोगान् (सवर्णदीर्घसन्धिः)

रागादयः -रागः आदिः येषां ते = (बहुव्रीहिः),

सततानुषक्तान् -सतत + अनुषक्तान् (सवर्णदीर्घसन्धिः)

न विद्यते शेषो येषां ते = अशेषाः (नञ्-बहुव्रीहिः),

औत्सुक्यमोहारतयः (इतरेतरद्वन्द्वः), -औत्सुक्यं च मोहश्च अरतिश्च

योऽपूर्ववैद्याय- यः + अपूर्ववैद्याय (विसर्गसन्धिः), यो + अपूर्ववैद्याय (पूर्वरूपसन्धिः)

नमोऽस्तु-नमः + अस्तु (विसर्गसन्धिः), नमो + अस्तु (पूर्वरूपसन्धिः)

अथात आयुष्कामीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः।।

❖ **पदच्छेदः**- अथ, अतः, आयुष्कामीयम्, अध्यायम्, व्याख्यास्यामः। इति, ह, स्म, आहुः, आत्रेयादयः, महर्षयः।

❖ **अन्वय**- अथ अतः आयुष्कामीयम् अध्यायं व्याख्यास्यामः इति ह आत्रेयादयः महर्षयः आहुः स्म।

❖ **शब्दार्थ-अथ** = अब (मङ्गलसूचक), **अतः** = (मङ्गलाचरण के उपरान्त) यहाँ से, **आयुष्कामीयम्** = आयुष्कामीय, **अध्यायम्** = अध्याय का, **व्याख्यास्यामः** = उपदेश करेंगे, **इति ह** = इस प्रकार, **आत्रेयादयः** = आत्रेय आदि **महर्षयः** = महर्षियों ने, **आहुः** = कहा, **स्म** = था।

❖ **भावार्थ**- अब यहाँ से सुखी एवं स्वस्थ आयु (जीवन) की इच्छा रखने वाले पुरुषों के लिए, 'आयुष्कामीय' नामक अध्याय की व्याख्या की जायेगी, जैसा कि आत्रेय आदि महर्षियों ने कहा था।

❖ **व्याकरणांशाः**-

अथातः-अथ + अतः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

आयुषः कामः = आयुष्कामः (षष्ठीतत्पुरुषः),

अध्यायं व्याख्यास्यामः -अध्यायम् + व्याख्यास्यामः (अनुस्वारसन्धिः)

स्माहुरात्रेयादयः-स्म + आहुरात्रेयादयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

स्माहुः + आत्रेयादयः (विसर्गसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेय + आदयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेयः आदिः येषां ते (बहुव्रीहिः)

आत्रेयादयो महर्षयः-आत्रेयादयः + महर्षयः (विसर्गसन्धिः)

महर्षयः-महान्तः च ते ऋषयः च (कर्मधारयः)

आयुर्वेद का प्रयोजन

आयुः कामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम्।
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः।।2।।

- **पदच्छेदः**- आयुः, कामयमानेन, धर्म-अर्थ-सुखसाधनम्। आयुर्वेद-उपदेशेषु विधेयः, परम-आदरः
- **अन्वय**- धर्मार्थसुखसाधनम् आयुः कामयमानेन आयुर्वेदोपदेशेषु परमादरः विधेयः।
- **शब्दार्थ**- **धर्मार्थसुखसाधनम्** = धर्म, अर्थ एवं सुख के साधन स्वरूप, **आयुः** = आयु (जीवन) को **कामयमानेन** = चाहने वाले (पुरुषेण पुरुष को), **आयुर्वेदोपदेशेषु** = आयुर्वेद के उपदेशों में **परमादरः** = पूर्ण आदर, **विधेयः** = करना चाहिए।
- **भावार्थ**- धर्म, अर्थ एवं सुख (दैहिक एवं निःश्रेयस् सुख) के साधन स्वरूप आयु (जीवन) की कामना करने वाले व्यक्ति को आयुर्वेद के उपदेशों में पूर्ण आदर रखना चाहिए।
- **व्याकरणांशाः**-

धर्मार्थसुखसाधनम् -धर्मः च अर्थः च सुखं च तेषां साधनम् (षष्ठीतत्पुरुषः)

आयुर्वेदः -आयुषः वेदः - (षष्ठीतत्पुरुषः),

आयुर्वेदोपदेशाः- आयुर्वेदस्य उपदेशाः - (षष्ठीतत्पुरुषः),

परमादरः -परमः च असौ आदरः- (कर्मधारयः)

आयुर्वेदावतरण

ब्रह्मास्मृत्वाऽऽयुषो वेदं प्रजापतिमजिग्रहत्।
सोऽश्विनौ तौ सहस्राक्षं सोऽत्रिपुत्रादिकान्मुनीन्।।3।।
तेऽग्निवेशादिकांस्ते तु पृथक् तन्त्राणि तेनिरे।

- **पदच्छेदः**- ब्रह्मा स्मृत्वा, आयुषः, वेदम्, प्रजापतिम्, अजिग्रहत्। सः अश्विनी, तौ, सहस्राक्षम्, सः, अत्रिपुत्र-आदिकान्, मुनीन्।। ते, अग्निवेश आदिकान्, ते, तु. पृथक्, तन्त्राणि, तेनिरे।
- **अन्वय**- ब्रह्मा आयुषः वेदं स्मृत्वा प्रजापतिम् अजिग्रहत्, सः अश्विनौ तौ सहस्राक्षम्, सः अत्रिपुवादिकान् मुनीन्, ते अग्निवेशाविकान्, ते तु पृथक् तन्त्राणि तेनिरे।
- **शब्दार्थ**- **ब्रह्मा** = ब्रह्मा ने, **आयुष** = जीवन के, **वेदम्** = वेद को, **स्मृत्वा** = स्मरण कर, **प्रजापतिम्** = दक्ष ग्रहण कराया। **सः** = उन दक्ष प्रजापति ने, **अश्विनौ** = अश्विनी कुमारों को, **तौ** = उन (अश्विनी कुमारों ने) **सहस्राक्षम्** = इन्द्र को, **सः** = उन (इन्द्र) ने, **अत्रिपुत्रादिकान्** = अत्रिपुत्र (आत्रेय) पुनर्वसु आदि, **मुनीन्** = मुनियों को, **ते** = उन्होंने (अग्निवेश आदि महर्षियों ने)**अग्निवेशादिकान्** = अग्निवेश आदि महर्षियों को, (**अजिग्रहन्** = ग्रहण करवाया। **ते** = उन्होंने (अग्निवेश आदि महर्षियों ने), **तु** -तो, **पृथक्** = अलग-अलग, **तन्त्राणि** = आयुर्वेद के तन्त्रों को, तेनिरे = विस्तृत किया।
- **भावार्थ**- ब्रह्मा ने आयुर्वेद को स्मरण कर सर्वप्रथम दक्ष प्रजापति को ग्रहण कराया। दक्ष प्रजापति ने अश्विनी कुमारों को, अश्विनी कुमारों ने इन्द्र को, इन्द्र ने अत्रिपुत्र (आत्रेय पुनर्वसु) आदि मुनियों को और उन मुनियों ने अग्निवेश आदि ऋषियों को आयुर्वेद का उपदेश दिया। अग्निवेश आदि ऋषियों ने कालान्तर में अलग - अलग आयुर्वेद - तन्त्रों की रचना की।
- **व्याकरणांशाः**-

प्रजापतिः -प्रजानां पतिः (षष्ठीतत्पुरुषः),

वेदं प्रजापतिम्-वेदम्+ प्रजापतिम् (अनुस्वारसन्धिः)

सोऽश्विनौ- सो + अश्विनी (पूर्वरूपसन्धिः)

सहस्रम् अक्षीणि सन्ति यस्य सः = सहस्राक्षः (बहुव्रीहिः), तम्

अत्रेः पुत्रः = अत्रिपुत्रः (षष्ठीतत्पुरुषः),

अत्रिपुत्रः आदिः येषां ते = अत्रिपुत्रादिकाः (बहुव्रीहिः),

अत्रिपुत्रादिकान् -अत्रिपुत्र + आदिकान् (सवर्णदीर्घसन्धिः)

सोऽत्रिपुत्रादिकन्-सो + अत्रिपुत्रादिकान् (पूर्वरूपसन्धिः)

अग्निवेशः आदिः येषां ते अग्निवेशादिकाः (बहुव्रीहिः),

अग्निवेशादिकांस्ते -अग्निवेशादिकान् + ते (सत्वसन्धिः)

अष्टाङ्गहृदय का वैशिष्ट्य

तेभ्योऽतिविप्रकीर्णेभ्यः प्रायः सारतरोच्चयः।।4।।
क्रियतेऽष्टाङ्गहृदयं नातिसंक्षेपविस्तरम्।

- **पदच्छेदः**- तेभ्यः, अति-वि-प्रकीर्णेभ्यः, प्रायः, सारतर उच्चयः। क्रियते, अष्टाङ्गहृदयम्, न, अति-सङ्क्षेप-विस्तरम्।
- **अन्वय**-अतिविप्रकीर्णेभ्यः तेभ्यः प्रायः सारतरोच्चयः, नातिसंक्षेपविस्तरम् अष्टाङ्गहृदयं क्रियते।
- **शब्दार्थ**- **अतिविप्रकीर्णेभ्यः** = अति विस्तृत, **तेभ्यः** = (अग्निवेश आदि द्वारा रचे गये)उन तन्त्रों से, **प्रायः** = प्रायः,

❖ **व्याकरणांशा:-**

अत उत्तरम् - अत: + उत्तरम् (विसर्गसन्धि:)

उन्मादेऽथ - उन्मादे + अथ (पूर्वरूपसन्धि:)

त्रयो द्वी -त्रय: + द्वी (विसर्गसन्धि:)

बालानाम् उपचार:- बालोपचार: (षष्ठीतत्पुरुष:)

तेषां व्याधि: = तद्व्याधि: (षष्ठीतत्पुरुष:),

स्मृतीनां भ्रंश: स्मृतिभ्रंश: (षष्ठीतत्पुरुष:),

दृक् च तम: च लिङ्गनाश: च - दृक्तमोलिङ्गनाशा: (इतरेतरद्वन्द्व:),

कर्णौ च नासा च मुखं च शिर: च व्रण: च-कर्णनासामुख-शिरोव्रणम् (समाहारद्वन्द्व:),

ग्रन्थि: आदि: यस्य स: = ग्रन्थ्यादि: (बहुव्रीहि:),

ग्रन्थ्यादौ - ग्रन्थि + आदौ (यण् सन्धि:)

क्षुद्रा: च ते रोगा: = क्षुद्ररोगा: (कर्मधारय:),

अध्याय-2 दिनचर्या

अथातो दिनचर्याध्यायं व्याख्यास्याम:।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षय:।।

❖ **पदच्छेद**- अथ अत: दिनचर्या अध्यायम् व्याख्यास्याम: इति ह स्म आहु: आत्रेय आदय: महर्षय:।

❖ **अन्वय**- अत: दिनचर्याध्यायं व्याख्यास्याम: इति ह आत्रेयादय: महर्षय: आहु: स्म।

❖ **शब्दार्थ- अथ** = अब, **अत:** = यहाँ से, **दिनचर्याध्यायम्** = दिनचर्या अध्याय का **व्याख्यास्याम:** = उपदेश करेंगे, **इति ह** = इस प्रकार, **आत्रेयादय:** = आत्रेय आदि, **महर्षय:** = महर्षियों ने **आहु:** = कहा, **स्म** = था।

❖ **भावार्थ**- अब यहाँ से 'दिनचर्या' नामक अध्याय की व्याख्या की जायेगी, जैसा कि आत्रेय आदि महर्षियों ने कहा था।

❖ **व्याकरणांशा:-**

अथात:-अथ + अत: (सवर्णदीर्घसन्धि:)

दिनचर्या = दिनस्य चर्या (षष्ठीतत्पुरुष:),

अध्यायं व्याख्यास्याम: -अध्यायम् + व्याख्यास्याम: (अनुस्वारसन्धि:)

स्माहुरात्रेयादय:-स्म + आहुरात्रेयादय: (सवर्णदीर्घसन्धि:)

स्माहु: + आत्रेयादय: (विसर्गसन्धि:)

आत्रेयादय:-आत्रेय + आदय: (सवर्णदीर्घसन्धि:)

आत्रेयादय:-आत्रेय: आदि: येषां ते (बहुव्रीहि:)

आत्रेयादयो महर्षय:-आत्रेयादय: + महर्षय: (विसर्गसन्धि:)

महर्षय:-महान्त: च ते ऋषय: च (कर्मधारय:)

ब्राह्ममुहूर्त-जागरण

ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुष:।

❖ **पदच्छेद**- ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत् स्वस्थ: रक्षार्थम् आयुष:।

❖ **अन्वय**- स्वस्थ: आयुष: रक्षार्थं ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत्।

❖ **शब्दार्थ-स्वस्थ:**= स्वस्थ व्यक्ति, **आयुष:** = जीवन की, **रक्षार्थम्** = रक्षा के लिए, **ब्राह्मे मुहूर्ते** = ब्राह्म मुहूर्त में, **उत्तिष्ठेत्** = उठे।

❖ **भावार्थ**-अपनी जीवन रक्षा के लिए स्वस्थ व्यक्ति को प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त में उठना चाहिए।

❖ **व्याकरणांशा:-**

स्वस्थो रक्षार्थम् - स्वस्थ: + रक्षार्थम् (विसर्गसन्धि:)

शरीरचिन्ताम् - शरीरस्य चिन्ता (षष्ठीतत्पुरुष:) ताम्

कृतशौचविधि:- कृत: शौचविधि: येन स: (बहुव्रीहि:)

कृतशौचविधिस्तत:- कृतशौचविधि: + तत: (विसर्गसन्धि:)

दातौन एवं दन्तधावन

शरीरचिन्तां निर्वतर्त्य कृतशौचविधिस्तत:।।1।।
अर्कन्यग्रोधखदिरकरञ्जककुभादिजम्।
प्रातर्भुक्त्वा च मृद्वग्रं कषायकटुतिक्तकम्।।2।।
कनीन्यग्रसमस्थौल्यं प्रगुणं द्वादशाङ्गुलम्।
भक्षयेद् दन्तपवनं दन्तमांसान्यबाधयन्।।3।।

❖ **पदच्छेद**- शरीरचिन्तां निर्वर्त्य कृतशौचविधि: तत:। अर्क न्यग्रोध खदिर करञ्ज ककुभ आदिजम्। प्रात: भुक्त्वा च मृदू अग्रं कषाय कटु तिक्तकम्।। कनीनी अग्रसमस्थौल्यं प्रगुणं द्वादश अङ्गुलम्। भक्षयेदत् दन्तपवनं दन्तमांसानि अबाधयन्।।3।।

❖ **अन्वय**-तत: शरीरचिन्तां निर्वर्त्य कृतशौचविधि: प्रात: भुक्त्वा च अर्कन्यग्रोधखदिर-करञ्जककुभजम्, कषायकटुतिक्तकम्, कनीन्यग्रसमस्थौल्यम्, द्वादशाङ्ग लम्, प्रगुणम्, मृद्वग्रम्, दन्तपवनं दन्तमांसानि अबाधयन् भक्षयेत्।

❖ **शब्दार्थ- शरीरचिन्ताम्** = शरीर की चिन्ता को, **निर्वर्त्य** = निवारित कर, **कृतशौचविधि:** = मल-विसर्जन, दन्तधावन आदि स्वच्छता कर्मों के, **तत:** = उपरान्त,

❖ **व्याकरणांशा:-**

भवत्येवं- भवति + एवं (यण संधि)

दिनचर्या तथा सद्वृत पालन से लाभ

इत्याचार: समासेन, यं प्राप्नोति समाचरन्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं यशो लोकांश्च शाश्वतान्।।48।।

❖ **पदच्छेद:-** इति आचार समासेन, यं प्राप्नोति समाचरन्। आयु:, आरोग्यम्, ऐश्वर्यम्, यश: लोकांन् च शाश्वतान्।।

❖ **अन्वय-** इति समासेन आचार: (उक्त:) यं समाचरन् आयु:, आरोग्यम्, ऐश्वर्यम्, यश:, शाश्वतान् च लोकान् प्राप्नोति।

❖ **शब्दार्थ- इति** = इस प्रकार, **समासेन** = संक्षेप में, **आचार:** = आचार (सद्वृत्त) **(उक्त:** - कहा गया है।) **यम्** = जिसे, **समाचरन्** = उचित प्रकार से करता हुआ पुरुष, **आयु:** = आयु, **आरोग्यम्** = आरोग्य, **ऐश्वर्यम्** = ऐश्वर्य, **यश:** = यश, **शाश्वतान्** = एवं सनातन, **लोकान्** = लोकों को प्राप्नोति प्राप्त करता है।

❖ **भावार्थ-** इस प्रकार संक्षेप में दिनचर्या एवं सद्वृत्त का वर्णन कर दिया गया है, जिसका पालन करने से मनुष्य दीर्घायु, आरोग्य, ऐश्वर्य, यश एवं सनातन लोक (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

❖ **व्याकरणांशा:-**

आयुरारोग्यमैश्वर्यं - आयु: + आरोग्यमैश्वर्यम् (विसर्गसन्धि:)

यशो लोकान्- यश: + लोकान् (विसर्गसन्धि)

इत्याचार:-इति + आचार: (यण् सन्धि:)

अध्याय-4 : रोगानुत्पादनीय

अथातो रोगानुत्पादनीयाध्यायं व्याख्यास्याम:।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षय:।।

❖ **पदच्छेद:-** अथ, अत:, रोगानुत्पादनीय अध्यायम्, व्याख्यास्याम:। इति, ह, स्म, आहु:, आत्रेयादय:, महर्षय:।

❖ **अन्वय-** अथ अत: रोगानुत्पादनीयाध्याय व्याख्यास्याम: इति ह आत्रेयादय: महर्षय: आहु: स्म।

❖ **शब्दार्थ- अथ** = अब, **अत:** = यहाँ से, **रोगानुत्पादनीयाध्यायम्** = रोगानुत्पादनीय अध्याय का **व्याख्यास्याम:** = उपदेश करेंगे, **इति ह** = इस प्रकार **आत्रेयादय:** = आत्रेय आदि, **महर्षय:** = महर्षियों ने **आहु:** = कहा, **स्म** = था।

❖ **भावार्थ-** अब यहाँ से 'रोगानुत्पादनीय' नामक अध्याय की व्याख्या की जायेगी, जैसा कि आत्रेय आदि महर्षियों ने कहा था।

❖ **व्याकरणांशा:-**

अथात:-अथ + अत: (सवर्णदीर्घसन्धि:)

अध्यायं व्याख्यास्याम: -अध्यायम् + व्याख्यास्याम: (अनुस्वारसन्धि:)

स्माहुरात्रेयादय:-स्म + आहुरात्रेयादय: (सवर्णदीर्घसन्धि:)

स्माहु: + आत्रेयादय: (विसर्गसन्धि:)

आत्रेयादय:-आत्रेय + आदय: (सवर्णदीर्घसन्धि:)

आत्रेयादय:-आत्रेय: आदि: येषां ते (बहुव्रीहि:)

आत्रेयादयो महर्षय:-आत्रेयादय: + महर्षय: (विसर्गसन्धि:)

महर्षय:-महान्त: च ते ऋषय: च (कर्मधारय:)

रोगानुत्पादनीयम्-रोगाणाम् अनुत्पादनम् (षष्ठीतत्पुरुष:)

अधारणीय वेग

वेगान्न धारयेद्वातविण्मूत्रक्षवतृट्क्षुधाम्।
निद्राकासश्रमश्वासजृम्भाऽश्रुच्छर्दिरेतसाम्।।1।।

❖ **पदच्छेद:-** वेगान्, न, धारयेत्, वात-विट्-मूत्र-क्षव तृट्-क्षुधाम्। निद्रा-कास-श्रम-श्वास- जृम्भा-अश्रु-च्छर्दि-रेतसाम्।

❖ **अन्वय-** वातविण्मूत्रक्षवतृक्षुधाम्, निद्राकासश्रमश्वास-जृम्भाश्रुच्छदिरेतसां वेगान् न धारयेत्।

❖ **शब्दार्थ-वातविण्मूत्रक्षवतृक्षुधाम्** = अपानवायु, मल, मूत्र, छींक, प्यास, भूख, निद्राकासश्रमश्वासजृम्भाश्रुच्छर्दिरे**तसाम्** = निद्रा, कास, श्रमजनित श्वास, जंभाई, अश्रु छर्दि (वमन) एवं शुक्र के **वेगान्** = वेगों को, **न** नहीं, **धारयेत्** धारण करना चाहिए।

❖ **भावार्थ-** 1. वात (अधोवात एवं ऊर्ध्ववात). 2. पुरीष, 3. मूत्र, 4. छींक 5. तृष्णा (प्यास), 6. क्षुधा (भूख) 7. निद्रा, 8. कास (खाँसी), 9. श्रमजनित श्वास 10. जृम्भा (जम्भाई) 11. अश्रु (आनन्दजं शोकजं वा नेत्रोदकम्), 12. छर्दि (वमन) और 13. शुक्र के वेग को नहीं रोकना चाहिए।

❖ **व्याकरणांशा:-**

विण्मूत्र-विट् + मूत्र (अनुनासिकसन्धि:)

निद्राकासश्रमश्वासजृम्भाश्रुच्छर्दिरेतसाम्- निद्रा च कास: च श्रमश्वास: च जृम्भा च छर्दि: च रेतांसि (इतरेतरद्वन्द्व:) तेषाम्

श्रमश्वास: -श्रमेण श्वास: (तृतीया तत्पुरुष:) -

❖ **शब्दार्थ- नित्यम्** = सदैव, **हिताहारविहारसेवी** = हितकर आहार-विहार का सेवन करने वाला, **समीक्ष्यकारी** = चिन्तनशील **विषयेषु** = विषयों में, **असक्तः** = अनासक्त (विरक्त), **दाता** = दानशील, **समः** = समदर्शी, **सत्यपरः** = सत्य आचरण करने वाला, **क्षमावान्** = क्षमाशील, **आप्तोपसेवी च** = एवं आप्तजनों के कर्मों एवं कथनों का पालन करने वाला, **अरोगः** = निरोगी, भवति = होता है।

❖ **भावार्थ**-सदैव हितकर आहार - विहार का सेवन करने वाला, शुभाशुभ कार्यों का भलीभाति विचार करके शुभ को करने और अशुभ कार्यों का परित्याग करने वाला, विषयों में अनासक्ति रखने वाला, दानशील, समदर्शी (सभी प्राणियों में राग, द्वेष आदि से रहित समभाव रखने वाला), सदैव सत्य बोलने वाला, क्षमावान् और शिष्टजनों के कर्मों एवं कथनों का अनुसरण करने वाला मनुष्य सदैव निरोगी रहता है।

❖ **व्याकरणांशाः**-

हिताहारविहारसेवी-हितः आहारः = हिताहारः (कर्मधारयः), हिताहारश्च विहारश्च हिताहारविहारी (इतरेतरद्वन्द्वः), तौ सेवते तच्छीलं यस्य (उपपद तत्पुरुषः), (हिताहारविहार- चेव् + णिनिः) समीक्ष्य करोति तच्छीलः ब (उपपद तत्पुरुषः) (समीक्ष्य+कृ+ मिनिः)

- असक्तः-न सक्तः (नञ् तत्पुरुषः)
- अरोगः- न रोगः- (नञ् तत्पुरुषः)

अध्याय 11 : दोषादिविज्ञानीय

अथातो दोषादिविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।
इति ह स्माहुरात्रेयावयो महर्षयः।

❖ **पदच्छेद**- अथ, अतः, दोषादिविज्ञानीयम्, अध्यायम्, व्याख्यास्यामः। इति, ह, स्म, आहुः, आत्रेयादयः, महर्षयः।

❖ **अन्वय**- अथ अतः दोषादिविज्ञानीयम् अध्यायं व्याख्यास्यामः, इति ह आत्रेयादयः महर्षयः आहुः स्म।

❖ **शब्दार्थ- अथ** = अब, **अतः** = यहाँ से, **दोषाविविज्ञानीयम्** - दोषादिविज्ञानीय नामक, **अध्यायम्** = अध्याय का, **व्याख्यास्यामः** - उपदेश करेंगे, **इति ह** - इस प्रकार, **आत्रेयावयः।** आत्रेय आदि, **महर्षयः** = महर्षियों ने, **आहुः** = कहा, **स्म** = था।

❖ **भावार्थ**- अब यहाँ से 'दोषाविविज्ञानीय' नामक अध्याय की व्याख्या की जायेगी, जैसा कि आत्रेय महर्षियों ने कहा था।

❖ **व्याकरणांशाः**-

अथातः-अथ + अतः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

अध्यायं व्याख्यास्यामः -अध्यायम् + व्याख्यास्यामः (अनुस्वारसन्धिः)

स्माहुरात्रेयादयः-स्म + आहुरात्रेयादयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

स्माहुः + आत्रेयादयः (विसर्गसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेय + आदयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेयः आदिः येषां ते (बहुव्रीहिः)

आत्रेयादयो महर्षयः-आत्रेयादयः + महर्षयः (विसर्गसन्धिः)

महर्षयः-महान्तः च ते ऋषयः च (कर्मधारयः)

त्रिदोषों के प्राकृत-कर्म

दोषधातुमला मूलं सदा देहस्य तं चलः।
उत्साहोच्छ्वासनिश्वासचेष्टावेगप्रवर्तनैः।।1।।
सम्यग्गत्या च धातूनामक्षाणां पाटवेन च।
अनुगृह्णात्यविकृतः, पित्तं पक्त्यूष्मदर्शनैः।।2।।
क्षुत्तृड्-रुचिप्रभामेधाधीशौर्यतनुमार्दवैः।
श्लेष्मा स्थिरत्वस्निग्धत्वसन्धिबन्धक्षमादिभिः।।3।।

❖ **पदच्छेदः**- दोष-धातु-मलाः, मूलम्, सदा देहस्य तम्, चलः। उत्साह- उच्छ्वास-निश्वास- चेष्टावेग प्रवर्तनैः। सम्यक्, गत्या, च, धातूनाम्, अक्षाणाम्, पाटवेन, च। अनुगृह्णाति, अविकृतः, पित्तम्, पक्ति ऊष्म-दर्शनैः। क्षुत्तृट्-रुचि- प्रभा-मेधा-धी-शौर्य-तनु-मार्दवैः। श्लेष्मा, स्थिरत्व-स्निग्धत्व-सन्धि-बन्ध-क्षमादिभिः।

❖ **अन्वय**- दोषधातुमलाः सदा देहस्य मूलम्। अविकृतः चलः उत्साहोच्छ्वानिश्वासचेष्टावेगप्रवर्तनैः धातूनां च सम्यक् गत्या अक्षाणां च पाटवेन तम् अनुगृ ाति। (अविकृतः) पित्तं पक्त्यूष्मदर्शनैः क्षुत्तृडघ्चिप्रभामेधाधीशौर्यतनुमार्दवैः (अनुगृह्णाति)। (अविकृतः)श्लेष्मा स्थिरत्वस्निग्धत्वसन्धि-बन्ध-क्षमादिभिः (अनुगृह्णाति)।

❖ **शब्दार्थ- दोषधातुमलाः** = दोष, धातु, मल, **सदा** = सदैव, **देहस्य** = शरीर के, **मूलम्** = मूल है। **अविकृतः**= अप्रकुपित, **चलः**=(प्रकृतिस्थ) वायु, **उत्साहोच्छ्वासनिश्वासचेष्टावेग-प्रवर्तनैः** = उत्साह, श्वास, चेष्टा, मल-मूत्र आदि के वेगों की प्रवृत्ति से, **धातूनां च**= तथा धातुओं की, **सम्यक् गत्या** = उचित गति से, **अक्षाणां च** = एवं नेत्रादि इन्द्रियों की, **पाटवेन** = कुशलता से, **तम्** = उसे (देह को), **अनुगृह्णाति** = रहते हैं। (**अविकृतः** = अप्रकुपित), **पित्तम्** = पित्त, **पक्त्यूष्मदर्शनैः**

के, **वधाय** = नाश के लिए होते हैं। **अतः** = इसलिए, **ते** = वे (दोष), **हितचर्यया एव** = हितकर आहार-विहार से ही, **विवृद्धेः इव** =विशेष वृद्धि की तरह, **क्षयात्** =क्षय से, **रक्षणीयाः**=बचाये जाने चाहिए।

❖ **भावार्थ-** जो वातादि दोष साम्यावस्था में रहकर शरीर की वृद्धि करते हैं, वे ही दोष विषमावस्था में शरीर को नष्ट कर देते हैं। इसलिए हितकर आहार-विहार के द्वारा दोषों को उनकी क्षय एवं वृद्धि से बचाना चाहिए।

❖ **व्याकरणांशाः-**

समा विवृद्ध्यै- समाः + विवृद्ध्यै (विसर्गसन्धिः)

दोषा विषमा वधाय - दोषाः + विषमाः + वधाय (विसर्गसन्धिः)

यस्मादतः- यस्मात् + अतः (जश्त्वसन्धिः)

अतस्ते- अतः + ते (विसर्गसन्धिः)

हितचर्ययैव- हितचर्यया + एव (वृद्धिसन्धिः)

क्षयाद्विवृद्धेः- क्षयात् + विवृद्धेः (जश्त्वसन्धिः, विसर्गसन्धिः)

हिता चर्या = हितचर्या (कर्मधारयः)

अध्याय-12 : दोषभेदीयम्

अथातो दोषभेदीयाध्यायं व्याख्यास्यामः।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः।।

❖ **पदच्छेदः-** अथ, अतः, दोषभेदीय अध्यायं व्याख्यास्यामः। इति, ह, स्म, आहुः, आत्रेयादयः, महर्षयः।

❖ **अन्वय-** अथ अतः दोषभेदीयाध्यायं व्याख्यास्यामः इति ह आत्रेयावयः महर्षयः आहुः स्म।

❖ **शब्दार्थ- अथ** = अब, **अतः** = यहाँ से, **दोषभेदीयाध्यायम्** = दोषभेदीय अध्याय का, **व्याख्यास्यामः** = उपदेश करेंगे, **इति ह** = इस प्रकार, **आत्रेयादयः** = आत्रेय आदि, **महर्षयः** = महर्षियों ने, **आहुः** = कहा, स्म = था।

❖ **भावार्थ-** अब यहाँ से 'दोषभेदीय' नामक अध्याय की व्याख्या की जायेगी, जैसा कि आत्रेय आदि महर्षियों ने कहा था।

❖ **व्याकरणांशाः-**

अथातः-अथ + अतः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

अध्यायं व्याख्यास्यामः -अध्यायम् + व्याख्यास्यामः (अनुस्वारसन्धिः)

स्माहुरात्रेयादयः-स्म + आहुरात्रेयादयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

स्माहुः + आत्रेयादयः (विसर्गसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेय + आदयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेयः आदिः येषां ते (बहुव्रीहिः)

आत्रेयादयो महर्षयः-आत्रेयादयः + महर्षयः (विसर्गसन्धिः)

महर्षयः-महान्तः च ते ऋषयः च (कर्मधारयः)

वात के स्थान

पक्वाशयकटीसक्थिश्रोत्रास्थिस्पर्शनेन्द्रियम्।
स्थानं वातस्य, तत्रापि पक्वाधानं विशेषतः।।1।।

❖ **पदच्छेदः-** पक्वाशय-कटी सक्थि-श्रोत्र अस्थि-स्पर्शनन्द्रियम् स्थानं वातस्य तत्र अपि पक्वाधानं विशेषतः।

❖ **अन्वय-** पक्वाशयकटीसक्थिश्रोत्रास्थिस्पर्शनेन्द्रियं वातस्य स्थानम्, तत्र अपि पक्वाधानं विशेषतः।

❖ **शब्दार्थ- पक्वाशयकटीसक्थिश्रोत्रास्थिस्पर्शनेन्द्रियम्** = पक्वाशय (मलाशय), कमर टाँग कान, अस्थि एवं त्वचा, **वातस्य** = वात के, **स्थानम्** = स्थान हैं। **तत्र अपि** = उनमें भी, **पक्वाधानम्** = पक्वाशय **विशेषतः** = प्रकार से, (वात का स्थान है)।

❖ **भावार्थ-** पक्वाशय, कटि, सक्थि (ऊरु), कर्ण, अस्थि एवं स्पर्शनेन्द्रिय (त्वचा) वात के स्थान है। इसमें भी श्पक्वाशयश वात का विशिष्ट स्थान है।

❖ **व्याकरणांशाः-**

पक्वाशय-कटी सक्थि-श्रोत्र अस्थि-स्पर्शनन्द्रियम् -पक्वाशयश्च कटी च सक्थिनी च श्रोत्रे च अस्थीनि च स्पर्शनिन्द्रियञ्च एतेषां समाहारः (समाहारद्वन्द्वः)

पक्वाशयः-पक्वानाम् आशयः (षष्ठीतत्पुरुषः)

तत्रापि- तत्र+अपि सवर्णदीर्घसन्धिः)

पक्वाधानम् -पक्वस्य (अन्नस्य) आधानम् (षष्ठीतत्पुरुषः)

पित्त के स्थान

नाभिरामाशयः स्वेदो लसीका रुधिरं रसः।
दृक् स्पर्शनं च पित्तस्य, नाभिरत्र विशेषतः।।2।।

❖ **पदच्छेदः-** नाभिः, आमाशयः, स्वेदः, लसीका, रुधिरम्, रसः। दृक् स्पर्शनम् च पित्तस्य नाभिः अत्र विशेषतः।

❖ **अन्वय-** नाभिः, आमाशयः, स्वेदः, लसीका, रुधिरम्, रसः, दृक स्पर्शनं च पित्तस्य (स्थानम)। अत्र नाभिः विशेषतः।

❖ **शब्दार्थ- रसरुधिरादिभिः** = रस, रक्त आदि धातुओं के, **संसर्गात्** = मिलने से, **तथा** = एवं, **क्षयसमता विवृद्धिभेदैः** = (उनके) क्षय, समता एवं वृद्धि के भेद से, **तरतमयोगतः च** = एवं तर-तम योग से, **आनन्त्यम्** = अनन्तता (असंख्येत्व) को, **यातान्** = प्राप्त, **दोषान्** = दोषों को, **अवहितमानसः** = सावधानी पूर्वक, **यथास्वम्** = भेदों से, **जानीयात्** = जानना चाहिए।

❖ **भावार्थ-** रस-रक्त आदि धातुओं के साथ संसर्ग से, क्षय, समता एवं वृद्धि से और तर-तम भेद से दोष अनन्त (असंख्य) प्रकार के हो जाते हैं। इसलिए वैद्य को उन्हें सावधानीपूर्वक समझना चाहिए।

❖ **व्याकरणांशाः-**

द्विषष्टिर्निर्दिष्टाः- द्विषष्टिः + निर्दिष्टाः (विसर्गसन्धिः)

स्वास्थ्यकारणम्- स्वास्थ्यस्य कारणम् (षष्ठीतत्पुरुषः)

रस- रुधिरादिभिः- रसश्च रुधिरञ्च (इतरेतरद्वन्द्वः) ते आदिनी येषां ते (बहुव्रीहिः) तैः

संसर्गाद्रसरुधिरादिभिः संसर्गात् + रसरुधिरादिभिः (जश्त्वसन्धिः)

रसरुधिरादिभिस्तथा- रसरुधिरादिभिः + तथा (विसर्गसन्धिः)

तथैषाम्- तथा + एषाम् (वृद्धिसन्धिः)

दोषास्तु- दोषाः + तु (विसर्गसन्धिः)

क्षयसमताविवृद्धिभेदैः-क्षयश्च समता च विवृद्धिश्च क्षयसमताविवृद्धयः (इतरेतरद्वन्द्वः) तासां भेदाः (षष्ठीतत्पुरुषः) तैः

तरतमयोगतश्च-तरतमयोगतः + च (श्चुत्व सन्धिः)

जानीयादवहितमानसः-जानीयात् + अवहितमानसः (जश्त्वसन्धिः)

अध्याय 13 : दोषोपक्रमणीय

अथातो दोषोपक्रमणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः।।

❖ **पदच्छेदः-** अथ, अतःद्विविधोपक्रमणीय अध्यायम्, व्याख्यास्यामः। इति, ह, स्म, आहुः, आत्रेयादयः, महर्षयः।

❖ **अन्वय** = अथ अतः द्विविधोपक्रमणीयम् अध्यायं व्याख्यास्यामः इति आत्रेयादयः महर्षयः आहुः स्म।

❖ **शब्दार्थ- अथ** = अब, **अतः** = यहाँ से, **दोषोपक्रमणीयम्** = दोषोपक्रमणीय नामक, **अध्यायम्** = अध्याय का, = उपदेश करेंगे, **इति** = इस प्रकार, **आत्रेयादयः** = आत्रेयादि, **महर्षयः** = महर्षियों ने, **आहः स्म** = कहा था।

❖ **भावार्थ** = अब यहाँ से श्दोषोपक्रमणीयश नामक अध्याय की व्याख्या की जायेगी, जैसा कि आत्रेय आदि महर्षियों ने कहा था।

❖ **व्याकरणांशाः-**

अथातः-अथ + अतः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

अध्यायं व्याख्यास्यामः -अध्यायम् + व्याख्यास्यामः (अनुस्वारसन्धिः)

स्माहुरात्रेयादयः-स्म + आहुरात्रेयादयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

स्माहुः + आत्रेयादयः (विसर्गसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेय + आदयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

आत्रेयादयः-आत्रेयः आदिः येषां ते (बहुव्रीहिः)

आत्रेयादयो महर्षयः-आत्रेयादयः + महर्षयः (विसर्गसन्धिः)

महर्षयः-महान्तः च ते ऋषयः च (कर्मधारयः)

प्रकुपित वात की चिकित्सा

वातस्योपक्रमः स्नेहः स्वेदः संशोधनं मृदु।
स्वाद्वम्ललवणोष्णानि भोज्यान्यभ्यङ्गमर्दनम्।।1।।
वेष्टनं त्रासनं सेको मद्यं पैष्टिकगौडिकम्।
स्निग्धोष्णा बस्तयो बस्तिनियमः सुखशीलता।।2।।
दीपनैः पाचनैः सिद्धाः स्नेहाश्चानेकयोनयः।
विशेषान्मेद्यपिशितरसतैलानुवासनम्।।3।।

❖ **पदच्छेदः-** वातस्य, उपक्रमः, स्नेहः, स्वेदः, संशोधनम्, मृदु। स्वादु-अम्ल लवण-उष्णानि, भोज्यानि, अभ्यङ्ग-मर्दनम्। वेष्टनम्, त्रासनम्, सेकः, मद्यम्, पैष्टिक-गौडिकम्। स्निग्धोष्णाः, बस्तयः, बस्तिनियमः, सुखशीलता। दीपनैः, पाचनैः, सिद्धाः, स्नेहाः, च, अनेकयोनयः। विशेषात्, मेद्य-पिशित-रस-तैल-अनुवासनम्।

❖ **अन्वय** = वातस्य उपक्रमः = स्नेहः, स्वेदः, मृदु संशोधनम्, स्वाद्वम्ललवणोष्णानि भोज्यानि, अभ्यङ्गमर्दनम्, वेष्टनम्, त्रासनम्, सेकः, पैष्टिकगौडिकं मद्यम्, स्निग्धोष्णाः बस्तयः, बस्तिनियमः, सुखशीलता, दीपनैः पाचनैः सिद्धाः अनेकयोनयः स्नेहाः, विशेषात् मेद्यपिशितरसतैलानुवासनम्।

अध्याय 14 : द्विविधोपक्रमणीय

अथातो द्विविधोपक्रमणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः।।

- **पदच्छेदः**- अथ, अतःद्विविधोपक्रमणीय अध्यायम्, व्याख्यास्यामः। इति, ह, स्म, आहुः, आत्रेयादयः, महर्षयः।
- **अन्वय**- अथ अतः द्विविधोपक्रमणीयम् अध्यायं व्याख्यास्यामः इति ह आत्रेयादयः महर्षयः आहुः स्म।
- **शब्दार्थ**-**अथ** अब, **अतः** यहाँ से, **द्विविधोपक्रमणीयम्** = द्विविधोपक्रमणीय, **अध्यायम्** अध्याय का, **व्याख्यास्यामः** -उपदेश करेंगे, **इति ह** इस प्रकार, **आत्रेयादयः** आत्रेय आदि, **महर्षयः** महर्षियों ने कहा, **आहुः** = कहा **स्म** = था।
- **भावार्थ**- अब यहाँ से शद्विविधोपक्रमणीयश नामक अध्याय की व्याख्या की जायेगी, जैसा कि आत्रेय आदि महर्षियों ने कहा था।
- **व्याकरणांशाः**-

  अथातः-अथ + अतः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

  अध्यायं व्याख्यास्यामः -अध्यायम् + व्याख्यास्यामः (अनुस्वारसन्धिः)

  स्माहुरात्रेयादयः-स्म + आहुरात्रेयादयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

  स्माहुः + आत्रेयादयः (विसर्गसन्धिः)

  आत्रेयादयः-आत्रेय + आदयः (सवर्णदीर्घसन्धिः)

  आत्रेयादयः-आत्रेयः आदिः येषां ते (बहुव्रीहिः)

  आत्रेयादयो महर्षयः-आत्रेयादयः + महर्षयः (विसर्गसन्धिः)

  महर्षयः-महान्तः च ते ऋषयः च (कर्मधारयः)

द्विविध-चिकित्सा

उपक्रम्यस्य हि द्वित्वात् द्विधैवोपक्रमो मतः।
एकः सन्तर्पणस्तत्र द्वितीयश्चापतर्पणः।।1।।
बृंहणो लङ्घनश्चेति तत्पर्यायावुदाहृतौ।
बृंहणं यद् बृहत्त्वाय लङ्घनं लाघवाय यत्।।2।।
देहस्य भवतः प्रायो भौमापमितरच्च ते।
स्नेहनं रूक्षणं कर्म स्वेदनं स्तम्भनं च यत्।।3।।
भूतानां तदपि द्वैध्याद् द्वितयं नातिवर्तते।

- **पदच्छेदः**- उपक्रम्यस्य, हि, द्वित्वात्, द्विधा, एवं उपक्रमः, मतः। एकः, सन्तर्पणः, तत्र, द्वितीयः, च, अपतर्पणः। बृंहणः, लङ्घनः, च, इति, तत्-पर्यायौ, उदाहृतौ। बृंहणम्, यत्, बृहत्त्वाय, लड्ङ्घनम्, लाघवाय, यत्। देहस्य, भवतः, प्रायः, भौम-आपम्, इतरत्, च, ते। स्नेहनम्, रूक्षणम्, कर्म, स्वेदनम्, स्तम्भनम्, च, यत्। भूतानाम्, तत्, अपि, द्वैध्यात्, द्वितयम्, न अतिवर्तते।
- **अन्वय**- हि उपक्रम्यस्य द्वित्वात् उपक्रमः द्विधा एव मतः। तत्र एकः सन्तर्पणः द्वितीयः च अपतर्पणः तत्पर्यायौ बृंहणः लङ्घनः च इति उदाहृतौ। यत् बृहत्त्वाय बृंहणम्, यत् लाघवाय लङ्घनम्। ते प्रायः भौमापम् इतरत् च भवतः, स्नेहनम्, रुक्षणम्, स्वेदनं स्तम्भनं च यत् कर्म तत् अपि भूतानां द्वैध्यात् द्वितयं न अतिवर्तते।
- **शब्दार्थ**- **हि** क्योंकि, **उपक्रम्यस्य** रोग के **द्वित्वात्** दो प्रकार के होने से, **उपक्रमः** - उपक्रम (उपचार). **द्विधा एवं मतः** दो ही प्रकार का माना गया है। **तत्र** उन दोनों में से **एकः** पहला, **सन्तर्पणः** सन्तर्पण, **द्वितीयः च** एवं दूसरा, **अपतर्पणः** अपतर्पण है। **तत्पर्यायी** उनके (सन्तर्पण और अपतर्पण) के पर्याय **बृंहणः** बृंहण, **लङ्घनः च** = एवं लङ्घन, **इति** = इस प्रकार, **उदाहृतौ** = कहे गये हैं। **यत्** = जो **बृहत्त्वाय** = (शरीर की) पुष्टि के लिए है, **बृहणम्** = (यह) बृंहण है, **यत्** = तथा जो, **लाघवाय** = (शरीर की) लघुता के लिए है, **लङ्घनम्** = (वह) लङ्घन है। **ते** = वे (सन्तर्पण एवं अपतर्पण द्रव्य), **प्रायः** = प्रायः **भौमापम्** = पृथ्वी एवं जल महाभूत से युक्त **इतरत् च** = एवं दूसरे (अग्नि, वायु एवं आकाश महाभूतों से युक्त), **भवतः** = होते हैं। **स्नेहनम्** = स्नेहन, **रूक्षणम्** रुक्षण **स्वेदनम्** - स्वेदन, **स्तम्भनं च** एवं स्तम्भन, **यत् कर्म** जो कर्म (चिकित्सा) है, **तत् अपि** वह भी **भूतानां द्वैध्यात्** - प्राणियों के दो प्रकार के (सौम्य एवं आग्नेय) होने से, **द्वितयम्** द्विविधता का, **न अतिवर्तते** अतिक्रमण नहीं कर पाते हैं।
- **भावार्थ**- रोग दो प्रकार के होते हैं, अतः उनकी चिकित्सा भी दो प्रकार की होती है- 1. संतर्पण चिकित्सा और 2. अपतर्पण चिकित्सा। इनके पर्याय क्रमशः बृंहण एवं लंघन कहे गये हैं। जो द्रव्य शरीर की पुष्टि (वृद्धि) करते हैं, वे 'बृंहणकारक' हैं और जो द्रव्य शरीर को कृश (लघु/हल्का) करते हैं, वे 'लंघनकारक' हैं। पार्थिव एवं जलीय द्रव्य 'बृंहणकारक' होते हैं जबकि आग्नेय, वायव्य और आकाशीय द्रव्य 'लंघनकारक' होते हैं। प्राणियों के सौम्य एवं आग्नेयः दो प्रकार के होने से स्नेहन, रूक्षण, स्वेदन और स्तम्भन चिकित्साएं बृंहण एवं लंघन चिकित्सा का अतिक्रमण नहीं कर पाती है अर्थात् बृहण और लंघन चिकित्सा में ही समाहित हो जाती हैं।

अध्याय 4

महत्त्वपूर्ण आयुर्वेद सुभाषित

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।

(चरक संहिता/सूत्र स्थान 1.41)

- **अन्वयः**– आयुर्वेदः स उच्चते, यत्र हिताहितम्, सुखं दुःखम्, आयुष्यस्य हिताहितं, आयुः मानं अपि तत्र (शास्त्र) उच्यते।
- **पदच्छेद**– हित अहितं, सुखं, दुःखं, आयुः तस्य, हित अहितम्, मानं च तत्र यत्र उक्तम् आयुर्वेद : स उच्चते।
- **श्लोकार्थः**–हित प्रदायक, अहित प्रदायक, सुख प्रदायक, दुःख प्रदायक चार प्रकार की आयु होती है। उस आयु के लिए हितकर, अहितकर स्वरुप क्या होता हैं? आयु का मान कितना होता है? इन सभी का विवरण जिसमें है वह आयुर्वेद कहलाता है।
- **संधि**– हितं अहितं (दीर्घसन्धि, अकः सवर्णे दीर्घः), दुःखम् + आयुः, यत्र + उक्तम्, आयुः + वेद
- **समास**– हितं च अहितं च हिता हितम्।

  हिताहितं (द्वितीया, एकवचन) **सुखं** (द्वितीया, एकवचन)
  दुखमायुस्तस्य (षष्ठी, एकवचन)
  हिताहितम् (द्वितीया, एकवचन)

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।

(सुश्रुत /सूत्र स्थान 15/48)

- **पदच्छेद**– समदोष, सम, आग्निः, च, समधातु, मलक्रियः, प्रसन्न, आत्मा इन्द्रियमनाः स्वस्थ, इति, अभिधीयते।
- **अन्वयः**– (यस्य) दोषाः, अग्निः, धातवः, मलादिकियायाः समः (प्राकृत), (राच्य) आत्मा, इन्द्रियाणि मनसः प्रसन्नः सन्ति, (तस्य) प्रकृति स्वस्थ इति अभिधियते।
- **श्लोकार्थः**–जिसके दोष(तीन), अग्नि (तेरह अग्नियाँ), धातु (सप्त धातुएँ), मल और इनकी क्रियाएँ समान हो तथा आत्मा, इन्द्रियाँ तथा मन प्रसन्न हो, वह स्वस्थ्य कहलाता है।
- **संधि**–सम + अग्निः + च। प्रसन्न + आत्मा + इन्द्रिय + मनाः। इति + अभिधीयते।
- **समास**–समानः दोषः यस्य समदोषः। **उपसर्ग**–सम। अभि। **अव्यय**–इति।

  प्रसन्नात्मेन्द्रियमना (तृतीया, एकवचन)

कायवाग्बुद्धिविषया ये मलाः समुपस्थिताः।
चिकित्सालक्षणाध्यात्मशास्त्रैस्तेषां विशुद्धयः।।

(वाक्यपदीयम्/ब्रह्मखण्ड/137)

- **पदच्छेद**– कायं, वाग्, बुद्धिं विषया, ये मला सम्, उपस्थिताः चिकित्सा लक्षणा अध्यात्म शास्त्रैः तेषां विशुद्धयः।
- **अन्वयः**–ये मला कायवाग्बुद्धिविषया समुपास्थिताः तेषां चिकित्सा, लक्षणा, (व्याकरण), अध्यात्म शास्त्रैः विशुद्धयः।
- **श्लोकार्थः**–शरीर, भाषा और बुद्धि इनसे सम्बन्धित विषय में जो दोष उत्पन्न हुआ करते है उनकी शोधन क्रमशः चिकित्साशास्त्र, व्याकरणशास्त्र और आध्यात्मशास्त्र से होती है।
- **संधि**–वाक्+बुद्धि, सम्+उपस्थिताः। अध्यात्म शास्त्र + तेषां लक्ष्मणा+अध्यात्म।
- **समास**–चिकित्सा च लक्षणा च अध्यात्मः च शास्त्रैः।

  कायवाग्बुद्धिविषया (तृतीया, एकवचन), मला (प्रथमा, एकवचन), **चिकित्सालक्षणाध्यात्मशास्त्रैस्तेषां** (षष्ठी, बहुवचन)

अथ मैत्रीपरः पुण्यमायुर्वेदं पुनर्वसुः।
शिष्येभ्यो दत्तवान् षड्भ्यः सर्वभूतानुकम्पया।।
अग्निवेशश्च भेलश्च जतूकर्णः पराशरः।
हारीतः क्षारपाणिश्च जगृहुस्तन्मुनेर्वचः।।

(चरक /सूत्र स्थान/30-31)

- **अन्वय**– मैत्रीपरः पुनर्वसुः सर्वभूतानुकम्पया पुण्यमायुर्वेदम् षड्भ्यः शिष्येभ्यो दत्तवान।

अध्याय 5

पञ्चतन्त्रम्

अपरीक्षितकारक

(कथा सारांश) बिना भली-भाँति विचारपूर्वक सुपरीक्षित कार्य करने की नीति पर ग्रन्थकार **विष्णुशर्मा** ने बल दिया है। इसके नामकरण के कारण का स्पष्टीकरण करते हुए बतलाया गया। अपरीक्षितकारक पञ्चतन्त्र का अन्तिम भाग (**पाँचवाँ तन्त्र**) है जिसमें मुख्यतया विचार किये एवं बिना अच्छी तरह से देखे सुने गये किसी कार्य को करने वाले व्यक्ति को कार्य में सफलता नहीं प्राप्त होती, बल्कि जीवन में अनेक कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ता है। अपरीक्षितकारक में कुल **पन्द्रह कथाएँ** हैं, जिनमें से पाठ्यक्रम में समाहित कथाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

1. **क्षपणक कथा** (आमुख) इस कथा में बिना अच्छी तरह परीक्षा करके अनुकरण करने वाले एक नाई की कथा है, जिसको मणिभद्र नाम के सेठ का अनुकरण कर जैन - संन्यासियों के वध के दोष पर न्यायाधीशों द्वारा मृत्यु का दण्ड दिया गया है। अत: बिना परीक्षा किए हुए नाई के समान अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए—

   कुदृष्टं कुपरिज्ञातं कुश्रुतं कुपरीक्षितम्।
   तन्नरेण न कर्तव्यं नापितेनाऽत्र यत् कृतम्।।

2. **ब्राह्मणी नकुल-कथा** इसमें बिना सोचे - समझे भ्रम के कारण नेवले की हत्या से ब्राह्मण - पत्नी के पश्चात्ताप का चित्रण किया गया है, जिसने साँप से अपने पुत्र की रक्षा करने पर भी भ्रमवश जल से भरे घड़े को नेवले के ऊपर पटककर मार डाला था। इसलिए विषय के पूर्ण ज्ञान के बिना कोई कार्य नहीं करना चाहिए—

   अपरीक्ष्य न कर्तव्यं कर्तव्यं सुपरीक्षितम्।
   पश्चाद्भवति सन्तापो ब्राह्मण्या नकुले यथा।।

3. **लोभाविष्ट - चक्रधर - कथा** इसमें अतिलोभ के भयंकर परिणाम का वर्णन है। इस कथा के द्वारा यह बतलाया गया है कि चार ब्राह्मणकुमार दरिद्रता से ऊब गये थे, जो घर से निकल कर अवन्तीपुरी में जा पहुँचे। वहाँ सिप्रा नदी में स्नान और महाकाल के दर्शन के बाद वे **भैरवानन्द** योगी से चार सिद्ध गुटिकाओं को प्राप्त कर लेने पर हिमालय की तरफ प्रस्थान किया। मार्ग में एक को ताँबा की खान मिली, दूसरे को चाँदी की खान प्राप्त हुई तथा तीसरे को सोने की खान उपलब्ध हुई। वे तीनों उन्हें लेकर अपने - अपने घर लौट गये, किन्तु अति लोभ के कारण चौथे को चक्रधर बनना पड़ा। अत: मनुष्य को न तो अधिक लोभ करना चाहिए, न बिल्कुल लोभ ही छोड़ देना चाहिए, क्योंकि अतिलोभ के कारण मित्र की बात न मानने पर लोभी मनुष्य को कष्ट ही उठाना पड़ता है, जैसे अतिलोभी के मस्तक पर चक्र घूमने लगा।

   अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।
   अतिलोभाऽभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।।

4. **सिंहकारक - मूर्खब्राह्मण कथा** इस कथा में बताया गया है कि लोक व्यवहार के बिना मूर्ख की विद्या उसी को कष्ट पहुँचाती है। इस कथा के द्वारा तीन शास्त्रज्ञानी, पर लोकव्यवहार से शून्य एवं एक अशास्त्रज्ञ, किन्तु लोकव्यवहार चतुर ब्राह्मणों का धनोपार्जन के निमित्त विदेश जाने के लिए प्रस्थान करने के बाद मार्गवर्ती किसी वन में मृत सिंह की हड्डियों को इकट्ठा कर विद्या के प्रभाव से उसको जिला देने पर उसके द्वारा तीनों शास्त्रज्ञों के मारे जाने का तथा चौथे अशास्त्रज्ञ, किन्तु लोकव्यवहारकुशल ब्राह्मण के बच जाने का प्रदर्शन है। अत: शास्त्रज्ञान के साथ-साथ लोकव्यवहार का ज्ञान भी आवश्यक है, क्योंकि विद्या की अपेक्षा बुद्धि उत्तम मानी गयी है, कहा भी गया है—

   बिना बुद्धि जरे विद्या वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्यया बुद्धिरुत्तमा।
   बुद्धिहीना विनश्यन्ति, यथा ते सिंहकारका:।।

अत्रान्तरे ब्राह्मणो गृहीतनिर्वापः समायातो यावत्पश्यति, तावत्पुत्रशोकाभितप्ता ब्राह्मणी प्रलपति-'भो भो लोभात्मन्। लोभाऽभिभूतेन त्वया न कृतं मद्वचः। तदनुभव साम्प्रतं पुत्रमृत्युदुः खवृक्षफलम्।' अथवा साध्विदमुच्यते-

- ❖ **शब्दार्थः– व्यापाद्य** = मार कर, **यावत्** = जब तक, जब, **प्रलपन्ती** = रोती-चिल्लाती हुई, **गृहे** = घर के भीतर, **तथैव** = उसी प्रकार, **सुप्तः** = सोया हुआ, **तिष्ठति** = था, **खण्डशः** = टुकड़े-टुकड़े, **कृतम्** = किया गया, **अवलोक्य** = देखकर, **पुत्रवधशोकेन** = पुत्र के वध के शौक से, **आत्मशिरः** = अपने शिर को, **वक्षःस्थलम्** = छाती को, **ताडितुम्** = पीटना, **आरब्धा** = प्रारम्भ किया। **अथवा साद्विदमुच्यते** = अथवा यह ठीक ही कहा गया, **अत्रान्तरे** = इसी बीच, **गृहीतनिर्वापः** = भिक्षा लेकर, **समायातः** = लौटा, वापस आया, **पुत्रशोकाभितप्ता** = पुत्र के शोक से सन्तप्त, **प्रलपति** = विलाप करती हुई कह रही है, **लोभात्मन्** = लोभी स्वभाव वाले, **लोभाभिभूतेन** = लोभ के वशीभूत, **त्वया** = तुमने, **न कृतम्** = नहीं माना, **मद्वचः** = मेरे वचन को, **अनुभव** = अनुभव करो, भोगो, **साम्प्रतम्** = इस समय, **पुत्रमृत्युदुः खवृक्षफलम्** = पुत्र के मृत्युरूपी दु:ख- वृक्ष के फल को। **साधु** = ठीक ही, **इदम्** = यह, **उच्यते** = कहा गया है।
- ❖ **हिन्दी** – इस प्रकार नेवले को मारकर विलाप करती हुई वह ब्राह्मणी जैसे ही घर में आयी। वैसे ही उसने पुत्र को पूर्ववत् सोते हुए देखा और खाट के पास में ही टुकड़े- टुकड़े किये हुए साँप को देखकर वह नकुल की मृत्यु से शोकाकुल हो उठी और अपनी छाती एवं माथे को पीट-पीटकर रोने लगी। इतने में भिक्षा लेकर ब्राह्मण भी आ गया। घर के अन्दर जाकर देखा कि नकुल के वध से ब्राह्मणी शोकाकुल हो बिलख-बिलखकर रो रही है। पति को देखते ही उसने रोकर कहा-अरे लोभी, लोभाभिभूत होकर तुमने मेरी बात नहीं मानी। तो अब पुत्र की मृत्यु के दु:खरूपी वृक्ष के फल को भोगो। यद्यपि नेवला ब्राह्मणी का बेटा नहीं था। फिर भी उसने पुत्र की भाँति उसका लालन-पालन किया था। उसको वह पुत्र कह रही है।

अतिलोभः न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।
अतिलोभाऽभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।।

ब्राह्मण आह- 'कथमेतत्?' सा प्राह–

- ❖ **अन्वयः – अतिलोभो न कर्तव्यः, लोभं नैव परित्यजेत्। (यतः) अतिलोभाभिभूतस्य (जनस्य) मस्तके चक्र भ्रमति।**
- ❖ **शब्दार्थः– अतिलोभः** = अधिक लोभ, **न** = नहीं, **कर्तव्यः** = करना चाहिये, (**तथा** = किन्तु), **लोभम्** = लोभ को, **नैव** = नहीं, **परित्यजेत्** = छोड़े (**कुतः** = क्योंकि), **अतिलोभाभिभूतस्य** = अत्यन्त लोभ से आक्रान्त, (**जनस्य** = व्यक्ति के), **मस्तके** = मस्तक पर, **चक्रम्** = चक्र, **भ्रमति** = घूमता है। ब्राह्मण ने पूछा- यह कैसे? तब ब्राह्मणी ने कहना आरम्भ किया-
- ❖ **हिन्दी** –अधिक लालच नहीं करना चाहिए और सर्वदा लालच का त्याग भी नहीं करना चाहिए। अति लोभी मनुष्य के मस्तक पर चक्र घूमता है। यह एक लौकिक सिद्धान्त है कि अति का सर्वत्र वर्जन करना चाहिए। अत: अधिक लोभ नहीं करना चाहिए।

3. लोभाविष्टचक्रधर-कथा

कस्मिंश्चिदधिष्ठाने चत्वारो ब्राह्मणपुत्राः परस्परं मित्रतां गता वसन्ति स्म। ते चाऽपि दारिद्र्योपहताः परस्परं मन्त्रं चक्रुः:- 'अहो, धिगियं दरिद्रता। उक्तं च–

- ❖ **शब्दार्थः– कस्मिंश्चित्** = किसी, **अधिष्ठाने** = स्थान में, **ब्राह्मण-पुत्राः** = ब्राह्मण के लड़के, **परस्परम्** = आपस में, **मित्रतां गताः** = मित्रभाव को प्राप्त होकर, **वसन्ति स्म** = रहते थे। **दारिद्र्योपहताः** = दरिद्रता से प्रताडित होकर, **मन्त्रम्** = विचार, सलाह, **चक्रुः** = किये, **अहो** = ओह, **धिक्** = धिक्कार है, **इयम्** = यह, **दरिद्रता** = धनहीनता।
- ❖ **हिन्दी** – किसी नगर में चार ब्राह्मणपुत्र आपस में मित्रता करके रहते थे। दरिद्रता से दु:खित होकर उन लोगों ने आपस में सलाह की। अहो! इस दरिद्रता को धिक्कार है, क्योंकि कहा गया है–

वरं वनं व्याघ्रगजादिसेवितं, जनेन हीनं बहुकण्टकावृतम्।
तृणानिशय्या परिधानवल्कलं, न बन्धुमध्ये धनहीनजीवितम्।।

- ❖ **अन्वयः – व्याघ्रगजादिसेवितं, जनेन हीनं बहुकण्टकावृतं वनं तृणानि शय्या परिधानवल्कलं वरं (किन्तु) बन्धुमध्ये धनहीनजीवितं न वरं (भवति)।**
- ❖ **शब्दार्थः– व्याघ्रगजादिसेवितम्** = बाघ, हाथी आदि जानवरों से युक्त, **जनेन** = लोगों से, **हीनम्** = रहित, **बहुकण्टकावृतम्** = बहुत काटों से भरा हुआ, **वनम्** = वन, जङ्गल, **वरम्** = श्रेष्ठ है, भला है, **तृणानि** = घास-फूस की, **शय्या** = बिछावन, सथरी, **परिधानबल्कलम्** = बल्कल वस्त्र धारण करना, **वरम्** = ठीक है, (**किन्तु** = किन्तु), **बन्धुमध्ये** = भाई-बन्धुओं के बीच, **धनहीन जीवितम्** = निर्धन होकर जीना, **न** = नहीं, **वरम्** = श्रेष्ठ, बढ़िया, (**अस्ति** = है)।
- ❖ **हिन्दी** – सिंह, हाथी आदि हिंस्रजन्तुओं से युक्त, मनुष्यरहित, कुश काँटों से भरा जङ्गल में रहना, और वहाँ वल्कल वस्त्र धारण करना तथा घास-फूस के बिछावन पर सोना अच्छा,

किन्तु बन्धु बान्धवों के बीच निर्धन होकर जीवन व्यतीत करना अच्छा नहीं।

तथा च–

स्वामी द्वेष्टि सुसेवितोऽपि, सहसा प्रोज्झन्ति सद्बान्धवाः,
राजन्ते न गुणास्त्यजन्ति तनुजाः, स्फारीभवन्त्यापदः।
भार्या साधु सुवंशजाऽपि भजते नो, यान्ति मित्राणि च,
न्यायारोपितविक्रमाण्यपि नृणां येषां न हि स्याद्धनम्।।

❖ **अन्वयः – हि येषां नृणां धनं न स्यात्, सुसेवितोऽपि स्वामी (तान्) द्वेष्टि, सद्बान्धवा अपि सहसा प्रोज्झन्ति, गुणा न राजन्तेः तनुजाः त्यजन्ति, आपदः स्फारीभवन्ति, सुवंशजा अपि भार्या साधु न भजते, न्यायारोपितविक्रमाणि अपि यान्ति।**

❖ **शब्दार्थः– हि** = निश्चय ही, **येषाम्** = जिन, **नृणाम्** = मनुष्यों के पास, **धनम्** = धन, **न स्यात्** = नहीं है, (**तान्** = उनसे), **सुसेवितः** = भली–भाँति सेवा किया गया, **अपि** = भी, **स्वामी** = मालिक, **द्वेष्टि** = द्वेष करता है, **सद्बान्धवाः** = भले **अपि** = भी, **सहसा** = एकाएक, **प्रोज्झन्ति** = छोड़ देते हैं, (**तेषाम्** = उनके), **गुणाः** = सद्गुण, (**अपि** = भी) **न** = नहीं, **राजन्ते** = सुशोभित होते, **तनुजाः** बेटे-बेटियाँ, (**तान्** = उन्हें), **त्यजन्ति** = छोड़ देते हैं, **आपदः** = आपत्तियाँ, **स्फारी-भवन्ति** = उमड़ पड़ती हैं, **सुवंशजा** = अच्छे वंश में जन्मी, **अपि** = भी, **भार्या** = पत्नी, **साधु** = भली–भाँति, **न** = नहीं, **भजते** = सेवा करती, **न्यायारोपितविक्रमाणि** = न्याय के मार्ग पर चलने वाले, **मित्राणि** = मित्र–गण, **अपि** = भी, **यान्ति** = छोड़कर चले जाते हैं।

❖ **हिन्दी** – जिन मनुष्यों के पास धन नहीं है–भली–भाँति सेवा करने पर भी स्वामी उनसे द्वेष करता है। अच्छे बन्धु गण भी उनको एकाएक छोड़ देते हैं। उनके गुण शोभा नहीं देते, उनके पुत्र भी उनको छोड़ देते हैं। आपत्तियाँ बढ़ती जाती हैं। अच्छे खानदान में उत्पन्न पत्नी भी भली–भाँति उनकी सेवा नहीं करती तथा न्याय मार्ग पर चलने वाले मित्र भी दूर हो जाते हैं।

शूरः सुरूपः सुभगश्च शस्त्राणि शास्त्राणि विदाङ्करोतु।
अर्थं विना नैव यशश्च मानं प्राप्नोति मोऽव मनुष्यलोके।।

❖ **अन्वयः– शूरः सुरूपः सुभगः शस्त्राणि शास्त्राणि (वित्) वाग्मी विदाङ्करोतु (यत्) अत्र मनुष्यलोके मर्त्यः अर्थं विना यशः मानं च नैव प्राप्नोति।**

❖ **शब्दार्थः–** (**जनः** = व्यक्ति), **शूरः** = शूर–वीर, **सुरूपः** = सुन्दर, **सुभगः** = सौभाग्यशाली, **वाग्मी** = बोलने में निपुण, शस्त्राणि शस्त्रों को, **शास्त्राणि** = शस्त्रों को, **विदाङ्करोतु** = जानने वाला, **नाम** = भले ही हो, (**किन्तु** = परन्तु, **सः** = वह), **अत्र** = इस, **मनुष्यलोके** = मनुष्यलोक में, **अर्थम्** = धन के, **विना** = बिना, **यशः** = यश, **च** = और, **मानम्** = मान को, **नैव** नहीं, **प्राप्नोति** = प्राप्त करता है।

❖ **हिन्दी** – शूर–वीर, रूपवान्, सौभाग्यशाली, शस्त्रज्ञ, शास्त्रज्ञ और वाक्पटु मनुष्य यह मान लें कि इस संसार में मनुष्य धन के बिना कीर्ति और सम्मान को प्राप्त नहीं कर सकता। इस श्लोक का भाव यह है कि मानव के सारे गुण धन के बिना निरर्थक से है। धन के रहने पर ही गुणों की गुणवत्ता है अन्यथा नहीं।

तानीन्द्रियाण्यविकलानि, तदेव नाम, सा बुद्धिरप्रतिहता, वचनं तदेव। अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव बाह्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्।।

❖ **अन्वयः – एतत् विचित्रं (यत्) तानि एव अविकलानि इन्द्रियाणि तदेव नाम, सा एव अप्रतिहता बुद्धिः, तदेव वचनं (तथापि) अर्थोष्मणा विरहितः स एव पुरुषः क्षणेन बाह्यो भवति।**

❖ **शब्दार्थः– तानि** = वह, **एव** = ही, **अविकलानि** = स्वस्थ, शक्ति सम्पन्न, **इन्द्रियाणि** = इन्द्रियाँ हैं, **तदेव** = वही, नाम है, **सा** = वह, एवं ही, **अप्रतिहता** = कहीं भी न रुकने वाली, **बुद्धिः** = बुद्धि है, **तदेव** = वही, **वचनम्** = वचन है, (**तथापि** = तो भी), **अर्थोष्मणा** = धन की गर्मी से, **विरहितः** = हीन, रहति, **सः** = वह, **एव** = ही, **पुरुषः** = पुरुष, **क्षणेन** = क्षण भर में, **बाह्यः** = बाहरी, दूसरा, **भवति** = हो जाता है, **इति** = इस प्रकार, **एतत्** = यह, **विचित्रम्** = बड़ी विचित्र बात है।

❖ **हिन्दी** – यह आश्चर्य है कि शक्ति में परिपूर्ण काम करने वाली वे ही इन्द्रियाँ हैं, वही नाम है, वही अकुण्ठित (न रुकनेवाली तीव्र) बुद्धि है और वही वाणी भी है, तो भी धन की गर्मी से रहित हुआ वह पुरुष क्षणभर में ही वह बाहरी पराया हो जाता है। अर्थात् ऐसा बदल जाता है कि कोई उसे पहचानता तक नहीं। अभिप्राय यह है कि यह संसार धन की ही पूजा करता है अन्य गुणों की नहीं।

तद्गच्छामः कुत्र चिदर्थाय। इति सम्मन्त्य स्वदेशं पुरं च स्वसुहृत्सहितं गृहं च परित्यज्य, प्रस्थिताः। अथवा साध्विदमुच्यते–

❖ **हिन्दी** – अतः हमें भी अर्थोपार्जन के लिए कहीं जाना चाहिए। ऐसा विचार करके अपने देश, ग्राम, मित्र, बन्धु, बान्धव तथा गृह का त्याग करके चारों ब्राह्मण कुमार अर्थोपार्जन के निमित्त चल पड़े। अथवा उचित ही कहा गया है–

सत्यं परित्यजति मुञ्चति बन्धुवर्गं, शीघ्रं विहाय जननीमपि जन्मभूमिम्।

पञ्चतन्त्र कथाओं का संस्कृत सार

क्षपणक कथा

- प्रस्तुता कथा विष्णुशर्माविरचितपञ्चतन्त्रस्य अपरीक्षितकारकात् गृहीता अस्ति।
- एकदा पाटलिपुत्रे मणिभद्र: नाम सेठ: (श्रेष्ठी) आसीत्।
- स: महान् दानी आसीत्।
- दानं दत्वा दत्वा मणिभद्र: निर्धन: अभवत्।
- स: एकदा सुप्त: चिन्तितवान् "मम समीपे धनं नास्ति।
- अहं प्राणहानिं करोमि।
- मणिभद्रस्य स्वप्ने एक: क्षपणक: पद्मनिधि: आगतवान्।
- स: उक्तवान्- "अहं श्व: भवत: गृहम् आगच्छामि।
- मम मस्तकेन (शिरसि) दण्डेन ताडयतु।
- अग्रिम दिने प्रात: एक: क्षौरिक: (नापित:) केशकर्तनार्थं (क्षौरं कर्तुम्) आगतवान्।
- नापित: मणिभद्रस्य क्षौरकार्यं कृतवान्।
- तस्मिन् एव समये क्षपणक: अपि आगतवान्।
- मणिभद्र: तस्य स्वागतम् कृतवान्।
- यथा स्वप्ने क्षपणक: उक्तवान् तथा मणिभद्र: कृतवान्।
- तदा स: क्षपणक: सुवर्णराशि: अभवत्।
- नापित: सर्वं दृष्ट्वा अहम् अपि सुवर्णं निर्माणं करोमि इति चिन्तितवान्।
- नापित: एवमेव कृतवान्।
- परन्तु ते सुवर्णनाण्यकानि न अभवन्। परन्तु ते रक्तसिक्ता: अभवन्।
- क्षपणका: तत: पलायनम् कृतवन्त:।
- राजसेवका: नापितं बन्धयित्वा न्यायाधीशस्य समीपं नीतवन्त:।
- नापित: मणिभद्रस्य गृहस्य वृत्तान्तं कथितवान्।
- न्यायाधीश: मणिभद्रम् आहूय पृष्टवान्।
- मणिभद्र: सर्वम् उक्तवान्।
- न्यायाधीश: नापिताय मृत्युदण्डम् दत्तवान्।

श्लोक:

कुदृष्टं कुपरिज्ञातं कुश्रुतं कुपरिक्षितम्।
तन्नरेण न कर्तव्यं नापितेनात्र यत् कृतम्।।

नकुल ब्राह्मणी कथा

- प्रस्तुता कथा विष्णुशर्माविरचितपञ्चतन्त्रस्य अपरीक्षितकारकात् गृहीता अस्ति।
- ब्राह्मणि नकुल कथा देवशर्मा नाम ब्राह्मण: पत्न्या सह निवसति स्म।
- ब्राह्मणस्य पत्नी एकस्मिन् दिने प्रसूतवती।
- तस्मिन् एव दिने एका नकुली सुतं प्रसूतवती।
- परन्तु सा मृता।
- ब्राह्मणदम्पती नकुलशिशुं अपि स्वपुत्रवत् पालयितुं आरब्धवन्त:।
- एकदा ब्राह्मण: धान्य-सङ्ग्रहणार्थं गतवान् आसीत्।
- तदा एव ब्राह्मणपत्नी अपि जलाहरणार्थं कूपं गतवती।
- तदा एक: कृष्ण: सर्प: गृहस्य अन्त: आगतवान्।
- नकुल: सर्पेण सह युद्धं कृत्वा, सर्पं मारितवान्।
- स्वसाहस-प्रदर्शनार्थं कूपस्य समीपं गतवान्।
- ब्राह्मणपत्नी नकुलस्य मुखे रक्तं दृष्टवती।
- नकुलस्य उपरि जलकुम्भ क्षिप्तवती।
- सा: शीघ्र गृहम् आगतवती।
- शिशु: स्वस्थ: क्रीडन् आसीत्।
- स्वदोषं स्मृत्वा बहु रोदनं कृतवती।

श्लोक

अपरीक्ष्य न कर्तव्यं, कर्तव्यं सुपरीक्षितम्।
पश्चाद्भवति सन्तापो ब्राह्मण्या नकुले यथा।।

अस्या: कथाया: उपदेशानुसारं अविचार्य न कार्यं कर्तव्यम्।

लोभाविष्ट चक्रधर कथा

- प्रस्तुता कथा विष्णुशर्माविरचितपञ्चतन्त्रस्य अपरीक्षितकारकात् गृहीता अस्ति।
- एकदा चत्वार: ब्राह्मणपुत्रा: अर्थसम्पादनाय गृहं त्यक्त्वा गतवन्त:।
- मार्गे ते एकं भैरवानन्द-योगिनं दृष्ट्वा धनसम्पादन मार्गं पृष्टवन्त:।
- स: सिद्धवर्तिकां कृत्वा दत्तवान्। उक्तवान् च यत् 'यत्र वर्तिका पतति तत्र सम्पत् भवति' इति।

Paper - II Part - B संस्कृत

1. आयुर्वेद का इतिहास 281

अध्याय
1

आयुर्वेद का इतिहास

निरुक्ति

इति+ह+आस (इति=ऐसा, ह=निश्चित, आस=था।)

अमरकोषकार के मतानुसार - **इतिहासः पुरावृत्तम्।**

अर्थात् जिससे भूतकालीन विषयवस्तु का ज्ञान हो, वह इतिहास है।

महाभारत में 'इतिहास' शब्द की व्याख्या निम्न शब्दों में की गई है–

धर्मार्थकाममोक्षणामुपदेशसमन्वितम्।
पूर्ववृत्तं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते।।

अर्थात् जिसमें धर्मादि से सम्बन्धित उपदेश हो, जिसमें पूर्ववृत्तान्त एवं कथादि का समावेश हो; वह '**इतिहास**' है।

पर्यायः–परवत्तान्त, गाथा, ऐतिहा इतिस्माह, प्राचीन आख्यान, ऐतिहासिक साक्ष्य, पुराण, इतिवृत्त, पुरावृत्त।

आयुर्वेदीय इतिहास की सामग्री आयुर्वेदीय इतिहास की सामग्री चार प्रकार के साहित्यों में वर्गीकृत की जा सकती है। यथा–

1. अनैतिहासिक साहित्य– वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण आदि।
2. इतिहासकपरक साहित्य–पुराण।
3. यात्रा विवरणादि–विदेशी यात्रियों के द्वारा आयुर्वेद विषयों का प्रचार–प्रसार।
4. पुरातत्त्व सामग्री–शिलालेख (यथा–अशोक का द्वितीय शिलालेख), मुद्रा, उत्खनन से प्राप्त सामग्री।

❖ सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा ने आयुर्वेद को बौद्ध धर्म के साथ-साथ अन्य देशों में आयुर्वेद का प्रचार किया।

वेद विश्ववाङ्मय में प्राचीनतम ग्रन्थ के रूप में स्वीकृत हैं। सायण ने वेदों पर भाष्य लिखते हुए कहा है कि **"इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के निवारण के लिए अलौकिक उपाय को वर्णित करने वाला ग्रन्थ वेद है"**।[1] ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से वैदिक साहित्य को चार भागों में विभक्त किया गया है, जिनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का परिगणन किया गया है। सभी वेदों के उपवेद भी वैदिक साहित्य की वटवृक्षवत् निरन्तर शोभा बढ़ा रहे हैं। वेदों में इन्द्र, अग्नि, रुद्र, वरुण, मरुत् आदि देवताओं को 'दैव्य भिषक्' की संज्ञा दी गई है, परन्तु इन देवताओं से भी अधिक प्रसिद्धि अश्विनीकुमारों को प्राप्त है जिन्हें '**देवानां भिषजौ**' के रूप में ख्याति प्राप्त है। इन दोनों देवताओं की चातुरी चिकित्सा का विवेचन ऋग्वेद में उपलब्ध होता है, जिससे इन देवताओं के विषय में ज्ञात होता है कि ये आरोग्य, प्रजा, बल, दीर्घायु, वनस्पति तथा समृद्धि के प्रदाता थे। वैदिक शान्तिपाठ में वनस्पति तथा औषधि के तादात्म्य द्वारा मनुष्य के शरीर तथा उसके चित्त की शान्ति का वर्णन हमें प्राप्त होता है। ऋग्वेद मेंऔषधि के लिए माता शब्द का प्रयोग करते हुए कहा गया है कि **"औषधियाँ हमारी माताएँ हैं"**।[2]

आयुर्वेद अनादि और अनन्त है। यह शाश्वत, पुण्यतम और अभ्युदय तथा निःश्रेयस् वेदांग है।[3] वेदों के उपवेदों के सन्दर्भ में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वान् ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद को स्वीकार करते हैं, परन्तु आयुर्वेद के आचार्यों ने जैसे–महर्षि चरक, आचार्य सुश्रुत, वाग्भट, भावमिश्र ने अपने ग्रन्थों में आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद स्वीकार किया है, क्योंकि अथर्ववेद में आयुर्विज्ञान सम्बन्धी सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती है।

अतः अथर्ववेद का उपवेद मानने में विद्वानों ने मतैक्य की स्थापना की है, जिससे निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अथर्ववेद के उपवेद के रूप में आयुर्वेद का विकास हुआ। महर्षि चरक ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद स्वीकार किया है तथा कहा है कि वेदों में अथर्ववेद में अपनी श्रद्धा प्रकट

1. इष्टप्राप्यनिष्ट परिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति सः वेदः, तै० सं० भाष्यभूमिका, सायणमतानुसार।
2. औषधीति मातरस्तद्वो, ऋ०वे० 10/16/4
3. सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निर्दिश्यते अनादित्वात्, स्वभावसंसिद्ध–लक्षणत्वात्, भावस्वभावनित्यत्वाच्च, च०सू० 30/27

इन 120 अध्यायों में से 41 अध्यायों को विभिन्न आयुर्वेदीय संहिताओं द्वारा दृढ़बल ने सम्पूरित किए हैं। जिसका वर्णन यहाँ विभाजन सहित इस प्रकार विवेचित है–

क्रम	स्थान	अध्याय	सूत्रसंख्या
1.	सूत्रस्थान	30	1952
2.	निदानस्थान	8	247
3.	विमानस्थान	8	354
4.	शारीरस्थान	8	382
5.	इन्द्रियस्थान	12	378
6.	चिकित्सास्थान	30	4904
7.	कल्पस्थान	12	378
8.	सिद्धिस्थान	12	700
कुल योग	**8 कुलस्थान**	**120 अध्याय**	**9295 सूत्र**

चरक संहिता के संस्कृत व्याख्याकार:– चरक पर लगभग 50 टीकाओं का वर्णन प्राप्त होता है। चरक की व्याख्या तमिल, तेलगु, गुजराती एवं मराठी आदि भाषाओं में उपलब्ध प्राप्त होती है।

क्रम	काल	टीकाकार	रचनाएँ
1.	7वीं शती	भट्टारहरिचन्द	चरकन्यास व्याख्या
2.	7वीं शती	स्वामिकुमार	चरकपञ्जिका व्याख्या
3.	9वीं शती	जेज्जट	निरन्तरपदव्याख्या
4.	11वीं शती	चक्रपाणिदत्त	आयुर्वेददीपिका
5.	11वीं शती	गयदास	चरक चन्द्रिका
6.	15वीं शती	शिवदास सेन	तत्त्वप्रदीपिका व्याख्या
7.	17वीं शती	नरसिंह कविराज	चरकतत्त्वप्रकाश कौस्तुभ
8.	19वीं शती	गंगाधर राय	जल्पकल्पतरु व्याख्या परिभाषा
9.	20वीं शती	योगीन्द्र नाथ सेन	चरकोपस्कार टीका
10.	20वीं शती	ज्योतिषचन्द्र सरस्वती	चरकप्रदीपिका व्याख्या

हिन्दी व्याख्याकार:– वैद्य श्रीकृष्णलाल, राजवैद्य पं० रामप्रसाद शर्मा, जयदेव विद्यालंकार, अत्रिदेव विद्यालंकार, काशीनाथ पाण्डे, गोरक्षनाथ चतुर्वेदी, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी।

अंग्रेजी व्याख्याकार:– अविनाशचन्द्र कविराज, महेन्द्रलाल सरकार, वैद्य श्री भगवानदास, वैद्य प्रियव्रत जी।

- परम्परागत चिकित्साकर्म के स्थान पर ज्ञानपूर्वककर्म का उपदेश किया गया है।[1]
- चेतना के न रहने पर शरीर निरर्थक हो जाता है, अत: केवल शरीर का विचार चिकित्सा में करने के स्थान पर पञ्चमहाभूतों और षड्धातुओं सहित पुरुष को चिकित्सा का अधिकार माना है।
- चरक ने स्पष्ट किया कि औषध रोग को दबाने के नहीं, अपितु प्रकृति को सहायता मात्र देने के लिए प्रयुक्त होती है।
- निरन्तर ज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु सम्भाषा परिषद् के माध्यम से ज्ञान वृद्धि का विकल्प प्रदान किया गया है।
- रोग निदान हेतु दशविध परीक्ष्य का वर्णन किया गया है, जो न केवल आयुर्वेद, अपितु अन्य चिकित्सा पद्धतियों हेतु भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

सुश्रुत संहिता के व्याख्याकार:– चरकसंहिता के सदृश ही इस संहिता पर भी अनेक टीकाकारों ने अपनी टीकाओं की रचना की है।

क्रम	काल	टीकाकार	टीकाएँ
1.	9वीं शती	जेज्जट	वर्तमान समय अप्राप्त
2.	10वीं शती	चन्द्रट	सुश्रुतसंहिता की पाठशुद्धि
3.	11वीं शती	गयदास	न्यायचन्द्रिका
4.	11वीं शती	चक्रपाणिदत्त	भानुमती व्याख्या
5.	12वीं शती	डल्हण	निबन्धसंग्रह
6.	20वीं शती	हाराणचन्द्र सरस्वती	सुश्रुतार्थसन्दीपन

सुश्रुतसंहिता की ग्रन्थ-संरचना :– इस संहिता के मूल स्वरूप में 5 स्थान एवं 120 अध्याय ही थे। नागार्जुन नामक प्रतिसंस्कर्ता ने कालान्तर में उत्तरतन्त्र में 66 अध्यायों को जोड़कर वर्तमानकालीन उपलब्ध संहिता का स्वरूप प्रदान किया। कालान्तर में तीसटाचार्य के पुत्र चन्द्रट ने जेज्जट की टीका के आधार पर सुश्रुतसंहिता की पाठशुद्धि करके वर्तमानकालीन स्वरूप प्रदान किया।

क्रम	स्थान	अध्याय	सूत्रसंख्या
1.	सूत्रस्थान	46	2094
2.	निदानस्थान	8	528
3.	शारीरस्थान	10	440
4.	चिकित्सास्थान	40	2032
5.	कल्पस्थान	8	555
6.	उत्तरतन्त्र	66	2651
कुल योग	**6 कुलस्थान**	**186 अध्याय**	**8300 सूत्र**

हिन्दी टीकाकार:– भास्कर गोविन्द घाणेकर, अम्बिकादत्त, अत्रिदेव विद्यालंकार।

1. ज्ञानपूर्वकं कर्मणा समारम्भं कुशला:। च०वि०8/61

to University of Colombo in 1977 Address: Institute of Indigenous Medicine, University of Colombo, Rajgiriya- + Gampaha Wickramarachchi Ayurveda Institute (Gampaha Sidayurveda Vidyalaya) Establishment: 1928 Affiliation: This college was affiliated to University of Kelaniyan.

- ❖ Address: Yakkala, Srilanka,
- ❖ Bhandarnayake Institute for Research in Ayurveda, Colombo.
- ❖ Nepal Ayurved Medical College, Birgunj, Nepal 3 Patanjali Ayurveda Medical College and Research Centre, University of Dhulikhel, Nepal.
- ❖ Ayurveda Campus, Kirtipur, Nepal.

देश	आयुर्वेदिक संस्थान	
अमेरिका	नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन	स्थापना–1982 संस्थापक–स्कॉटजर्सन स्थान–न्यूयार्क
	द आयुर्वेदिक इन्स्टिट्यूट	स्थापना–1986 संस्थापक–डॉ॰ वसन्त लाड स्थान–न्यू मेक्सिको
	अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑफ वेदिक स्टडीज	स्थापना–1991 संस्थापक–डॉ॰ डेविड फ्रावले स्थान–सेन्टा फे, न्यू मेक्सिको
	चोपड़ा सेन्टर फॉर वेल बिंग	स्थापना–1995 संस्थापक–डॉ॰ दीपक चोपड़ा स्थान–केलिफोर्निया
	फ्लोरिडा वेदिक कॉलेज	स्थापना–1990 संस्थापक–डॉ॰ रैण्डी स्टीन स्थान–फ्लोरिडा
	अमेरिकन अकादमी ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन	स्थापना–1999 संस्थापक–डॉ॰ आर॰सी॰ पाण्डे, डॉ॰ पी॰ जयराम एवं डॉ॰ एस॰के॰ मिश्रा
अर्जेन्टिना	मेडिकल स्कूल ऑफ स्टेट यूनिवर्सिटी, ब्योनेस एर्यस	संस्थापक–डॉ॰ ओ॰ जोर्ज लुईस बेरा
अर्जेन्टिना	डिपार्टमेण्ट डे मेडिसिना आयुर्वेद, चाकाबुको	स्थापना–1997 संस्थापक–डॉ॰ सर्जिओ लुईस सुआरेझ
आस्ट्रेलिया	इण्टरनेशनल काँग्रेस ऑफ ट्रेडिशनल एशियन मेडिसिन	स्थापना–केनबेरा संस्थापक–डॉ॰ कृष्णकुमार एवं आचार्य जूनियस स्थान–1979
	आस्ट्रेलियन स्कूल ऑफ आयुर्वेद	स्थान–एडिलेड
	आस्ट्रेलियन अकादमी ऑफ नेचुरल मेडिसिन	स्थान–1994
चेक गणराज्य	अष्टाङ्ग आयुर्वेद	स्थापना–1997 संस्थापक–डॉ॰ जोर्ज एसरे
	आयुर्वेदिक इन्स्टिट्यूट ऑफ धन्वन्तरि	स्थापना–प्रेग संस्थापक–डॉ॰ गोविन्द राजपूत स्थान–1994
ग्रीस	होलिस्टिक हेल्थ फाऊण्डेशन	स्थापना–एथेन्स संस्थापक–डॉ॰ कॉस्टोपॉलस एवं डॉ॰ बॉरोट

	चरक संहिता	सुश्रुत संहिता
मूल उपदेष्टा	पुनर्वसु आत्रेय	धन्वन्तरि
तन्त्रकर्ता	अग्निवेश	वृद्ध सुश्रुत
प्रतिसंस्कर्ता	चरक	सुश्रुत नागार्जुन
पूरक	दृढ़बल	-
पाठशुद्धिकर्ता	-	चन्द्रट

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना कब हुई?

a. 7 अप्रैल 1948 b. 7 मई 1948
c. 7 अप्रैल 1949 d. 7 मई 1946

2. यूनिसेफ का मुख्यालय है -

a. न्यू योर्क b. जेनेवा
c. वॉशिंगटन डी०सी० d. कोपनहेगन

3. मिस्र संस्कृति का निकटतम सम्बन्ध किस नदी से है-

a. नील b. दजला
c. थेम्स d. उपरोक्त कोई नही

4. "असीरियन हर्बल" के लेखक कौन है?

a. बक b. हर्नले
c. ऑस्लर d. टॉमसन

5. भोरे कमेटी की स्थापना हुई?

a. 1943 b. 1946
c. 1962 d. 1949

6. डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर द्वारा विरचित ग्रन्थ नहीं है?

a. निघण्टु आदर्श
b. वैद्यकीय सुभाषित साहित्यम्
c. स्वास्थ्य शिक्षापाठावली
d. जीवाणु विज्ञान

7. यादव जी त्रिकम जी आचार्य-विरचित ग्रन्थ है?

a. सिद्धयोगसंग्रह b. रसामृतम्
c. द्रव्यगुण विज्ञान d. उपरोक्त सभी

8. गजलक्षण के रचनाकार हैं-

a. नीलकण्ठ b. पालकाप्य
c. सुब्रह्मण्य d. बृहस्पति

9. नकुल-प्रणीत अश्वशास्त्र में कुल अध्यायों की संख्या कितनी है-

a. 13 b. 68
c. 81 d. 18

10. पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित प्रथम वैद्य कौन है?

a. दामोदर शर्मा गौड b. के० उड्डुप
c. डॉ० भास्कर गोविन्द d. यामिनी भूषण राय
घाणेकर

11. व्यास कमेटी कब बनी?

a. 1946 b. 1955
c. 1949 d. 1963

12. चोपड़ा कमेटी कब बनी?

a. 1946 b. 1955
c. 1949 d. 1963

13. पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित प्रथम वैद्य कौन है?

a. दामोदर शर्मा गौड
b. के० उड्डुप
c. डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर
d. यामिनी भूषण राय

14. वेदों में किस देव को "प्रथमो दैव्यो भिषक्" कहा गया है?

a. अग्नि b. अश्विनीकुमार
c. रुद्र d. इन्द्र

15. अथर्ववेद में कितने प्रकार की चिकित्सा पद्धति वर्णित है?

a. एक b. चार
c. दो d. सात

16. किस वेद को भैषज्य वेद भी कहा जाता है?

a. ऋग्वेद b. अथर्ववेद
c. यजुर्वेद d. सामवेद

17. हारीत संहिता में कुल अध्यायों की संख्या कितनी है?

a. 99 b. 102
c. 103 d. 107

18. हारीत संहिता के प्रथम स्थान का नाम क्या हैं?

a. सूत्र स्थान b. अन्नपान
c. कल्प d. अरिष्ट

विगत वर्षों में प्रकाशित प्रश्न-पत्र

Sample Paper-1

SANSKRIT & AYURVEDA ITIHAS - FIRST PAPER

I. Objective Type Questions (Each carries 01 marks) (20 Questions)

1. किस विकल्प में संयोग संज्ञा है-
   a. बाला: b. रमेश:
   c. उष्ट्र: d. राम:
2. वर्णों के अत्यन्त समीप्य को कहते हैं-
   a. संहिता b. लोप
   c. वृद्धि d. इत्
3. अ स्वर का उच्चारण स्थल है-
   a. कण्ठ b. तालु
   c. मूर्धा d. दन्त
4. सह, साकम्, समम्, सार्धम् के योग में होती है-
   a. प्रथमा विभक्ति b. द्वितीय विभक्ति
   c. तृतीया विभक्ति d. चतुर्थी विभक्ति
5. रूच्यार्थक धातुओं के योग में किस विभक्ति का प्रयोग किया जाता है?
   a. तृतीया विभक्ति b. चतुर्थी विभक्ति
   c. प्रथमा विभक्ति d. सप्तमी विभक्ति
6. मोदमान: पद में प्रयुक्त प्रत्यय है-
   a. शानच् b. शतृ
   c. ल्यप् d. तव्यत्
7. तृतीय विभक्ति का अभिधायक सूत्र है-
   a. रुच्यर्थानां प्रीयमाण: b. येनाङ्ग विकार:।
   c. अकथितं च। d. इनमें से कोई नहीं।
8. बाह्य प्रयत्न कितने होते हैं?
   a. दो b. पाँच
   c. ग्यारह d. सात
9. लृतुलसानां .... रिक्त स्थान भरें
   a. तालु b. दन्त
   c. ओष्ठ d. मूर्धा
10. 'दर्शन' पद में प्रत्यय है-
    a. मतुप् b. तुमुन्
    c. ल्युट् d. सभी
11. वर्णों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है -
    a. ह्रस्व स्वर b. दीर्घ स्वर
    c. प्लुत स्वर d. इनमें से कोई नहीं
12. "कृष्णसर्प" पद में विशेष्य पद है-
    a. कृष्ण b. सर्प:
    c. कृ d. ष्ण
13. उच्चै:....।
    a. उदात b. अनुदात्त:
    c. स्वरित d. इनमें से कोई नहीं
14. श्याम: ग्रन्थं ....।
    a. पठसि b. पठितवान्
    c. पठितवन्त: d. पठितम्
15. मह्यं विज्ञानं रोचते। रेखाङ्कित पद में कारक बताएँ।
    a. कर्त्ता b. कर्म
    c. संप्रदान d. अपादान